यूनेस्को **दूत**

मार्च, 1981

वर्ष : पंद्रह; अंक : चार; वार्षिक चन्दा : बीस रुपये; एक प्रति : दो रुपये

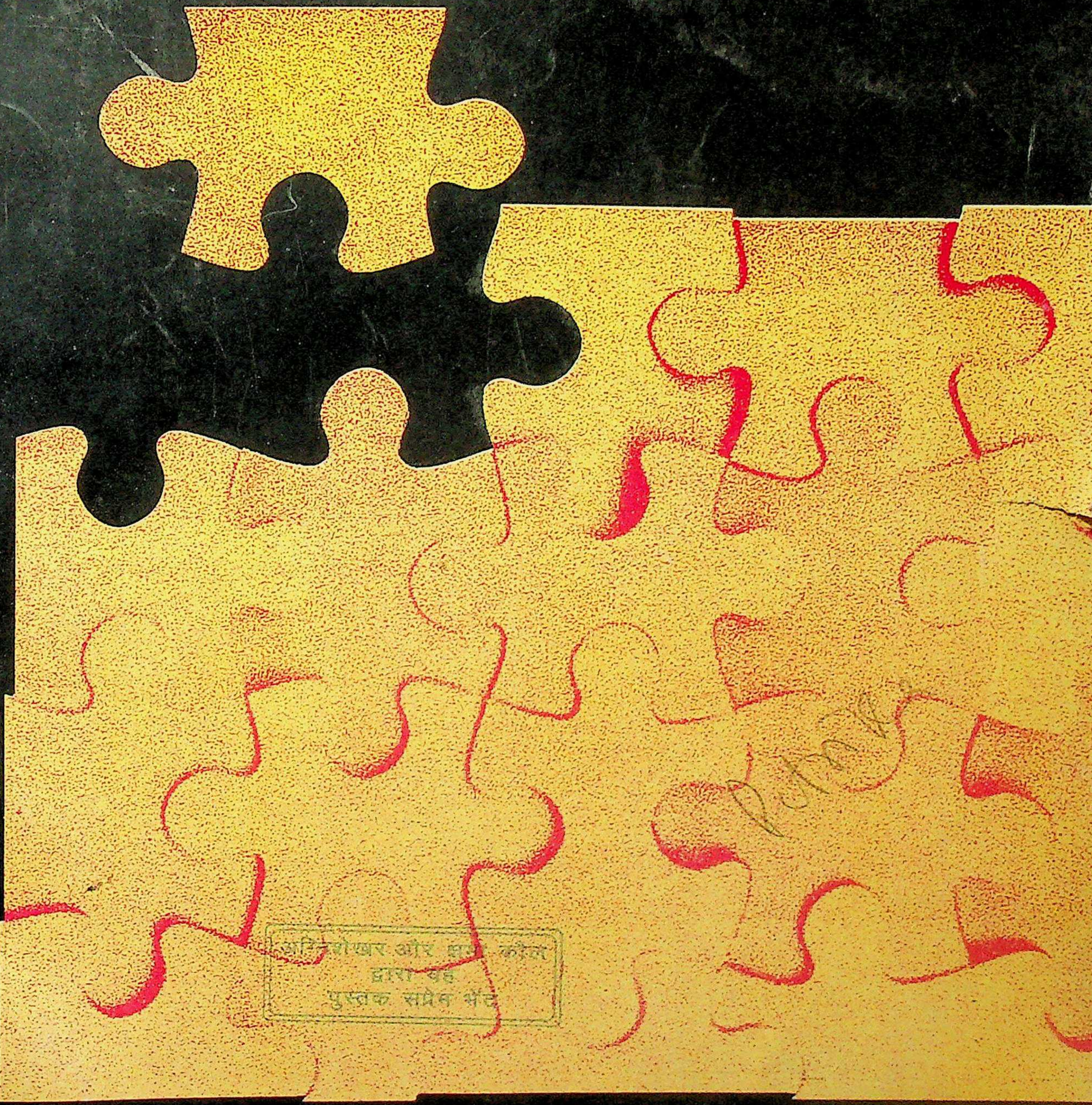

अभिशेखर और [illegible] कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

विकलांग - मानव समाज का दशमांश

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाण बिद्ध हरिणी

यह उत्कीर्णित लघु अस्थि-पट्टिका (46 × 35 एम०एम०) दसवीं शताब्दी की बुल्गेरियाई कला का एक उदाहरण है। इसे एक पशु की प्रतिकृति से बनाया गया है। विशेषज्ञों का विचार है कि यह एक हरिणी की प्रतिकृति है, जो गर्दन में बाण लगने के कारण घायल हो गई है। यह एक अमूर्त पृष्ठभूमि पर उत्कीर्ण है। हरिणी का सिर ऊपर उठा हुआ और मुख खुला हुआ है, जिससे उसकी सम्पूर्ण भंगिमा से पीड़ा की अभिव्यंजना सजीव हो उठी है। यह पट्टिका दसवीं शताब्दी में बुल्गारिया की राजधानी और कला तथा हस्तशिल्प के एक प्रमुख केन्द्र प्रेसलाव में प्राप्त हुई थी और अब सूफिया के राष्ट्रीय पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूनेस्को दूत

विश्वदर्शन की पत्रिका

मार्च, 1981

वर्ष : पंद्रह; अंक : तीन

पच्चीस भाषाओं में प्रकाशित

हिन्दी	जर्मन	हिब्रू	उर्दू	क्रोतो-सर्ब
अंग्रेजी	अरबी	फारसी	कैटालान	मेसेडोनि
फ्रांसीसी	जापानी	डच	मलेशिया	सर्बो-क्रोत
स्पेनी	इतालवी	पुर्तगाली	कोरियाई	स्लोवीन
रूसी	तमिल	तुर्की	स्वाहिली	चीनी

त्रैमासिक ब्रेल चयनिका अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पेनिश भाषा में प्रकाशित की जाती है।

संयुक्त राष्ट्रीय शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा प्रतिमास प्रकाशित

हिन्दी संस्करण का संपादन, प्रकाशन, वितरण केन्द्र :
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110022

वार्षिक चन्दा : बीस रुपये ; एक प्रति : दो रुपये

यूनेस्को कूरियर पच्चीस भाषाओं में प्रतिमास प्रकाशित होता है। इसके हिन्दी संस्करण का नाम 'यूनेस्को दूत' है जिसका एक अंक (हिंदी) संयुक्तांक के रूप में निकालता है। इस प्रकार वर्ष में ग्यारह अंक प्रकाशित होते हैं। इसमें प्रकाशित ऐसे लेख और फोटो पुनर्प्रकाशित किये जा सकते हैं जिन पर किसी व्यक्ति का स्वत्वाधिकार न हो। पर ऐसे लेखों के साथ आभार-स्वीकृति के रूप में प्रकाशन तिथि के साथ "यूनेस्को दूत से पुनर्मुद्रित" छापना और संपादक के नाम तीन वाउचर प्रतियां भेजना जरूरी है। जिन लेखों पर लेखकों के नाम छपे हों, उनके पुनर्मुद्रण में लेखकों के नाम देना आवश्यक है। बिना कॉपीराइट वाले चित्र मांगने पर भेजे जा सकते हैं। नाम के साथ छपे लेखों में दिये गये विचार उनके ही लेखकों के होते हैं अतः यह आवश्यक नहीं कि वही विचार यूनेस्को या यूनेस्को दूत के संपादक के भी हों।

संपादकीय कार्यालय : यूनेस्को, प्लेस द फांतेनाय 75700 पेरिस (फ्रांस)

प्रधान संपादक : जीन गॉडीन

सहायक प्रधान संपादक : ओल्गा रोडेल

प्रबंध संपादक : गिलियन व्हिटकॉम्ब

संपादक मंडल :

हिंदी संस्करण : कृष्ण गोपाल (नई दिल्ली)
अंग्रेजी संस्करण : हावर्ड ब्रेबीन (पेरिस)
फ्रांसीसी संस्करण :
स्पेनी संस्करण : फ्रांसिस्को फरनांडेज-सांतोज (पेरिस)
रूसी संस्करण : विक्टर गोलियाचकोव (पेरिस)
जर्मन संस्करण : वर्नर मेरक्ली (बर्न)
अरबी संस्करण : अब्देल मनइम अल सावी (काहिरा)
जापानी संस्करण : काज़ूओ अकाओ (टोक्यो)
इतालवी संस्करण : मारिया रेमिद्दी (रोम)
तमिल संस्करण : एम० मुहम्मद मुस्तफा (मद्रास)
हिब्रू संस्करण : अलेक्जेंडर ब्रोइदो (तेल अवीव)
फारसी संस्करण : समाद नौरीनेजाद (तेहरान)
डच संस्करण : पॉल मोरेन (एंतवर्प)
पुर्तगाली संस्करण : बेनेडिक्टो सिल्वा (रियो-डी-जेनियरो)
तुर्की संस्करण : मेफ्रा इलगेजर (स्तांबुल)
उर्दू संस्करण : हकीम मुहम्मद सईद (कराची)
केटालान संस्करण : जॉन केरेरास ई मार्ती (बार्सिलोना)
मलेशिया संस्करण : अजीजा हमजा (कुआलालम्पुर)
कोरियाई संस्करण : लिम मून-यंग (सीओल)
स्वाहिली संस्करण : दोमिनो रुताऐबेसिब्बा (दार-ए-सलाम)
ब्रेल संस्करण : फ्रेडरिक पोटर (पेरिस)
क्रोतो-सर्ब, मेसेडोनि, सर्बो-क्रोत, स्लोविन संस्करण : पुनीसा पावलोविक (बेलग्रेड)
चीनी संस्करण : शेन गुओ फेन (पेकिंग)

सहायक संपादक :

अंग्रेजी संस्करण : रॉय मल्किन
फ्रांसीसी संस्करण :
स्पेनी संस्करण : जार्ज एनरिक एडम
अनुसंधान : क्रिश्चियन बूचर
चित्रसज्जा : एरियान बैली
अंक-सज्जा और डिजाइन : फिलिप जेंटिल

हिन्दी संस्करण :

सहायक—कृपा शंकर सक्सेना कलाकार—जयसिंग द० दलवी
—श्रीमती वीणा दीक्षित

यूनेस्को दूत के सम्बन्ध में सारा पत्र-व्यवहार संपादक से किया जाय।

पृष्ठ

4 अपंग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष
यूनेस्को के महानिदेशक का संदेश

5 विकलांग--मानव समाज का दशमांश
—फेडरिको मेयर

7 अपंग व्यक्तियों के अधिकारों के संबंध में संयुक्त राष्ट्र की घोषणा

8 मुक्तता की अनुभूति
फोटो कहानी

10 जोखिम उठाने का साहस
—एडवर्ड वी० राबर्ट्स

12 हाथ से टटोलकर पहचानना
—ओल्गा आई० स्कोरोखोदोवा

14 पूर्वाग्रह की बाधा
—पीटर ओ० मबा

17 'मैं बड़ी डरी-डरी रहती हूं कि लोग मुझ पर हंसेंगे'
—बारब्रो लुन्दहल

18 यूनेस्को ब्रेल कूरियर
—फ्रेडरिक एच० पोटर

22 लुई ब्रेल एक प्रतिमा संपन्न व्यक्तित्व
—सर्जं गुलेमेत

23 यूनेस्को तथा अपंग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष
—निल्स आइव्रर सुंदबर्ग

25 अपंगता और विकासोन्मुख संसार
—नारमन एक्टन

26 अपंगता का दोहरा स्वरूप

30 ए बी सी इंटरनेशनल
प्रत्येक नेत्रहीन बच्चे का भविष्य
—पिएरेत्ते पोस्मोवस्की

32 बाधा की व्यावहारिक परिभाषा

34 यूनेस्को समाचार कक्ष

2 विश्वकला की निधियां
बुलगारिया : बाण विद्ध हरिणी

G.M. College of Education Raipur, Bantalab Jammu
Acc No. ....
Dated ....
2023

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

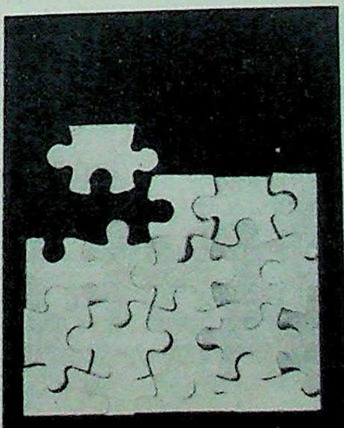

आवरण

नवीनतम आकलनों के अनुसार विश्व में 45 करोड़ विकलांग लोग हैं। यह मानव समाज का दशमांश है। संयुक्त राष्ट्र ने 1981 को अपंग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष की संज्ञा दी है। इसी को ध्यान में रखते हुए यूनेस्को दूत में इस वर्ष के शुरू में ही इस विषय पर सामग्री प्रस्तुत की जा रही है जिससे यह ज्ञात होगा कि आम-जनता में विकलांगों के प्रति किस प्रकार की धारणा है। अनेक विकलांगों के जो वक्तव्य इस अंक में प्रस्तुत किए जा रहे हैं उनका सामान्य विषय है विकलांगों की यह इच्छा कि उन्हें समाज में उनका पूरा स्थान मिले और पहले उन्हें एक व्यक्ति और बाद में ही विकलांग के रूप में देखा जाए। इस वर्ष बाद में निकलने वाले यूनेस्को दूत के एक अंक में कुछ विशिष्ट समस्याओं पर विचार किया जाएगा। ये समस्याएं इस प्रकार की होंगी—विकलांगों की विशेष शिक्षा में हुए नवीनतम विकास, व्यावसायिक जीवन में उनका एकीकरण, और उनकी स्थिति का पता लगाने और उनकी दशा को सुधारने तथा उनकी ऐसी अक्षमताओं की, रोकथाम के लिए, जिनसे उन्हें बचाया जा सकना संभव है, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक और आयुर्वैज्ञानिक उपाय करना। हमारे आवरण का डिजाइन ग्राफिक कलाकार क्लो मेयर ने बनाया है।

फोटो यूनेस्को कूरियर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Fo... -MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपंग व्यक्तियों का अंतरष्ट्रीय वर्ष

जातिवाद में व्यक्तियों के रंग अथवा विभिन्न समुदायों के सांस्कृतिक ढांचे के अंतरों पर विचार किया जाता है और इस तरह जातिवाद लोगों को एक दूसरे से अलग कर देता है तथा उनके अंदर श्रेष्ठत्व अथवा हीनता की भावना उत्पन्न कर देता है । क्या आधुनिक समाज साहसिक कदम उठाकर विकलांग व्यक्तियों के प्रति लोगों के चले आ रहे व्यवहार को तोड़ने में आवश्यक स्पष्ट दूरदर्शिता को प्रदर्शित कर सकता है ?

यों तो कभी-कभी शारीरिक अथवा मानसिक विकलांगता दुर्घटनाओं के परिणामस्वरूप होती है, पर प्रायः जिस समाज में हम रह रहे हैं, उसकी गलतियों अथवा असफलताओं; जैसे युद्ध, भूख और बीमारी के कारण होती है । विकलांगता से पीड़ित लोग अपने सहयोगियों से अलग हो जाते हैं जिसे अधिसंख्य लोग असाध्य मानते हैं । इस तरह दोनों ही औद्योगिक एवं विकासशील देशों में विकलांग व्यक्ति जो कि पूरी जनसंख्या के लगभग दशमांश है, अपने को समाज की धारा से कटा हुआ पाते हैं ।

हमारे नियम और आमतौर पर हमारे दैनिक जीवन का पुरा संगठन ही अपने साधारण क्रियाकलापों में विकलांग व्यक्तियों के अस्तित्व को ही नजरंदाज कर देता है । यहां इस बात का उल्लेख कर देना आवश्यक जान पड़ता है कि अधिकांश विकलांग व्यक्ति, उनके लिए विशेष रूप से बनाई गई संस्थाओं में ही अपने को सीमित रखते हैं, सहायता के लिए दूसरों पर आश्रित होते हैं और शेष समाज से बिलकुल कट जाते है । यह बात उनकी वास्तविक आवश्यकताओं और भावनाओं के प्रति समाज की अनभिज्ञता को प्रदर्शित करती है । इन सभी बातों के होने के बावजूद भी वे कुछ नहीं मांगते । वे तो केवल यही चाहते हैं कि सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में भाग लेने के लिए उनके लिए साधन जुटाए जाएं जिसके परिणामस्वरूप समाज उनकी सहभागिता को स्वीकार कर सके ।

इस न्यायसंगत मांग की संतुष्टि के लिए दो तरफा दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है । पहले उन सभी सामग्री, और वैज्ञानिक तथा मानव साधनों को जुटाने की आवश्यकता हैं जिनकी जरुरत न केवल प्रसवकालीन दुर्घटनाओं का बचाव करने और विकलांगों को अपंगता का उपचार करने में पड़ती है बल्कि उन्हें अपने उत्तरदायित्व को समझने और समाज के अन्य सभी सदस्यों के साथ समान स्तर पर अपने अधिकारों को समझने में भी पड़ती है । उन्हें दी जाने वाली विशेष शिक्षा का मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए कि विकलांग लोगों के दिलों में यह बात बैठ जाए कि वे भी अन्य व्यक्तियों की भांति इस समाज के ही अंग हैं ।

दूसरे लोगों को इस बात के लिए शिक्षित करने की आवश्यकता है कि वे लोग बिना किसी भेदभाव के विकलांग व्यक्तियों को अपनी ही तरह समझें, तभी वे व्यक्ति भी हर हालत में अपने को समाज के पूर्ण सदस्य के रूप में मानने लगेंगे । इस संबंध में, अपने जीवन को पुरी तरह से जीने के लिए विकलांग व्यक्तियों की इच्छा के बारे में और उनके द्वारा ऐसा करने की संभावना के बारे में वस्तुपरक जानकारी प्रदान करने में शिक्षा ही प्रथम और अतिमहत्वपूर्ण साधन है । इसीलिए यूनेस्को दूत के इस अंक का अधिकांश भाग प्रथम दृष्टिकोण के आधार पर विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष में यूनेस्को के योगदान के रूप में विकलांग व्यक्तियों की समस्याओं को समर्पित है, ताकि विकलांग लोग स्वयं अपने बारे में भी कह सकें ।

अमादू महतार एम' बो
महानिदेशक, यूनेस्को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

[illegible]। यूनेस्को प्रदर्शनी ''पूर्ण सहभागिता और समानता''

मूर्ति बनाता हुआ एक अंधा मूर्तिकार

विकलांग—मानव समाज का दशमांश

—फेडरिको मेयर

यह समझा जाता है कि लगभग 45 करोड़ लोग—यानी मोटे हिसाब से दुनिया की आबादी का 10 प्रतिशत—किसी न किसी प्रकार की शारीरिक, संवेदी या मानसिक बाधा से ग्रस्त रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के हाल के आकलन के अनुसार तो यह संख्या इससे कहीं अधिक लगभग यानी 13 प्रतिशत हो सकती है। लेकिन इससे भी अधिक गंभीर बात यह है कि परिमाणात्मक और गुणात्मक दोनों ही रूपों में इस समस्या के कम होने के कोई आसार नहीं दिखाई पड़ते।

अपूर्णताओं और असमर्थताओं के आधारभूत कारणों—परजीवीजन्य रोग, गर्भावस्था वाले संक्रमण और गर्भावधि तथा जीवन के प्रारंभिक महीनों के समय का घोर कुपोषण के अलावा सड़क और उद्योगों में होने वाली दुघटनाओं की बढ़ती हुई संख्या के साथ-साथ शराब की लत और औषधि व्यसन जैसी नई प्रवृत्तियां भी हैं। इस प्रकार अपंगता की समस्या ऐसी है जिसका सामना औद्योगिक दृष्टि से विकसित और विकासशील दोनों ही प्रकार के देश समान रूप से कर रहे हैं। यद्यपि बाधा के कारणों और प्रकृति में अंतर हो सकता है फिर भी (विभिन्न कारणों के परिणामस्वरूप) स्थिति सभी जगह समान रूप से निराशाजनक है।

इसके अलावा, इस कैफियत में स्थानीय युद्धों को शामिल नहीं किया गया है, जिनमें आधुनिक हथियारों के परिमाण और स्वरूप के कारण उनके बहुत भयंकर परिणाम हो सकते हैं। इस दिशा में विचार करने पर भी कोई आशाजनक संभावनाएं नहीं दिखाई पड़तीं।

बाधा और अपंगता को रोकने के लिए जो कुछ भी मानवीय सीमा में संभव है, उसे किया जाना चाहिए। जहां कहीं भी, हमारी कोशिशों के बावजूद, अपंगता के मामले सामने आते हैं, वहां अधिकारियों का और सामान्य रूप से समाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वे उन पर समुचित रूप से ध्यान देने का भरसक प्रयत्न करें ताकि, जहां तक संभव हो उपलब्ध ज्ञान से बाधाग्रस्त लोगों की दशा को सुधारा जा सके और वे यथासंभव सामान्य जीवन बिता सकें।

स्पेन के जैव रसायनज्ञ **फेडरिको मेयर** यूनेस्को के उप-महानिदेशक हैं। वे ट्रिनिटी कालेज आक्सफोर्ड के भूतपूर्व फेलो थे और मेड्रिड के स्वायत्त विश्वविद्यालय के जैव रसायन तथा आणविक जीव विज्ञान विभाग के निदेशक तथा जैव रसायन के प्रोफेसर भी हैं। वे ग्रेनदा विश्वविद्यालय के प्राचार्य तथा स्पेन में शिक्षा तथा विज्ञान के उपमंत्री भी रहे। उन्होंने मानसिक मंदिता के जैव रासायनिक विश्लेषण पर विशेष अध्ययन तथा वैज्ञानिक कार्यों में विशेष योगदान दिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अपंग लोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष को, जन्म जात या अर्जित अपंगताओं से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए, अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] शील और संगठित कार्यवाही शुरू करने का संकेत होना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय वर्ष का प्रतिपाद्य है "पूर्ण सहभागिता और समानता" यानी पूर्ण समानता और प्रत्येक मामले में व्यक्तिगत परिस्थितियों के अनुसार पूर्ण सहभागिता। सौभाग्यवश विश्व, अधिकाधिक रूप से शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में वैयक्तिक पहुंच की दिशा में उन्मुख हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट है, और इसे सभी कार्यवाहियों और प्रत्येक नीति का केन्द्र बिन्दु मानना चाहिए।

अपंग लोगों का यह अंतर्राष्ट्रीय वर्ष सतर्क व्यक्तिगत देखभाल और सावधानी का आधार बनाने का हमें ऐसा श्रेष्ठ अवसर प्रदान करता है कि हम अति सावधान होकर उनकी व्यक्तिगत देखभाल वाला कार्य करें जो कि अपेक्षित है, और ऐसा करना हमारा सच्चा नैतिक कर्त्तव्य है। आशा और प्रत्याशा के साथ वे प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय किस प्रकार इस पहलू पर मनन कर रहा है और अपनी सामर्थ्य के अनुसार किस प्रकार उनकी सहायता करने की सोच रहा है, अतः हमारा यह दायित्व है कि हमें इस संबंध में उन्हें निराश नहीं करना चाहिए।

वर्ष 1981 में हमें, **हम में से प्रत्येक को,** अपने आसपास के लोगों को इस समस्या की पूरी जानकारी देनी चाहिए और इससे कहीं अधिक आवश्यकता यह है कि हम अपने वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के साधनों का पूर्ण उपयोग करें ताकि विकलांग व्यक्तियों के रोकथाम, देखभाल और पुनर्वास को सुनिश्चित करने के लिए संगठित और प्रभावशाली कार्यवाही की जाए। हमें यह सब कार्य इस प्रकार करना है जिससे कि इस बात का जरा-सा भी संकेत न मिले कि हम 'अच्छे कार्य' या विस्थापित परोपकार के लिये यह सब कर रहे हैं। इससे **मानव अधिकार** का प्रश्न जुड़ा है।

जो कोई इनमें से कुछेक अधिकारों का उपयोग करने से वंचित हो गया है, उसे अपनी दशा के अनुरूप इन अधिकारों का पूर्ण उपयोग करने का अवसर मिलना ही चाहिए। हाल ही के वर्षों में संयुक्त राष्ट्र ने इन अधिकारों को मान्यता दे दी है और बहुत से देशों के संविधानों में इन अधिकारों को स्थान दिया गया है। सभी देशों को भी इस प्रकार की कार्यवाही करनी चाहिए। क्योंकि यही एक कसौटी है जिससे प्रत्येक देश द्वारा बिना भेदभाव के अपने सभी नागरिकों के हितों की रक्षा करने की भावना का पता चलता है।

मेरे विचार में किसी भी अपंग **व्यक्ति का प्रथम अधिकार अपंग न होना ही है।** दूसरे शब्दों में, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें उपलब्ध समस्त साधनों का उपयोग करके शारीरिक, संवेदी या मानसिक अपंगता की रोकथाम का प्रयास करना चाहिए। इसलिए, हमें अपने अनुसंधान बराबर करते रहना चाहिए ताकि अपंगता के मूल कारणों को जाना जा सके और साथ ही—क्योंकि प्रकृति में यही घोर असमानता और बेइन्साफी है—हमें अपने अब तक उपलब्ध ज्ञान का पूरा उपयोग करना चाहिए।

इस संबंध में कानून, सहायता, शिक्षा, रोजगार और रोकथाम के क्षेत्रों में काफी कुछ किया जा सकता है। दूसरे देशों के अनुभवों का लाभ, तत्संबंधी जानकारी और उनके द्वारा प्राप्त परिणामों के आधार पर उठाया जा सकता है। यदि हमें इस समस्या का सही ढंग से पता लगाना है तो हमें इस की पूरी तरह से जानकारी होनी चाहिए और यदि हमें इस समस्या का निवारण करने का प्रयत्न करना है तो हमें समस्या के प्रति अवश्य ही जागरूक होना ही होगा।

वर्ष 1981 से ऐसे युग का सूत्रपात होना चाहिए कि समस्त अपंग व्यक्तियों के लिए अधिकाधिक सुविधाएं जुटायी जाएं और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कार्यवाहियों का समन्वय किया जाए। यह कैसे संभव है? राष्ट्रीय स्तर पर यह कार्य इस प्रकार से किया जा सकता है: विभिन्न संघों के कार्यों द्वारा प्रभावशाली रूप से सक्रिय वैज्ञानिक और सार्वजनिक सूचना प्रणालियों की स्थापना और संघटन के जरिये, रोकथाम के उपायों के जरिये (जैसे—आनुवंशिक परामर्श, टीका, प्रारंभ में ही निदान, यातायात और उद्योग में ऐसे मानकों का निर्धारण, जिससे कि दुर्घटनाओं को रोका या कम किया जा सके, देश में शांति बनाए रखना, आदि), ऐसी विशेष शिक्षा के विकास के जरिये जिसमें अधिक से अधिक एकीकरण हो सके और अपंगता की प्रकृति तथा उसकी उग्रता के अनुरूप अधिक से अधिक व्यक्तिगत पहुंच संभव हो; उनको पूरी तरह से पुनर्वास और श्रम शक्ति में शामिल करके, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में, जितना संभव हो सके, उन्हें सहभागी बनाकर, और अंततः संरचनात्मक या अन्य अवरोधों को दूर करके।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, इस कार्य को करने के लिए, सक्षम विशेष संस्थाओं (विशेष रूप से विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और यूनेस्को) और अन्य संगठनों, जैसे यूनीसेफ और विश्व खाद्य कार्यक्रम के साथ संबद्ध गैर-सरकारी संगठनों की अपरिहार्य सहायता लेकर संगठित कार्यवाही करनी होगी। यह कार्यवाही ऐसे सिद्धांतों को निर्धारित करने के ध्येय से की जानी चाहिए जो कि विभिन्न देशों द्वारा स्वीकार्य हों और कार्यान्वित किए जा सकें ताकि 1981 का वर्ष एक ऐसे युग का सूत्रपात करे जिसमें मानव अधिकारों और सभी मनुष्यों तथा राष्ट्रों के बीच एकात्मता के क्षेत्रों में असीमित सहयोग की भावना उत्पन्न हो।

यूनेस्को, जो कि किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरोध में अत्यधिक स्पष्टवादी है, अपंग व्यक्तियों को ऐसे समाज में पूर्णरूपेण शामिल करने में कभी भी पीछे नहीं रह सकता जिसमें प्रत्येक अपंग व्यक्ति के संबंध में समस्त विशिष्ट जानकारी भी ध्यान में रहेगी। हमें दृढ़ता से विभक्त किए जाने वाली स्थिति का विरोध करना चाहिए क्योंकि यदि "विशिष्ट" होने के अधिकार की व्याख्या गलत ढंग से की जाती है तो वास्तव में पृथक्करण हो जाने की संभावना है। जबकि हमारा वास्तविक लक्ष्य इसके विपरीत है।

इसी कारण माता-पिता को उनकी वर्तमान और भावी योजनाओं में "विशिष्ट" सहायता दी जानी चाहिए जो कि उनके बच्चों को प्रभावित करने वाली अपंगता की अनुत्क्रमणीयता की गंभीरता और मात्रा के अनुरूप हो। इसीलिए परिवार की सहायता करने के काम को वरीयता दी जानी चाहिए क्योंकि अधिकांश मामलों में, कोई अन्य स्कूल, प्रशिक्षण स्थान या संस्था इसकी जगह नहीं ले सकता और न लेना ही चाहिए। अपंग व्यक्तियों की हर संभव तरीके से मदद की जानी चाहिए और उन्हें शिक्षित किया जाना चाहिए। इसीलिए विशेष शिक्षकों और साथ ही एकीकरण प्रक्रिया में किसी प्रकार का भी योगदान कर सकने वाले व्यक्तियों को सहायता देना और उन्हें इसके लिए प्रशिक्षित करना जरूरी है। अतः अंतिम किन्तु समान रूप से महत्वपूर्ण बात यह भी है कि समाज और उसके सभी सदस्यों को "विशेष रूप से शिक्षित" किया जाना चाहिए ताकि वे एकीकरण को सुसाध्य बना सकें और मानव एकता के प्रति आदर भाव तथा हिम्मत के साथ भेदभावों और "पराश्रय" को सीमित कर सकें।

यदि अपंग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष, मुख्यतः प्रत्येक पृथक-पृथक अपंग व्यक्ति के हर प्रकार से संभव एकीकरण का वर्ष है तो फिर इससे ऐसी समस्या के प्रति जिसमें हम सब गंभीर रूप से जुड़े हुए हैं एक नई तीव्र दृष्टि वाली पहुंच का सूत्रपात होगा।

बेलग्रेड में अपने हाल के महासम्मेलन में यूनेस्को ने अपने सदस्य राज्यों को आह्वान करते हुए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया कि वे उन सभी उपायों को सुदृढ़ करने और उन्हें कार्यान्वित करने पर विशेष ध्यान दें जिनसे कि अपंग व्यक्तियों का हित हो सके। पृथ्वी के हर कोने के तथा विकास के हर स्तर के देशों ने अपने प्रतिनिधियों के जरिये अपंग लोगों की समस्याओं के प्रति अपनी गहरी प्रतिबद्धता व्यक्त की है। इनमें से कुछेक ने इस संबंध में पहले से ही कार्य करने का निश्चय कर लिया है या करने की योजना बना ली है। इससे सचमुच अधिक आशा बंधी है।

अतः वर्ष 1981 में इसके लिए कोरी बातों के बदले निष्ठापूर्ण कार्य की अपेक्षा है ताकि जिन लोगों को प्रोत्साहन की सबसे अधिक जरूरत है, उनकी आशा, निराशा में परिणत न होने पाए।

☐ फेडरिको मेयर

"अक्षमता केवल अपंगता का परिणाम ही नहीं होती अपितु कुछ अंशों में तो यह समाज के द्वारा भी थोपी जाती है। यही नहीं अक्षमता की परिभाषा भी देश विशेष की संस्कृति, परम्पराओं और विकास के स्तर के अनुसार बदलती रहती है। उदाहरण के लिए एक समृद्धिशाली देश को ले लीजिए। वहां अपंगों को पूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सकती है जिसके फलस्वरूप उन्हें उपयुक्त रोजगार मिल जाता है। इसके विपरीत अधिकांश विकासशील देशों में तो विकलांगों के लिए शिक्षा प्राप्त करना ही कठिन है। स्पष्टतः इस प्रकार का व्यक्ति केवल अपंगता के कारण ही अक्षम नहीं होता बल्कि वह अपने देश की सामाजिक और आर्थिक दशाओं के कारण एक अतिरिक्त अक्षमता से भी ग्रस्त हो जाता है। अपंग लोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष का एक प्रमुख उद्देश्य वस्तुतः सरकारों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना है कि वे ऐसी सभी प्रकार की अक्षमताओं को उत्तरोत्तर दूर करती जाएं जिनके अपंग व्यक्ति शिकार होते हैं।"

जाला लुसिबु एन कांजा
अपंग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के लिए
कार्यकारी सचिव

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.............
Dated..............

अपंग व्यक्तियों के अधिकारों के संबंध में संयुक्त राष्ट्र की घोषणा

महासभा जो कि

संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में सदस्य राष्ट्रों द्वारा की गई इस प्रतिज्ञा––कि वे संगठन के सहयोग से, सम्मिलित रूप में और अलग-अलग भी जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने, रोजगार प्रदान करने और आर्थिक और सामाजिक प्रगति और विकास की दशाओं को आगे बढ़ाने के प्रति जागरूक है,

चार्टर में घोषित मानव अधिकारों और मूलभूत स्वतंत्रताओं तथा शांति, गरिमा और मानवीय अस्तित्व की मूल्यवत्ता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों की पुनः पुष्टि करती है,

मानव अधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा-पत्र के सिद्धांतों, मानव अधिकारों की अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदाओं, शिशुओं के अधिकारों, मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के अधिकारों संबंधी घोषणा-पत्रों, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, संयुक्त राष्ट्र शिशु निधि और संबद्ध संस्थाओं के संविधानों, अधिवेशनों, संस्तुतियों और प्रस्तावों में सामाजिक प्रगति के पूर्व निर्धारित मानदंडों का प्रत्याह्वान करती है,

अपंग व्यक्तियों की अशक्तता को दूर करने और उन्हें पुनःस्थापित करने के संबंध में आर्थिक और सामाजिक परिषद् 1921 (LVIII) के 6 मई, 1975 के संकल्प का प्रत्याह्वान करती है,

सामाजिक प्रगति और विकास के घोषणा-पत्र जिसके अंतर्गत शारीरिक और मानसिक तौर पर अलाभकारी स्थितियों में रह रहे लोगों के अधिकारों की रक्षा की आवश्यकता और उनके कल्याण और पुनर्प्रतिष्ठा पर बल देती है,

शारीरिक और अशक्त लोगों को विभिन्न प्रकार के कार्यक्षेत्रों में अपनी योग्यताओं का विकास करने में सहयोग देने, और जहां तक संभव हो, सामान्य जीवन में उनके एकीकरण की वृद्धि को स्मरण करती है,

यह जानती है कि कुछ देश ही अपने विकास के मौजूदा चरण में इस लक्ष्य की दिशा में केवल सीमित प्रयत्न कर सकते हैं,

अपंग व्यक्तियों के अधिकारों के प्रतिज्ञा-पत्र की उद्घोषणा करती है और राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कार्यवाही की मांग करती है जिससे कि इसे इन अधिकारों की रक्षा के निमित्त एक साझे आधार और संदर्भ के रूप में इस्तेमाल किया जा सके :

1. 'अपंग व्यक्ति' का अर्थ है वह व्यक्ति जो स्वयं को संपूर्णतः या अंशतः, एक सामान्य व्यक्ति की आवश्यकताओं और/या सामाजिक जीवन के संदर्भ में, शारीरिक और मानसिक योग्यताओं में किसी कमी––जन्मजात या अन्य––के परिणामस्वरूप, सुरक्षित रखने में असमर्थ हो ।

2. अपंग व्यक्ति उन सभी अधिकारों का उपयोग कर सकते हैं जिनका इस घोषणा में उल्लेख है । ये अधिकार बिना किसी अपवाद के सभी अपंग व्यक्तियों को प्रदान किए जायेंगे, इस अंतर या भेदभाव के बिना कि अपंग व्यक्ति या उसका परिवार किस जाति, वर्ण, लिंग, भाषा, धर्म, राजनीतिक तथा अन्य मान्यता, राष्ट्रीय और सामाजिक मूल-स्थान, सम्पत्तिस्तर, जन्म या अन्य किसी स्थिति से सम्बद्ध है ।

3. अपंग व्यक्तियों को अपने मानवीय गौरव को बनाये रखने का जन्मजात अधिकार है । उत्पत्ति, अपंगता की प्रकृति और गंभीरता चाहे कितनी भी हो, उसके मूलाधिकार वही हैं जो उसके हमउम्र साथी नागरिकों के हैं जिनमें से सर्वोच्च अधिकार है, अच्छी जिन्दगी जीना, जहां तक संभव हो सके––स्वाभाविक और संपूर्ण ।

4. अपंग व्यक्तियों को वही नागरिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं, जो अन्य मनुष्यों को प्राप्त है । मानसिक रूप से मंद व्यक्तियों के अधिकारों से संबंधित घोषणा मानसिक रूप से अशक्त व्यक्तियों पर भी लागू होती है जिसके अंतर्गत उनके अधिकारों को न सीमित किया जा सकता है न कुचला जा सकता है ।

5. अपंग व्यक्ति उन सभी उपकरणों के हकदार हैं जिनके जरिये, जहां तक संभव हो सके, वे आत्म-निर्भर बन सकें ।

6. अपंग व्यक्तियों को कृत्रिमांग स्थापन विषयक––शल्य क्रिया सहित, आयुर्वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और ऐन्द्रिय क्रियाओं का उपचार कराने का, शारीरिक और सामाजिक तौर पर पुनः बहाल होने का, शिक्षा, रोजगार, प्रशिक्षण और पुनःस्थापन, सहायता, परामर्श, सेवाओं की व्यवस्था तथा ऐसी सेवाएं जिनसे कि वे अपनी योग्यताओं-गुणों का पूरा विकास कर सकें ताकि समाज में उनके एकीकरण या पुनः एकीकरण की प्रक्रिया तेज हो सके, का अधिकार प्राप्त है ।

7. अपंग व्यक्तियों को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा का और अच्छे ढंग से जीवन बिताने का अधिकार है । अपनी योग्यताओं के अनुरूप रोजगार प्राप्त करने का, उसे धारण करने का या लाभप्रद, उत्पादक या अर्थकारी व्यवसाय अपनाने का या मजदूर संघों में भाग लेने का अधिकार है ।

8. अपंग व्यक्तियों को यह अधिकार है कि वे आर्थिक और सामाजिक योजना की तमाम अवस्थाओं में अपनी खास जरूरतों की ओर ध्यान दिलवा सकते हैं ।

9. अपंग व्यक्तियों को अपने परिवारों या प्रतिपालक माता-पिता के साथ रहने का तथा तमाम सामाजिक, सर्जनात्मक या मनोरंजनात्मक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है । जहां तक आवास का प्रश्न है, किसी भी विकलांग के साथ वैसा भेदभावपूर्ण बर्ताव नहीं किया जा सकता जो उसकी स्थिति और सुधार के प्रतिकूल हो । किसी विशेषज्ञता-प्राप्त संस्था में अगर किसी विकलांग का प्रवेश अपरिहार्य हो तो परिवेश और जीवन योग्य दशाएं उसकी उम्र के व्यक्ति के औसत जीवन के अनुरूप होनी चाहिए ।

10. शोषण, तमाम अधिनियमों, भेदभावपूर्ण व्यवहारों अश्लील और निचले स्तर के स्वभावों से अपंग व्यक्तियों की रक्षा की जाएगी ।

11. अपंग व्यक्ति योग्य कानूनी सहायता प्राप्त कर सकेंगे जब ऐसी सहायता उनकी जिन्दगी और संपत्ति की रक्षा के लिए अपरिहार्य होगी । अगर उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाहियां की जाती हैं तो कानूनी तौर-तरीके अपनाते समय उनकी शारीरिक और मानसिक दशा का पूरा ध्यान रखा जायेगा ।

12. अपंग व्यक्तियों की संस्थाओं का, उनके अधिकारों संबंधी विषयों के निमित्त, उपयोगी तौर पर विधान किया जायेगा ।

13. अपंग व्यक्तियों को, उनके परिवारों को और उनके समुदायों को, समुचित उपायों से, इस घोषणा-पत्र में अंतर्भूत अधिकारों से, पूरी तरह सूचित किया जायेगा ।

संकल्प 3447
30वां सत्र, 2433वां पूर्ण अधिवेशन
9 दिसम्बर, 1975

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्तता की अनुभूति

होलिस

मेरी विकलांगता मस्तिष्क-पक्षाघात है जो कि जन्म से है । यों तो भिन्न-भिन्न प्रकार के मस्तिष्क-पक्षाघात होते हैं पर जो पक्षाघात मुझे है उसमें मस्तिष्क द्वारा पैरों को भेजे गए संदेश में आम तौर पर जितना समय लगता है उससे अधिक समय मेरे अंदर लगता है । मेरे पैरों की शक्ति सीमित है और उसी के अनुसार उन्हें काम करना होता है ।

मिसाल के तौर पर जब मेरे दोस्त चल रहे होते हैं तब तो प्रायः मैं उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलता रहता हूं पर जब वे दौड़ने लगते हैं तब वे मुझे पीछे छोड़ जाते हैं । यह घटना मेरे साथ घटती रहती है हालांकि वास्तव में मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता कि अन्य लोग कितनी तेजी से चल रहे हैं—मैं तो अपनी ही चाल से चलता रहता हूं ।

कभी-कभी ऐसा होता है कि जब मैं सड़क पर चल रहा होता हूं तो लोग मेरी ओर टक-टकी लगाकर देखते हैं और कुछ लोग सवाल भी करते हैं ।

मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि लोग बैठे-बैठे मेरी ओर टक-टकी लगा कर देखते रहें या मेरी पीठ पीछे मेरे ही बारे में बात करें इससे अच्छा तो मुझे यह लगता है कि लोग मेरे बारे में मुझ से प्रश्न करें और मैं उनका उत्तर दूं। मैं यह चाहता हूं कि मेरे बारे में किसी बात को अपने मन में बैठाए रखने की जगह लोग मुझसे प्रश्न करके अपने प्रश्न का उत्तर पा लें । अगर वे ऐसा नहीं करते तो सवाल यह उठता कि मेरे जैसे लोगों के बारे में उन्हें उत्तर कहां से प्राप्त हो पाएगा । इस संबंध में एक बात और यह है कि जब भी लोग मुझसे प्रश्न करते हैं तो मुझे उनसे यह कहने का मौका मिल जाता है कि 'देखिए, यह तो सही है कि कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें आप कर सकते हैं और मैं नहीं कर सकता, पर यह बात भी सही है कि कुछ बातें ऐसी हैं जिन्हें मैं कर सकता हूं और आप नहीं कर सकते ।'

यहां, एक बात का जिक्र करना मैं अवश्य चाहूंगा जो मेरी अत्यंत सहायता करती है और वह यह है कि मेरे परिवार और मित्र मुझे हमेशा प्रोत्साहित करते रहते हैं और उनकी ये बातें मुझे आत्म-निर्भर बनाती हैं ।

यों तो मेरे बहुत से विकलांग मित्र हैं पर मैं उन लोगों के साथ भी मित्रता करना चाहता हूं जो विकलांग नहीं हैं ।

"मेरे मित्र मेरी विकलांगता पर उतना ध्यान नहीं देते जितना कि मेरे व्यक्तित्व पर और वास्तविकता यह है कि जब वे ऐसा करते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। यदि अन्य लोग भी मेरे साथ ऐसा ही करने लगें तो मैं समझता हूं कि सब कुछ ठीक हो जाएगा ।"

मेरे विचार केवल विकलांगों की ही अपनी समस्याएं नहीं हैं पर हर व्यक्ति के सामने कुछ न कुछ समस्याएं अवश्य रहती हैं । मेरा विचार है कि हर व्यक्ति को अपनी समस्याओं पर ही विचार करना चाहिए और उन्हें हल करने का [illegible] चाहिए । यदि उनका तरीका कारगर साबित न हो

उन्हें बराबर कोशिश करते रहना चाहिए और यदि कुछ भी ठीक न हो सके तो उन्हें शिकायत करनी चाहिए। उन्हें शिकायत करने के बाद फिर कामयाब होने की कोशिश करनी चाहिए ।

गिन्नी

जब मैं बहुत छोटी थी तब मैं भी अन्य छोटी बच्चियों की तरह लगती थी लेकिन जब मैं तीन-चार वर्ष की हो गई तो लोगों ने पाया कि मैं बौनी हो गई हूं । शुरू में तो लोग यही समझते थे कि अन्य बच्चियों के मुकाबले मेरा कद थोड़ा बहुत कम हैं पर जब डाक्टरों ने मेरे कुछ एक्स-रे लिए तो लोग यह समझ गए कि वास्तव में मैं बौनी हूं ।

बौना वह व्यक्ति है जिसकी हड्डियों की वृद्धि उतनी तेजी से नहीं होती जितनी कि अन्य लोगों की हड्डियों की होती हैं । वास्तव में बौने व्यक्ति की हड्डियां बहुत ही धीरे-धीरे बढ़ती हैं। अतः मेरे हाथपांव तो छोटे ही रह गए पर शरीर के अंदरूनी भाग यानी हृदय, यकृति तथा अन्य बहुत कुछ ठीक वैसे ही हैं जैसा कि मेरी उम्र की अर्थात् 12 वर्ष की अन्य लड़कियों के हैं ।

वास्तव में कभी-कभी तो नाटा होना एक समस्या बन जाती है । कुछ काम तो ऐसे होते हैं जिन्हें मेरे लिए करना काफी कठिन होता है । मिसाल के तौर पर उस चीज तक पहुंचना काफी कठिन होता है जो कुछ ऊंचाई पर रखी हो, तेज दौड़ना मुश्किल होता है और ऐसे स्थानों पर जाने पर काफी परेशानी होती है जहां काफी समय तक चलते रहना पड़ता है जैसे चिड़ियाघर, पार्क तथा बाजार।

बौने को सबसे अधिक परेशानी तब होती है जबकि लोग उसे छेड़ते हैं तथा उसकी ओर टक-टकी लगा कर देखते हैं ।

'मुक्तता की अनुभूति' नामक दूरदर्शन माला बच्चों की प्रतीति संबंधी कार्य गोष्ठी द्वारा, जो अमेरिकन इंस्टीट्यूस फार रिसर्च, कैम्ब्रिज, मैसाच्यूसेट्स का एक प्रभाग है, निर्मित की गई थी। इन पृष्ठों पर दिए गए एलेन ब्राइट मैन के फोटोग्राफ और इन पृष्ठों पर होलिस, लारी और गिन्नी के उद्धृत पाठ पर कापीराइट दि अमेरिकन इंस्टीट्यूट फार रिसर्च, कैम्ब्रिज, मैसाच्यूसेट्स, यू० एस० ए० का है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मुक्तता की अनुभूति' पुरस्कार प्राप्त अमरीकी दूरदर्शन माला का शीर्षक है। इसमें बच्चों को अपने अपंग 'साथियों से परिचित कराया गया था। इसका उद्देश्य स्कूली बच्चों की सहायता करना है ताकि वे अपने विकलांग साथियों के बीच संकोच न महसूस करें और उनसे दोस्ती कर सकें। साथ ही इसका यह उद्देश्य भी है कि एक ऐसा वातावरण बनाया जाए जिसमें स्पष्ट रूप से परस्पर सवाल किए जा सकें, और विभिन्न विषयों पर चर्चा की जा सके तथा अपंग बच्चों की इस प्रकार मदद की जाए कि वे स्कूल के वातावरण में अपने आप को मुक्त महसूस कर सकें। इस कार्यक्रम से ही यह संभव हो सका कि संयुक्त राज्य के सभी भागों के बच्चे उन लोगों से सवाल पूछ सकें जो उनका उत्तर देने में सबसे अधिक समर्थ है—अर्थात् स्वयं विकलांग बच्चे। इसमें यह प्रयत्न किया गया है कि जो अंधे, बहरे, मंदित बुद्धि या विकलांग हैं वे कैसा महसूस करते हैं—इस बात की एक झलक दी जा सके। इन पृष्ठों में हम आपका परिचय होलिस, लॉरी और गिन्नी से करा रहे हैं। इन तीनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया था और ये लोग इस बात के लिए तैयार थे कि वे ऐसे सवालों का जबाब दें कि अपंग होने का क्या मतलब है और वे अपनी रुचियों और अरुचियों, अपने भयों और अपनी खुशियों के बारे में दूसरों को बताएं। इसके अतिरिक्त केवल यही न बताएं कि वे किन बातों में अन्य लोगों से भिन्न है बल्कि यह भी बताएं कि किन बातों में वे अन्य लोगों के समान हैं।

यदि लोग यह समझने लगें कि बौने भी आदमी हैं तो बौने को अपनी जिन्दगी जीने में काफी सुविधा हो सकती है।

लोग तो लोग ही हैं अतः जो कुछ भी चीजें बौने को उनसे भिन्न बनाती हैं उनका कोई खास मतलब नहीं होता। अच्छे दोस्त का होना ही मतलब रखता है क्योंकि वे ही साथ-साथ रहने से कामों में हाथ बटाते रहते हैं।

साथ-साथ कुछ करते रहने में मैं और मेरे मित्र इतने मशगूल हो जाते हैं कि वे एक दूसरे के कद, शरीर की बनावट, शरीर पर चित्तियों आदि के निशान, चमड़े के वर्ण तथा उन सभी चीजों को भूल जाते हैं जो एक दूसरे को भिन्न बनाती हैं। जब आप अपने मित्र के साथ होते हैं तब अंतर का कोई खास महत्व नहीं रह जाता।

एक बात मैं यह अवश्य चाहती हूं कि लोग मेरे ऊपर कोई विशेष ध्यान न दें। वास्तव में उस समय मुझे अजीब-सा लगता है जबकि लोग मुझे छोटी बच्ची समझते हैं, मुझे गोद में उठा कर ले जाते हैं या इसी प्रकार की अन्य बातें करते हैं। मैं नहीं चाहती कि लोग इस तरह मेरी देखभाल करें क्योंकि अब मैं इतनी बड़ी हो चुकी हूं कि अपनी देखभाल मैं स्वयं कर सकती हूं और ऐसा करने में मैं अपने को सक्षम भी महसूस करती हूं।

लॉरी

यह जान कर आपको हंसी आ सकती है कि मैं स्वयं को विकलांग नहीं मानती, क्योंकि मेरे भी उतने ही मित्र हैं जितने किसी अन्य के हो सकते हैं, अन्य बच्चों की तरह मैं भी पब्लिक स्कूल में पढ़ने जाती हूं और मैं अपने को दूसरों से अलग नहीं समझती।

मेरी उम्र 14 वर्ष है और मैं अपने को अपनी उम्र की अन्य लड़कियों की तरह मानती हूँ। यों तो मैं वह सब कुछ करती हूं जो कि अन्य लड़कियां करती हैं पर कभी-कभी कुछ काम ऐसे होते हैं जिन्हें मुझे अपने ढंग से ही करना पड़ता है।

जब तक मैं पूरी तरह से अंधी नहीं हो गई थी तब तक मेरी धारणा यही थी कि यदि कोई व्यक्ति देख न हो पाता हो—अर्थात् यदि वह अंधा हो तो वह कोई भी काम नहीं कर सकता। एक अंधे व्यक्ति के बारे में मेरे मन में यही धारणा बनी हुई थी कि वह अंधा व्यक्ति हाथ में टिन का डिब्बा लिए सड़क के एक कोने पर खड़ा रहता है। यह बात मैं सोच भी नहीं सकती थी कि अंधा व्यक्ति पढ़ने के लिए स्कूल जा सकता है या स्वयं बस में सवार हो सकता है अथवा कोई भी काम वह कर सकता है। मैं समझती हूं कि अंधे व्यक्ति के बारे में अधिसंख्य लोग भी वैसा ही सोचते हैं जैसा कि मैं सोचती थी।

अब आप यह जानना चाहते हैं कि वह क्या चीज है जिससे मैं सचमुच परेशान हो जाती हूँ। होता यह है कि लोग मुझे देखने तो आते हैं पर मुझसे बातचीत नहीं करते। मेरे सामने आकर वे बिलकुल चुप हो जाते हैं और केवल मेरी ओर देखते रहते हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि मेरे चेहरे की ओर देखकर ही उन्हें मुझ से संबंधित सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है।

मैं समझती हूँ कि लोग मेरी ओर टक-टकी लगा कर इसलिए देखते रहते हैं क्योंकि उन्हें इस बात की ठीक जानकारी नहीं रहती कि अंधापन क्या चीज है। मैं समझती हूँ कि इस संबंध में उनके मन में कुछ सवाल अवश्य उठते रहते हैं, पर वे यह समझ नहीं पाते कि मेरी जैसी बच्ची से इन सवालों को कैसे पूछा जाए।

एक और बात जिससे मुझे बहुत बड़ी ठेस पहुंचती है वह यह कि मेरे सामने ही खड़े होकर लोग एक दूसरे से इस तरह बातें करते हैं जैसा कि वहां मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है। मैं यह नहीं बता सकती कि इस स्थिति में मुझे कितना गुस्सा आता है। मिसाल के तौर पर मेरे सामने ही लोग मेरे स्वास्थ्य के बारे में मेरी मां से इस तरह पूछते हैं जैसे कि मैं उन्हें दिखलाई नहीं पड़ रही हूं।

मेरा विचार है कि व्यक्ति को स्वयं अपने ऊपर विश्वास होना ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। विश्वास के बल पर मैं यह समझती रहती हूँ कि मैं मैं हूं—और तब मुझे इस बात की चिन्ता नहीं रह जाती है कि लोग मेरे बारे में क्या क्या सोचते हैं। यह मेरी राय है कि यदि आपका अपने ऊपर विश्वास है तो आपके बारे में लोग क्या सोचते हैं उसका महत्व ही नहीं रह जाता।

अब मैं यह महसूस करने लगी हूँ कि मेरा स्वयं का एक अलग व्यक्तित्व है और जो कपड़े मैं पहनती हूँ, जिस तरह के मित्र मेरे हैं तथा जिन चीजों को मैं करना चाहती हूँ—वे बिलकुल भिन्न हैं अर्थात् न तो वे सामान्य से अच्छी हैं और न ही बुरी—बस भिन्न हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जोखिम उठाने का साहस

—एडवर्ड वी० रोबर्ट्स

एडवर्ड वी० रोबर्ट्स 1953 से अपंग हैं। उनके दोनों हाथ और पैरों में लकवा मार गया है। वे कृत्रिम श्वासयंत्र से युक्त पहियों वाली कुर्सी पर बैठ कर कैलिफोर्निया के पुनर्वास विभाग का निर्देशन करते हैं। उनके नेतृत्व में यह विभाग अपंग व्यक्तियों के लिए सेवाएं प्रदान करने वाली मुख्य राज्य एजेन्सी बन गया है।

केवल कुछ वर्ष पहले मेरे जैसे लोग दया के पात्र समझे जाते थे। कई दृष्टियों से हम भाग्यशाली होते, बशर्ते जीवन की मुख्य धारा का अंग बनने के लिए हमें आवश्यक सुविधाएं मिली होतीं।

चौदह वर्ष की आयु की वे अभिवृत्तियां मुझे याद हैं. जब मैं लगभग चार दिन में एक उद्दीयमान खिलाड़ी से एक असहाय अपंग बन गया। हम जानते हैं कि यह बात उन व्यक्तियों और उनके माता-पिता के लिए कितनी दुखदायी हो सकती है, जिन्हें भविष्य के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं है। मैं उस समय को याद करता हूं, जब मेरे लिए सबसे भय की बात यह थी कि मेरे माता-पिता के मरने के बाद मेरा क्या होगा। मेरे माता-पिता को भी यही भय था। मुझे वे दिन याद हैं जब चिकित्सक मेरी मां से कहते थे कि मैं एक मामूली व्यक्ति ही रहूंगा।

हम जानते हैं कि अपंगता एक दमनकारी कारक नहीं है, बल्कि यह एक प्रेरणा है। अपंगता आपका आत्मविश्वास है और इसके कारण आप आसपास के लोगों के भी विश्वास के पात्र बनते हैं। यह उन शिक्षकों की भी आपके प्रति अभिवृत्ति

ओह सूनी नामक एक उदीयमान कलाकार की तूलिका के चमत्कार से आकार लेता हुआ एक आर्किड, जो जापानी कला का एक पारम्परिक विषय रहा है।

इस जापानी श्रमिक का अपना काम तो बिना पहिएदार कुर्सी के चल नहीं पाता पर तब भी वह बेप्पू सिटी, जापान की एक उत्पादक औद्योगिक कार्यशाला में पहिएदार कुर्सी के फ्रेम की वेल्डिंग का काम करता है।

'अपंगता कोई ऐसी

Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बनाती है जिन्हें समुचित कौशल तथा ज्ञान प्राप्त है और वे आप में बुनियादी विश्वास रखते हैं तो आपको आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता है। इस प्रेरणा को कोई अवरोध नहीं रोक सकता, चाहे वह मंच पर चढ़ने के लिए रपटीले ढलान का अवरोध हो, एक बधिर व्यक्ति के संचार का अवरोध हो, अन्धे व्यक्ति के लिए पढ़ाई का अवरोध हो अथवा मंदितमनस्क कहे जाने वाले लोगों के बारे में अभिवृत्तियों का अवरोध हो।

जहां तक मेरे अपने विकास का संबंध है इस बात से मुझे सर्वाधिक सहायता मिली कि मैं समाज से अलग नहीं रखा गया। मेरे समुदाय में अपंगों के लिए अलग विद्यालय नहीं था। मेरी शिक्षा फिर से आरम्भ करने के लिए उन्होंने मुझे विस्तर से उठाने का एक नया तरीका अपनाया। मैं अन्य लोगों से कुछ भिन्न था इसलिए बाहर जाने और लोगो द्वारा मुझे एकटक देखते रहने का अपना भय दूर करना पड़ा।

अपने हाई स्कूल की अंतिम कक्षा में मैंने यह अनुभव किया कि लोगों का मेरी तरफ एकटक देखना कोई बहुत बुरी बात नहीं है। आप इसे बुरे रूप में भी ले सकते हैं और अच्छे रूप में भी। बुरे रूप में आप यह कह सकते हैं कि यह एक अजीब आदमी या अन्य लोगों से भिन्न व्यक्ति है। अच्छे रूप में यह कह सकते हैं कि आप एक मशहूर आदमी हैं। आप इसे अच्छे रूप में ले सकते हैं अथवा आपको समाज से अलग रहना होगा। मेरे कुछ परिचित लोग थे जिन्होंने मुझे बाहर लोगों में आने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने मुझे एक प्रकार से फुसलाया। उस समय से मुझे यह महसूस होने लगा कि मेरी भी कुछ पसंद थीं और किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए मुझे जोखिम उठाना सीखना पड़ा।

बहुत सारे युवा अपंग अनेक कारणों से जोखिम नहीं उठाना चाहते। युवा अपंग प्रायः यह नहीं सीखते कि अगला जोखिम किस प्रकार उठाया जाए। मुझे याद है जब मैं बरकली में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में था, मुझे किसी से प्रेम हो गया। हर जगह परिचर को साथ ले जाना बड़ा असुविधाजनक होता था। कई वर्षों तक मुझसे यह कहा गया कि मैं बहुत अधिक अपंग हूं इसलिए मैं शक्तिचालित पहियां कुर्सी नहीं चला सकता। परन्तु, मैंने जोखिम उठाने का निश्चय किया, क्योंकि मैंने अपना भाग्य दांव पर लगा रखा था। प्रारंभ में कुछ गिरा-गिरी हुई, परन्तु कुछ सहायता मिल जाने पर मैंने इसमें सफलता प्राप्त कर ली।

पिछले बीस से तीस वर्षों के दौरान हमने काफी प्रगति की है। हमने अनुभव किया कि लोगों की सीमाएं हैं, परन्तु हम प्रत्येक व्यक्ति की सीमाओं की परिभाषा नहीं दे सकते। यदि मैंने अपने जीवन में कुछ सीखा है तो इन सीमाओं के सम्बन्ध में ही सीखा है। अनेक बार मुझसे यह कहा गया कि मैं यह काम नहीं कर सकता था, वह काम नहीं कर सकता। यहां तक कि जिस विभाग का मैं आजकल निर्देशन कर रहा हूं, उसके द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। मुझसे यह कहा गया था कि मैं काम नहीं कर सकता, क्योंकि मैं बहुत ही अपंग हूं।

यह आवश्यक है कि समाज की इस दिशा में सहायता करने के लिए हम एक जुट होकर काम करें ताकि वह सभी प्रकार की अपंगताओं से पीड़ित लोगों की क्षमता को समझे। मैं स्वयं अपंगता की उस क्रम परंपरा के विचार से बिल्कुल सहमत नहीं हूं जिसमें एक ऐसा अपंग व्यक्ति जो "सामान्य जीवन" बिता सकता है, "भिन्न" दिखाई पड़ने वाले व्यक्ति की अपेक्षा समाज में अधिक सम्मान पाता है। हमारे अन्दर सभी प्रकार की क्षमताएं हैं और हमें उन्हें प्राप्त करने का पूरा अधिकार है।

मैंने अपना अधिकांश जीवन अपंग व्यक्तियों को उनका संघ बनाने के लिए प्रोत्साहित करने में बिताया है और मेरा यह विश्वास है कि हम मिलकर निश्चित रूप से परिवर्तन ला सकते हैं। हम यह जानते हैं कि अपंगता इतनी अधिक भयानक नहीं है, परन्तु हमें यह भी ज्ञात है कि अपंगता के निहितार्थ भय, अज्ञानता और पृथक्कता प्रायः भयानक होते हैं। हममें से प्रत्येक दूसरों के लिए एक आदर्श भूमिका निभा सकता है। मेरा साहस एक बहुत ही भिन्न अपंग व्यक्ति को सहायता दे सकता है, जिससे वह अपने जीवन का संचालन कर सकता है या कर सकती है। हम एक दूसरे के जीवन को भी समृद्ध बना सकते हैं। मुझे डेनिस सैन्टाइन और बाब मेट्ज जैसे अपने दोस्त याद आते हैं जो कैलिफोर्निया में स्टैनिसलॉस नदी के तीव्र जल प्रवाह में नाव चलाने का कार्य करते हैं। डेनिस अन्धा है और बाब चतुरंघात से पीड़ित है, परन्तु इससे उनके काम में बाधा नहीं पड़ी। वे साथ-साथ काम करते हैं और इससे दोनों को लाभ है।

मेरा आपके लिए केवल यही सन्देश है कि हम विचार करें कि हम सभी एक-दूसरे की अभिवृत्तियों की समस्या को हल करने में कितना हिस्सा लेते हैं। चतुरंग घातिक व्यक्ति को उद्देश्यपूर्ण और सम्मानपूर्वक जीने में जो व्यावहारिक बाधाएं होती हैं उससे वह व्यक्ति अलग-थलग पड़ जाता है और उसके सम्मान को ठेस लगती है तथा उनकी अन्य विशिष्ट आवश्यकताएं भी पूरी नहीं हो पातीं। इस विषय में हम सभी एक साथ हैं। एक प्रकार की अपंगता से रूढ़िबद्ध रूप से सम्बन्धित व्यक्ति बिल्कुल भिन्न रूप से अपंग व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव डालता है। हम लोग साथ-साथ काम करके ही इसे बदल सकते हैं। □

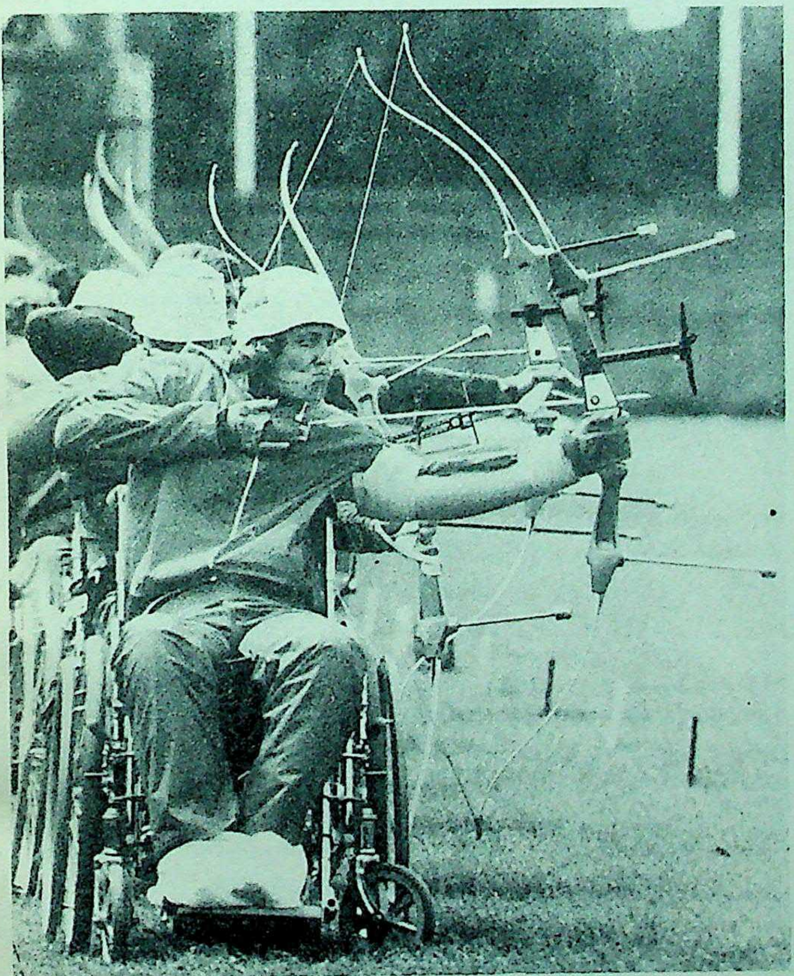

अर्नहेम, नीदरलैण्डस् में हुए विकलांगों के लिए 1980 ऑलम्पिक खेल में एकाग्रचित्तता और दृढ़निश्चय।

फू यूचू, जो क्योगडंक, चीन के एक हाई स्कूल की छात्रा है, चल तो नहीं सकती, परन्तु उसकी सहेलियां इस बात का पूरा ध्यान रखती हैं कि कभी उसकी कक्षा न छूटे और न वह कभी अवकाश के समय की मौज-मस्ती से वंचित रहे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बात नहीं है कि वह व्यक्ति को तोड़ दे, बल्कि वह तो एक अभिप्रेरक शक्ति है

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाथ से टटोलकर पहचानना

—ओल्गा स्कोरोखोदोवा

पाठ का कापीराइट है © पुनरुद्धहरण की अनुमति नहीं

कवयित्री और निबंधकार ओल्गा स्कोरोखोदोवा अंधी और बहरी दोनों ही हैं। वे दक्षिणी यूक्रेन के एक गांव में 1914 में पैदा हुई थीं। पांच साल की होने के पूर्व ही वह तानिकाशोथ से पीड़ित हो गईं और पहले उनकी दृष्टि और बाद में उनकी श्रवण-शक्ति दोनों ही पूरी तरह से नष्ट हो गईं। इसी कारण उनकी वाग्शक्ति भी क्षीण हो गई। उन्हीं दिनों उनके माता-पिता दोनों ही चल बसे। 1925 में वे गूंगे, बहरे और अंधे बच्चों के क्लिनिक में भर्ती हुईं। यह क्लिनिक दो वर्ष पूर्व प्रोफेसर इवान सोकोल्यान्सकी द्वारा खारकोव में स्थापित किया गया था। वहां उन्हें वाणी पुनः प्राप्त हो गई। प्रोफेसर सोकोल्यान्सकी द्वारा शुरु की गई विशेष विधियों की सहायता से और ब्रेल लिपि की सहायता से उन्हें नियमित रूप से स्कूली विषयों की शिक्षा दी गई और उन्होंने माध्यमिक शिक्षा समाप्त कर ली। 1961 में, उन्होंने मनोविज्ञान और शैक्षिक विज्ञानों में डाक्टरेट प्राप्त की और इस समय मास्को में यू० एस० एस० आर० शैक्षिक विज्ञान अकादमी के विकलांगों के संस्थान में वरिष्ठ अनुसंधान सहायक हैं। उनकी पुस्तक 'हाऊ आई परसीव, इमेजिन एंड अंडरस्टैंड दि वर्ल्ड एराउंड मी', जिसमें से आगे दिए गए उद्धरण लिए गए हैं, मास्को में 1972 में प्रकाशित हुई थी और अनेक भाषाओं में उसका अनुवाद भी किया जा चुका है।

सामान्य दृष्टि वाले लोग जो अन्धों से परिचित नहीं हैं, प्रायः मुझसे इस प्रकार के प्रश्न पूछते हैं—"तुम्हारे कपड़ों के स्टाइल और रंग का चुनाव कौन करता है? तुम्हें ड्रेस खरीदने की सलाह कौन देता है? तुम्हारे कमरे की सजावट का कौन ध्यान रखता है और फर्नीचर को उपयुक्त ढंग से रखने का फैसला कौन करता है? ये वस्तुएं वहां न रख कर यहां क्यों रखी गई हैं?"

जब मैं यह उत्तर देती हूं कि लगभग प्रत्येक वस्तु का चुनाव मैं स्वयं करती हूं तो वे बड़े आश्चर्य से मुझे देखते हैं और प्रायः यह उन्हें अविश्वसनीय लगता है। लेकिन यह सत्य है।

उदाहरण के लिए, जब मैं किसी दुकान से सिला-सिलाया कपड़ा खरीदने जाती हूं तो मैं जांच करके तुरन्त बता देती हूं कि इसका स्टाइल मुझे पसन्द है और यह मेरे लिए ठीक रहेगा। यह अनुभव मैं अपने हाथ से करती हूं और मैं तुरन्त समझ लेती हूं कि यह ड्रेस मेरे लिए उपयुक्त है। जहां तक रंगों का सम्बन्ध है, स्वभावतः मुझे दृष्टि वालों पर निर्भर करना पड़ता है।

कभी-कभी मेरे साथ रहने वाले दोस्त यह कहते हैं कि अमुक ड्रेस या कोट या कमीज का रंग बहुत आकर्षक है और मैं इसमें अच्छी लगती हूं। परन्तु जब मैं यह अनुभव करती हूं कि यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मेरे दोस्त भी यही कहते हैं, क्योंकि यह काफी चौड़ा या संकरा या छोटा अथवा लम्बा है तो मैं उसे नहीं खरीदती।

अपने जीवन काल में मैंने प्रायः कई मकान बदले हैं और हर बार मैंने अपने कमरे को अपनी इच्छा के अनुसार व्यवस्थित किया है। इस बारे में मेरा अपना निर्णय होता था। यह सामान्य बात है और कहने योग्य नहीं है। यह सच है कि जो लोग देख और सुन सकते हैं, ऐसी छोटी-छोटी घटनाएं उनके रोजमर्रा जीवन का अंग बन गई हैं और महत्वहीन हैं। परन्तु मेरे लिए कमरा बदलना बहुत ही महत्वपूर्ण बात है।

कोई दृष्टि वाला व्यक्ति पहली बार जब किसी कमरे में जाता है तो वह तुरन्त उसकी लम्बाई और चौड़ाई का अंदाजा लगा लेता है। यहां तक कि अन्धे व्यक्ति जो सुन सकते हैं, आवाज की ओर जाते हैं। वे कदमों की आहट और वाणी से उत्पन्न ध्वनि और कम्पन द्वारा कमरे के आकार का अन्दाजा लगा सकते हैं।

लेकिन मेरे जैसे जो न केवल अन्धे हैं, बल्कि वधिर भी हैं इस विषय में क्या करें। क्योंकि न तो मैं देख सकती हूं और न सुन सकती हूं इसलिए कमरे की लम्बाई और चौड़ाई जानने के लिए तथा यह समझने के लिए कि यह वर्गाकार अथवा समकोण है, मुझे सावधानीपूर्वक उसे हाथों से छूना पड़ता है। फिर मैं यह पता लगाती हूं कि किस दीवार या खिड़की के सामने दरवाजा है। इस प्रकार की पूर्ण जांच के बाद कमरे की आकृति और आकार के विषय में मुझे जानकारी प्राप्त होती है और फिर मैं अपने मस्तिष्क में फर्नीचर को उस कमरे में रखने के सम्बन्ध में सोचती हूं। फिर मैं निश्चय कर सकती हूं कि किस स्थान पर कौन-सा सामान रखा जाय।

आमतौर से, उस समय मैं सभी फर्नीचर के विषय में निर्णय नहीं कर पाती, बल्कि अलग-अलग चीजों के रखने के विषय में निश्चय करती हूँ जैसे—कुर्सी, मेज, अलमारी, पलंग और सोफ़ा आदि। हर फर्नीचर वास्तविक रूप में अपने सामान्य आकार में जितना है, मैं उसे न तो उससे बड़ा सोचती हूं और न ही छोटा। इन वस्तुओं के विषय में सोचते समय मैं उनके अलग-अलग भागों के बारे में नहीं सोचती, जैसे कुर्सी का पाया, सीट और उसका पिछला हिस्सा। मैं पूरी कुर्सी के वास्तविक आकार को सोचती हूं।

यदि मैं किसी अपरिचित वस्तु के केवल एक भाग की जांच करूं तो हो सकता है कि मैं उसे वास्तविक वस्तु से भिन्न समझूं। मुझे यह पता नहीं होगा कि वह वस्तु वास्तव में क्या है, मेरे मस्तिष्क में केवल उसी हिस्से की तस्वीर होगी जिसे मैंने अपने हाथों से छुआ है।

उदाहरण के लिए, यदि मैं बारहसींगा के सींगों का ऊपरी हिस्सा छू लूं और फिर मुझ से पूछा जाय कि 'क्या तुम प्राणी की सामान्य आकृति और सींगों के आकार के विषय में बता सकती हो।' मेरा जवाब निश्चित रूप से "नकारात्मक" होगा। दूसरी ओर, यदि मैं अपने पलंग के सिरहाने का सिरा छू लूं तो मैं पूरे पलंग के विषय में राय व्यक्त कर सकती हूं। एक बार मैंने एक विशेष कुर्सी की विशिष्टताओं और प्रमुख आकार-प्रकार का अध्ययन किया था और उस कुर्सी की बिल्कुल सही तस्वीर मेरे दिमाग में अंकित हो गई है और अब मैं उसे कहीं भी पहचान सकती हूं।

इस प्रकार, अपने नए कमरे के आकार, चौड़ाई और लम्बाई के विषय में जानने के बाद मैं फर्नीचर को बिना किसी आंख वाले मित्र की सहायता के सुव्यवथित रूप से कमरे में सजा सकती हूं। पहले से जैसी योजना मैं दिमाग में बैठा लेती हूँ उसके अनुसार मैं अपनी इच्छानुसार उसे सजा कर रख देती हूं। कभी-कभी मैं अपनी प्रारम्भिक योजना को बिल्कुल कार्यान्वित नहीं करती, परन्तु यह केवल सुविधा के लिए करती हूं और बहुत-सी गृहिणियों की तरह कमरे के बीच में एक मेज रख देती हूं, जो मेरे जैसे एक अंधे व्यक्ति के लिए बहुत ही अव्यावहारिक है।

CC-0 ... Preservation Foundation,Chandigarh,Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्योंकि मैं हमेशा अपने कमरे में सभी चीजों को उसी क्रम से और उसी स्थान पर रखती हूं इसलिए धीरे-धीरे मैं पूर्ण रूप से अचेतन अवस्था में भी फर्नीचर की स्थिति की अभ्यस्त होने के कारण कमरे में आसानी से चल-फिर लेती हूं। उदाहरणार्थ, यदि मैं सोफे पर बैठी हूं और मेज पर से एक कागज या पेन्सिल लेनी है तो बिना एक क्षण की हिचकिचाहट के मैं अपना हाथ ठीक उसी दिशा में ले जाती हूं। यदि मुझे अलमारी से कोई वस्तु लेनी होती है तो मैं ठीक उतने ही कदम चलती हूं, जितनी दूर अलमारी है।

प्रायः छोटे कमरे से बड़े कमरे में जाने पर या बड़े कमरे से छोटे कमरे में जाने पर पहले कुछ दिनों तक मुझे असुविधा होती है। बड़ा कमरा बहुत बड़ा लगता है और मैं मेज या अलमारी तक न जा कर सहज रूप से बीच में रुक कर अपने चारों ओर के खाली स्थान में उन्हें ढूंढने लगती हूं। यदि वर्तमान कमरा मेरे पुराने कमरे से छोटा होता है तो प्रारम्भ में मुझे फर्नीचर से ठोकर लग जाती हैं, क्योंकि मेरी कल्पना के अनुसार कुर्सियां और मेज अपने वर्तमान स्थान से दूर होनी चाहिए। परन्तु दोनों ही अवस्थाओं में अपनी कल्पना के अनुसार फर्नीचर मुझे बड़ा या छोटा नहीं लगता, मैं उसे उसके वास्तविक परिमाप में ही समझती हूं।

मैं सोचती हूं कि इससे यह प्रकट होता है कि अन्धे व्यक्तियों का अपने आसपास का सांसारिक बोध जीवन के प्रति वास्तविक है। यह बोध्र आंख वाले व्यक्तियों से भिन्न है, परन्तु निम्न स्तर का नहीं है।

एक बार एक सदाशय महिला ने मुझे यह समझाने की चेष्टा की, कि अन्धे व्यक्ति किसी वस्तु के वास्तविक आकार और आयतन का अनुभव नहीं कर सकते। उसने बताया कि उसका विश्वास था कि अंधे व्यक्ति किसी भी वस्तु को उसके वास्तविक आकार की अपेक्षा बड़ा या छोटा समझते हैं और विशेष रूप से छोटा ही मानते हैं, हालांकि मुझे पता नहीं है कि उसका यह विश्वास क्यों था। उसने पूछा कि "यदि तुम्हारे हाथ में कोई सेब और ककड़ी दे दे और फिर उसे ले ले तो तुम उनके विषय में किस प्रकार का अनुभव करोगी? छोटा या बड़ा? गोल या लम्बा?"

मैंने जैसा अनुभव किया था उसे बतला दिया :

मैंने बताया कि "मैं सेब को सेब ही समझूंगी कुछ और नहीं समझूंगी और उसका सही आकार छोटे वृत्त के साथ गोल ही समझूंगी। लम्बी और संकरी आकार वाली ककड़ी को मैं ककड़ी ही समझूंगी। स्वभावतः मैं इसे सेब नहीं समझूंगी।"

इस महिला ने पूछा "जब आप किसी वस्तु के विषय में अनुभव करने के बाद उससे दूर चली जाती हैं तो आपके मस्तिष्क में पूरी वस्तु की तस्वीर अंकित रहती है या उसके कुछ हिस्से की।"

"जब आपका हाथ मेरे हाथ में होता है तो मैं अनुभव से समझ लेती हूं कि यह आपका ही हाथ है, यद्यपि मैं आपके चेहरे से परिचित नहीं हूं क्योंकि मैंने उसे देखा नहीं है। इसलिए, मैं कल्पना नहीं कर सकती कि वह किस प्रकार का है। फिर भी, मुझे ज्ञात है कि प्रत्येक मानव की तरह आपकी आंखे हैं, एक नाक और एक मुख है। यदि मैं आपकी नाक के सिरे को छूती हूं तो यह मेरे मानस पटल पर अंकित हो जाती है, परन्तु मैं अनुभव करती हूं कि आपकी नाक पूरी है। थोड़ी देर के लिए यह कल्पना कीजिए कि आपने अपने चेहरे को नकाब से ढक लिया है या आप किसी पर्दे के पीछे छिप गई हैं, परन्तु बाहर से देखने पर आप की एक आंख और चिबुक का कुछ हिस्सा दिखाई पड़ रहा है। कमरे में अचानक जब कोई आंख वाला व्यक्ति आएगा तो उसे आपकी एक आंख और चिबुक का कुछ हिस्सा दिखाई पड़ेगा, यद्यपि वह अनुभव कर लेगा कि आपका चेहरा पूरा है।"

मैं नहीं जानती कि मेरे इस उत्तर से मेरी सहेली पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हुई या नहीं। उसने इस रोचक वार्तालाप के लिए मुझे धन्यवाद दिया, परन्तु वह कुछ परेशान थी।

इस वार्तालाप के पश्चात् मैंने अपने मस्तिष्क में जो अनेक तस्वीरें बनाई थीं उनका सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया। मैं यह निश्चय करना चाहती थी कि अन्धे और दृष्टि वाले व्यक्तियों की तुलना करते हुए प्रतिबिम्बों के बोध के सम्बन्ध में मैंने जो उत्तर दिए हैं, वे ठीक हैं। पूरे दिन मैं बोध और अभिव्यक्ति के अनेक उन उदाहरणों को याद करने का प्रयास करती रही, जिसे मैंने पढ़ा था या जिनके बारे में मुझे बताया गया था।

कल्पना की शक्ति से मैं पूर्णरूप से परिचित हूं। कभी-कभी किसी व्यक्ति के सुन्दर और आकर्षक हाथों से मैं यह अनुभव करने लगती हूं कि जिस व्यक्ति से मैं सम्पर्क कर रही हूं वह सभी भौतिक और नैतिक गुणों से युक्त है। परन्तु, जब मैं उसे अपने हाथों से टटोलती हूं तो मुझे अपनी गलती मालूम होती है और उसके सम्बन्ध में बनी पूरी धारणा स्वप्न की तरह समाप्त हो जाती है।

कल्पना का भ्रम टूट जाना जिस प्रकार दृष्टि वाले व्यक्तियों के लिए कष्टकारक होता है उसी प्रकार अन्धों के लिए भी होता है। कभी-कभी भावना हमारी इच्छा शक्ति को नष्ट कर देती है, परन्तु कारण और सामान्य अनुभूति से वास्तविकता प्रकट हो जाती है और विश्व के मिथ्या बोध का सामना करने में हमारी सहायता करती है। □

ओलगा स्कोरोखोदोवा का उदाहरण सोवियत रूस तथा संपूर्ण संसार में अनगिनत विकलांग लोगों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहा है। नीचे चित्र में जो तीन गूंगे-अंधे विज्ञानी उत्साह से भरे बातचीत करते दिखाई दे रहे हैं, वे भी उनके पद चिह्नों पर चले हैं। बाएं से दाहिने ये हैं--ज्यार्गेई गेजेंको, सेरगेई सिरोत्किन और नताशा कोर्नीवा। सिरोत्किन और कोर्नीवा ने मास्को विश्वविद्यालय से 1977 में आनर्स सहित स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की और अब वे वैज्ञानिक संस्थानों में अनुसंधान कार्य में लगे हुए हैं। गेजेंको राज्य पुरालेख संस्थान, मास्को के स्नातक हैं, और इटली के इतिहास पर शोध-प्रबंध तैयार कर रहे हैं। सोवियत रूस में प्रतिवर्ष 500-600 के बीच अंधे व्यक्ति प्रतिवर्ष उच्च शिक्षा संस्थानों में भर्ती होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्वाग्रह को

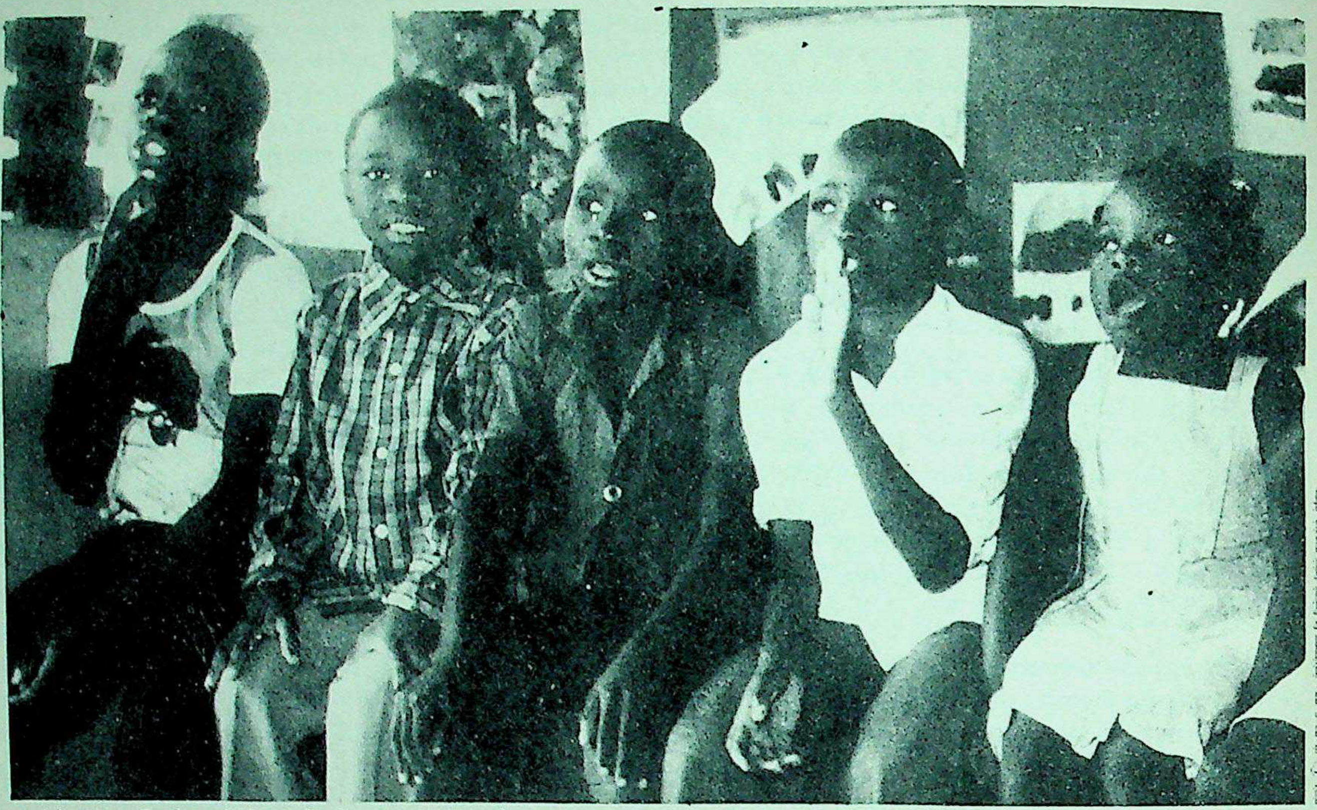

याओंडे, कैमेरून में गूंगे बच्चों के एक केंद्र में उत्साह से भरे बच्चे ।

सामान्य रूप से सुनने वाला व्यक्ति अपनी कल्पना-शक्ति पर चाहे जितना जोर दे लेकिन वह इस बात को समझने में समुचित रूप से सफल नहीं हो सकता कि जन्म से या बाल्यकाल के प्रारंभ में बधिर हो जाने वाला व्यक्ति कैसा महसूस करता है। बधिरता के कारण बधिर व्यक्ति संगीत का आनंद लेने से ही वंचित नहीं हो जाता बल्कि वह इससे भी अधिक महत्वपूर्ण पर्यावरणी ध्वनियों, यथा गाती हुई चिड़ियों, तेज बहती हवा, टर्र-टर्र करते मेढ़कों और कल-कल करते सोते को भी नहीं सुन पाता ।

ये वंचनाएं तो महत्वपूर्ण हैं ही किन्तु प्रारंभ की अगाध बधिरता पीड़ित व्यक्ति पर जिस भाषा-वंचना को थोप देती है, उससे इनकी तुलना नहीं की जा सकती । विख्यात मनोवैज्ञानिक एडना लेविने ने, जिन्होंने बधिरता की समस्याओं पर व्यापक रूप से अध्ययन किया था, इस प्रकार अपना दुख प्रकट किया : "आवाज न सुनना बोलचाल की भाषा को न सुन पाना है । बोलचाल की भाषा न सुन पाने का तात्पर्य है कि बधिर बच्चा मानवीय संप्रेषण और समागम के लिए आधुनिक उपकरण-वाणी से पूरी तरह से अनभिज्ञ रहता है ।"

श्रवण शक्ति के अभाव के कारण बधिर बच्चा भाषा को आंखों तथा अन्य कृत्रिम साधनों से सीखने को बाध्य हो जाता है । इससे पता चलता है कि बहुत से बच्चे जो जन्म से बधिर थे या जो जीवन की शुरूआत में बधिर हो जाते हैं, जीवन भर भाषा की कठिनाइयों से क्यों पीड़ित रहते हैं ।

पीटर ओ० मबा, इबादान विश्वविद्यालय, नाइजीरिया में विशेष शिक्षा विभाग के प्रधान हैं। पच्चीस वर्ष की आयु में दुर्घटना होने के कारण वे बधिर हो गए।

संप्रेषण की समस्याओं के अलावा, साहित्य द्वारा पुष्ट व्यक्तिगत अनुभव से पता चलता है कि बधिरता का बधिर व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व पर व्यापक प्रभाव पड़ता है जिसमें उसका सामाजिक समायोजन, प्रत्यक्ष ज्ञान और सामान्य शारीरिक क्रियाकलाप शामिल हैं । वह अपने चारों ओर के संसार को समझने, अपनी बात समझाने, सीखने के अनुभव प्राप्त करने में व्यापक रूप से सीमित होता है ।

इन सब बातों के बावजूद ही कुछेक बधिर लोगों ने बधिरता में अंतर्निहित कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके विश्व ख्याति प्राप्त की है । स्वर कार बीथोवेन, स्पेनी चित्रकार गोया, फ्रांसीसी शिक्षक लॉरां क्लार्क, और आविष्कारक थॉमस एडीसन जैसे बधिर व्यक्तियों के जीवन के कारण आज हमारा विश्व अधिक समृद्ध है। इन विभूतियों की अपेक्षा कम प्रभावान व्यक्तियों ने भी अपने उद्यम के विभिन्न क्षेत्रों में काम करके व्यापक ज्ञानोदय और मानवता की प्रगति में योगदान किया है ।

फिर भी, सब मिलाकर विश्व भर के विशेष रूप से विकासशील देशों के लाखों अशिक्षित बेरोजगार और अल्प रोजगार सुनने में असमर्थ लोगों की तुलना में विख्यात बधिर लोगों की संख्या बहुत कम है । मैंने हाल ही में एक सर्वेक्षण किया था जिससे यह पता चला कि बधिर व्यक्ति के प्रति ही नहीं, बल्कि सामान्यतः अपंग लोगों के प्रति आम जनता में व्यापक पूर्वाग्रह के कारण तथाकथित "तृतीय विश्व" में विद्यालय आयु के बधिर बच्चों में से 10 प्रतिशत से भी कम बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

जो लोग विकलांग या दूसरों से भिन्न दिखाई पड़ते हैं, उनके प्रति समाज की अभिवृत्ति के संबंध में साहित्य में काफी कुछ मिल जाता है। उदाहरणार्थ, एक अनुसंधानकर्ता को पता चला कि विश्व भर में अपंग नागरिकों को सेवाएं उपलब्ध कराने के संबंध में विकलांग लोगों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति सर्वत्र पायी जाती है—यहां तक कि संयुक्त राज्य में भी, जो विश्व भर में सर्वाधिक विकसित देश माना जाता है ।

अपंगताओं के कारणों के संबंध में जो हठधर्मी मिथक और अंधविश्वासी आस्थाएं हैं वे नकारात्मक अभिवृत्तियों की पुष्टि करतीं हैं और इन्ही से उस दृष्टिकोण का भी निर्धारण होता है जिससे कि विकलांग व्यक्ति को समझा और उसके साथ व्यवहार किया जाता है—यही बात उसके पारिवारिक समुदाय पर भी लागू होती है। बधिर लोगों के प्रति अभिवृत्तियों के हाल के अध्ययन में मैंने यह पाया कि पूर्वी अफ्रीका के भागों में यह विश्वास किया जाता है कि जन्म-जात बधिर व्यक्ति को किसी देवता ने कुछेक रहस्यों का उद्घाटन न करने की चेतावनी दी है और वह उसके इसी व्यादेश का पालन कर रहा है । संभावित जोखिमों से बचने के लिए उसने "मूक बधिर" बच्चे के रूप में जन्म लेना पसंद किया । इसके फलस्वरूप अन्य लोगों को अच्छा बहाना मिल जाता है कि उनका उससे कोई सरोकार नहीं है । नाइजीरिया के कुछेक भागों में इसी प्रकार का विश्वास इस लोकोक्ति कि "दूध का जला छाछ फूंक-फूंक कर पीता है" के अनुसरण के रूप में बधिरता की व्याख्या करता है । बच्चे की आत्मा जब पुनः देह धारण करती है तो वह बधिर होना पसंद करती है क्योंकि पूर्व जन्म में उसने प्रत्येक व्यक्ति की बातों को सुना था जिसके परिणामस्वरूप उसकी असामयिक मृत्यु हो गई थी ।

यद्यपि शिक्षा और सामान्य ज्ञानोदय के फलस्वरूप नकारात्मक अभिवृत्तियाँ तेजी से बदल रही हैं, फिर भी बधिर लोगों के प्रति क्रूरतापूर्ण व्यवहार आज भी प्रायः देखने में आता है । ऐसे मामले देखने में आए हैं कि युवा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाधा

—पीटर ओ० मबा

वधिरों की शिक्षा और उनका समाज में समाकलन करने के लिए नृत्य एक अच्छी भूमिका निभा सकता है । आत्माभिव्यक्ति करने का साधन उपलब्ध कराने के साथ-साथ यह शारीरिक संतुलन और संचार कौशलों के विकास में भी सहायक हो सकता है और इससे उनके बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक परितोष में भी योगदान होगा । फोटो में युवा बधिर नर्तकी को नृत्य के लिए तैयार होने के साथ साथ संकेत भाषा में वातचीत करते हुए दिखाया गया है । वह बधिर लोगों के संस्थान गलाउदेत कालेज, संयुक्त राज्य अमरीका की छात्रा है जिसकी नृत्य-मंडली विश्वविख्यात है ।

वधिरों को जवरदस्ती धार्मिक आस्थाचिकित्सकों के पास भेजा जाता है जो उनका उपचार करने के लिए उन्हें कुछेक दिनों के लिए उपवास कराते हैं । इनमें से कुछ चिकित्सक इनकी मूक बधिर अवस्था को दूर करने के लिए तपस्या के रूप में उन्हें शारीरिक दंड एवं अंग विच्छेदन की सलाह देते हैं ।

कुछ वर्ष पहले एक वधिर लड़की को व्यर्थ ही मनोचिकित्सा वार्ड में वधिरता के अलावा और कोई रोग न होने पर भी चार वर्षों तक भर्ती रखा गया जहां वह पड़ी घुलती रही। बाद में सरकारी पुनर्वास उपबोधक द्वारा उसका पता चला ।

बहुत से अल्प-विकसित समुदायों में बधिरता का सामना करने पर बहुधा लोग बहुत संवेगात्मक हो जाते हैं। इस प्रकार, वे बधिर व्यक्ति को परेशान कर उसे यह सोचने पर बाध्य कर देते हैं कि उसका जीवन व्यर्थ है और वह केवल उपहास का पात्र है ।

कुछ वर्ष पूर्व एक गर्भवती बधिर लड़की अन्य गर्भवती महिलाओं के साथ बैठी प्रसवपूर्व निदान गृह में चिकित्सक की प्रतीक्षा कर रही थी । बधिर लड़की चुपचाप बैठी थी, जबकि अन्य महिलाएं उत्तेजनापूर्ण बातचीत में व्यस्त थीं । कुछ देर बाद एक युवा शिक्षक ने जिसने बधिर लड़की को विद्यालय में पढ़ाया था, उसको पहचान लिया और उससे बात करने के लिए कमरे के अंदर आ गया । शीघ्र ही वे दोनों संकेत भाषा में वातचीत करने लगे । जैसे ही अन्य महिलाओं ने इन दोनों को संकेत भाषा में बातचीत करते और हंसते देखा तो एकदम कमरे में सन्नाटा छा गया । क्षण भर बाद ही वे महिलाएं सिसकने लगीं और अपनी गीली आंखों को रूमाल से पोंछने लगीं । उनमें से एक [illegible] से बातचीत कर रही है, वह बधिर है। उनको इस पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि वे ऐसा सोच नहीं सकती थीं कि बधिर लड़की भी गर्भवती हो सकती है। स्वाभाविक रूप से वह अभागी लड़की इस अकारण सहानुभूति के दिखावे से घबरा गई। ग्रामीण समुदायों में विभिन्न परिस्थितियों में ऐसी घटनाएं प्रायः होती रहती हैं ।

अंत में, मैं यह बताना चाहता हूं कि मैं 25 वर्ष की आयु में बधिर हो गया था और इस समय मुझे बधिर व्यक्ति के रूप में 30 वर्ष के अनुभव ने यह सिखाया है कि बधिरता के कारण बधिर व्यक्तियों को कितने अपमान, गलतफहमी, मानव अधिकारों के वंचन और तदनुभूति का सामना करना पड़ता है । इसी कारण मेरा ऐसा विश्वास है कि बधिर व्यक्ति सफल जीवन बिता पायेगा या नहीं, इस कठिन समस्या का समाधान इस बात पर निर्भर करता है कि उसके घर और समाज में जहां वह रहता है उसके प्रति अभिवृत्तियां किस प्रकार की हैं । □

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब सामाजिक तनाव अत्यधिक प्रबल होता है

विभिन्न तरीकों से सामाजिक कारक मानसिक बीमारियों को उत्पन्न करते हैं। प्रायः देखा जाता है कि मानसिक रोग उत्पन्न करने में सामाजिक घटनाएं या परिस्थितियां उत्तरदायी होती हैं। सामाजिक परिस्थितियां, मनोवैज्ञानिक या जैविक कारकों के साथ मिलकर व्यक्ति को रोगग्रस्त बना देती हैं। समाजविज्ञानी के शब्दों में, सांस्कृतिक पर्यावरण और इसमें होने वाले परिवर्तन, समुदाय में और इसका गठन करने वाले सामाजिक समूहों में, मानसिक बीमारी की व्यापकता को प्रभावित करते हैं।

सामाजिक कारक मानसिक बीमारी के क्रम और परिणाम पर भी प्रभाव डालते हैं, क्योंकि उपचार की प्रभाविता अधिकांश रूप में उस सामाजिक परिस्थिति पर निर्भर करती है, जिसमें उपचार किया जाता है। इसके अलावा पुनः प्रशिक्षण और पुनर्वास कार्यक्रम आवश्यक रूप से सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बनाए जाते हैं। समाज में मानसिक रूप से कौन बीमार है और किसको उपचार की आवश्यकता है इसका पता लगाने और निर्णय लेने में सांस्कृतिक अभिवृत्तियां और विश्वास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही ये समाज द्वारा दी जाने वाली मनोरोग सेवाओं के क्षेत्र और स्वरूप को भी प्रभावित करती हैं।

handigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मैं बड़ी डरी-डरी रहती हूं कि लोग मुझ पर हसेंगे"

—बारब्रो लुन्दहल

अश्रा एक मन्दितमनस्का स्त्री है । उसकी उम्र यही कोई तीस-पैंतीस की होगी । मन्दितमनस्कों के लिए शुरु की गई विशेष शिक्षा-पद्धति के अन्तर्गत वह स्कूल जाती थी । स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद उसने कोशिश की कि अन्य साधारण श्रमिकों की तरह उसे भी कोई कार्य मिल जाए किन्तु उसे इसमें सफलता नहीं मिल पाई क्योंकि उसे शीघ्र ही मालूम पड़ गया कि श्रम बाजार में जिस श्रम की अपेक्षा की जाती है वह उसके बस की बात नहीं है । इस समय तो वह अपने एक प्रेमी के साथ रह रही है और घर का कामकाज संभाल रही है । मनोविज्ञानी बारब्रो लुन्दहल से अन्ना की जो बातचीत हुई निम्न वार्तालाप उसी से लिया गया है । इसमें अन्ना बताती है कि उसकी इस कमी के कारण उसको अपने जीवन में आने वाली बाधाओं के कारण कैसा महसूस होता है, उसे कैसे लज्जा आती है, वह कैसे सदा डरी-डरी रहती है और किस प्रकार वह स्वाभाविक जीवन-धारा से अपने को अलग-थलग महसूस करती है ।

अन्ना : मन्दितमनस्क होने का अर्थ ही है कि तुम ठीक नहीं हो...

जब सिर में कुछ गड़बड़ी होती है...

जब कोई आदमी उतना नहीं कर सकता

जितना दूसरे कर सकते हैं...

हाई स्कूल के किसी छात्र की भांति या दूसरों की तरह अस्पताल में काम नहीं कर सकता । मन्दितमनस्क को ऐसा लगता है कि सब बातें धीरे-धीरे हो रही हैं ।...परन्तु हो सकता है कि इसीलिए मैं मन्दितमनस्क हूं...क्योंकि मेरे दिमाग में कुछ गड़बड़ी है?

बारब्रो : तुमसे किसने कहा कि तुम मन्दितमनस्क हो ?

अन्ना : मेरी मां ने मुझसे कहा कि मैं कुछ मन्दितमनस्क हूं और...मैं दूसरे लोगों की तरह नहीं हूं ।

बारब्रो : किस मायने में तुम दूसरों लोगों की तरह नहीं हो ?

अन्ना : मुझे लगता है मेरी सब बातें कितनी धीरे-धीरे होती हैं, मैं कितने धीमे चलती हूं, मैं बहुत जल्दी भूल जाती हूं, जब मैं बात करती हूं तो लोगों को लगता है कि मैं कुछ अजीब-सी बात कह रही हूं और जो मैं कहती हूं कोई उसे समझता ही नहीं । मैं सोचती हूं कि लोग मेरी बात इसलिए नहीं समझते क्योंकि मैं दूसरों की तरह नहीं हूं...लोग सोचते हैं कि यह सब मेरा ही किसी प्रकार का दोष है ।

बारब्रो : पहले-पहल तुम्हें कब ऐसा महसूस हुआ ? क्या तुम्हें याद है ?

अन्ना : हां, जब मैं स्कूल में थी, तब । बड़ा बुरा लगता है मन्दितमनस्क होना... इससे मन कैसा बुझा-बुझा-सा हो जाता है । मैं चाहती हूं मैं भी दूसरों की तरह ठीक हो जाऊं...वैसी ही स्वस्थ और खुश । पर मेरे लिए तो बस लगता है दुःख ही दुःख है ।

बारब्रो : क्या मन्दितमनस्क होना कोई शर्म की बात है ?

अन्ना : मेरे मन में तो यही है कि मन्दितमनस्क होना कितनी भद्दी बात है...जैसे कोई आदमी दूसरों की तरह न दिखाई दे या जैसे वह बीमार मालूम पड़े । मैं सोचती हूं कि मैं मन्दितमनस्क हूं इसलिए मैं दूसरे लोगों की तरह नहीं दिखाई देती ।

बारब्रो : तुम्हारा मतलब है कि चूंकि मंदितमनस्क लोग अजीब लगते हैं इसलिए तुम भी अजीब लगोगी ही ।

अन्ना : नहीं, मैं उतनी अजीब तो नहीं लगती जितने वे लोग, परन्तु मुझे अन्दर से ऐसा लगता है कि मन्दितमनस्क होने के कारण मैं जैसे कुछ अजीब-सी हूं । मैं चाहती हूं मैं रोऊं और बस रोती ही रहूं ।

बारब्रो : तुम जो मन्दितमनस्क हो, इसके बारे में क्या तुमने अपनी मां के अलावा भी किसी और से बातचीत की है ?

अन्ना : जहां मैं पहले काम करती थी, वहां...वहां लोग कहा करते थे..."वह क्रैक है ।"

बारब्रो : अच्छा वे ऐसा कहते थे ? तुम्हें कैसा लगता था ?

अन्ना : मुझे बुरा लगता था ।

बारब्रो : क्या कभी तुमने उन्हें यह समझाने की कोशिश नहीं की कि कुछ बातें तुम्हारे लिए मुश्किल क्यों हैं और उसका कारण क्या है ?

अन्ना : नहीं, ऐसा करने की तो मेरी हिम्मत ही नहीं होती थी । मुझे लगता जैसे मैं और भी गूंगी हो गई हूं । हो सकता है कि अब, जब मैं तुम्हें बता रही हूं, मुझे ऐसा मालूम होता हो ।

बारब्रो : मन्दितमनस्क लोगों के विषय में मेरे क्या विचार हैं...इस बारे में तुम क्या सोचती हो ?

अन्ना : यह कि वे भी अन्य लोगों की तरह होते हैं ।

बारब्रो : अगर तुम ऐसा सोचती हो तो जब तुम मुझे यह सब बताती हो तुम्हें यह क्यों लगता है कि तुम गूंगी हो ?

अन्ना : बस मुझे अपने अन्दर से ऐसा ही मालूम पड़ता है ।

बारब्रो : दूसरे मन्दितमनस्क लोगों के बारे में तुम क्या सोचती हो ? तुम उन लोगों के साथ रहना चाहोगी या अन्य लोगों के साथ ?

अन्ना : मैं सामान्य लोगों के साथ रहना चाहूंगी । सुनिए... क्या मैं आपसे एक बात पूछ सकती हूं? हम लोग जो इस पाठ्यक्रम में शिक्षा पा रहे हैं...क्या हम सब लोग मन्दितमनस्क हैं?

बारब्रो : हां, थोड़े-बहुत । यह कहना तो ठीक नहीं होगा कि जो लोग इस पाठ्यक्रम में शिक्षा पा रहे हैं, वे सभी मन्दितमनस्क हैं पर यहां जितने लोग हैं उन सभी को स्कूल में शिक्षा प्राप्त करते समय कठिनाई होती थी । क्या तुम अपने प्रेमी के बारे में बहुत सोचती हो ?...क्या तुम यह जानना चाहती थीं कि क्या वह भी मन्तिदमनस्क है । क्या तुम्हारे लिए उसका कोई महत्व है ?

अन्ना : उसका कोई उतना महत्व नही है । लेकिन मुझे उसे यह बताने की हिम्मत नहीं होती कि मैं मन्दितमनस्क हूं । उसे यह मालूम हो जाएगा तो हो सकता है वह मुझसे अपने संबंध तोड़ना चाहे ।

बारब्रो : क्या तुम्हें सचमुच में इस बात का विश्वास है ? क्या तुम यह नहीं सोचतीं कि वह यह समझ गया है कि तुम्हारे लिए कुछ काम करना कठिन है लेकिन तब भी वह तुम्हें चाहता है ? मन्दितमनस्क होना किसी सम्पूर्ण व्यक्ति का केवल एक अंशमात्र है । इसके अतिरिक्त भी तुममें कितना-कुछ है .... तुम कितनी बातों को महसूस कर सकती हो और यह प्रकट भी कर सकती हो कि तुम महसूस करती हो। और भी तो तुम कितने सारे विभिन्न काम कर सकती हो। ऐसी कुछ ही बातें हैं जिन्हें करना तुम्हारे लिए कठिन है। एक व्यक्ति के रूप में तुम उतनी ही योग्य हो जितना कि कोई भी अन्य व्यक्ति हो सकता है।

अन्ना : यह तो है, परन्तु मैं मन्दितमनस्क नहीं होना चाहती । मैं ठीक होना चाहती हूं मेरी बहनें मन्दितमनस्क नहीं हैं ।

बारब्रो : नहीं, तुम्हारी अपेक्षा जीवन में वे कुछ अधिक भाग्यवान रही हैं... । तुम कहती हो कि तुम ठीक नहीं हो ? क्या तुमने कभी सोचा है कि कोई ऐसी दवा है कि जिसे खाकर मंदितमनस्क लोग ठीक हो सकते हो ?

अन्ना : हां, लेकिन अब उससे लाभ नहीं होगा, अब बहुत देर हो गई है। क्या तुम्हें मालूम पड़ता है कि मैं मन्दितमनस्क हूं ?

बारब्रो : इस प्रश्न का उत्तर देना बड़ा कठिन था ।...परंतु मैं नहीं सोचती कि इससे तुम्हारा कोई दोष प्रकट होता है । मैं सोचती हूं तुम अन्य अधिसंख्य लोगों की तरह दिखाई पड़ती हो ।

अन्ना : लेकिन यहां, मेरे दिमाग के भीतर !

टिप्पणियां : अन्ना अपनी मंदितमनस्कता से अत्यधिक दुःखी है। उसे इससे बहुत शर्म महसूस होती है और उसे लगता है कि उसके कारण उसका सारा आकर्षण समाप्त हो गया है। उसे इस बारे में किसी से बात करने तक का साहस नहीं होता और उसे इस बात की कोई आशा नहीं है कि उसके आसपास का समाज उसके प्रति कोई हमदर्दी रखता हो और उसे समझने की कोशिश करता हो । इस प्रकार यह स्वाभाविक ही है कि वह भी अन्य मंदितमनस्कों की भांति अपने इस दोष को छिपाने की कोशिश करती है। वह बार-बार इस बात का जिक्र करती है कि उसे इस बात का विश्वास है कि लोग जानते हैं कि वह मंदितमनस्क है। वह कहती है कि मैं सामान्य होना चाहती हूं । वह अपने को अन्य मंदितमनस्कों से अलग रखना चाहती है, यह इस बात से प्रकट होता है कि वह उनके लिए 'वे' और 'हम' शब्दों का प्रयोग करती है । अन्ना को यह सीखने के लिए कि वह जैसी है अपने को उसी रूप में स्वीकार करे और अपने ऊपर ही भरोसा रखे इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि उसे अत्यधिक सहारा और सहायता प्राप्त हो । मेरा तो यह अनुभव रहा है कि प्रौढ़ होने पर मंदितमनस्क लोगों में यह बात आमतौर से देखी जाती है । यह अत्यंत आवश्यक है कि वे एक अधिक अनुकूल वातावरण में रह पाएं---ऐसा वातावरण जिसमें उन्हें अपने बारे में और अपनी स्थिति के बारे में बातचीत करने के अधिकाधिक अवसर मिल सकें और जिसमें उन्हें अपने सब विचारों और प्रश्नों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने का साहस हो सके । यह अत्यंत आवश्यक है कि वे यह समझें कि वे किसी ऐसे लज्जाजनक रोग से ग्रस्त नहीं है जिसके बारे में बातचीत नहीं की जा सकती ।

उन्हें यह जानने की जरूरत है कि उन्हें जो कठिनाइयां महसूस होती हैं उनमें कौनसी मन्दितमनस्कता के कारण हैं और कौन-सी इस कारण हैं कि सामाजिक सम्पर्क के समय---चाहे वह सम्पर्क सरकारी तौर पर किया गया हो या योंही अनौपचारिक रूप से---उन्हें भेदभाव का अनुभव करना होता है। हम लोगों को, जो मन्दितमनस्कों के साथ काम करते हैं, उनके विचारों का पता लगाना चाहिए और तब उन विचारों का आदर करना चाहिए---न कि यह कि हम उनकी समस्याओं के लिए सामान्यतः स्वीकृत हल प्रस्तुत करें।

यह जरूरी है कि हम संवेदनापूर्ण ढंग से उनकी बातें सुनें और हमारा उनसे जो संपर्क हो वह खुले हृदय और इमानदारी के साथ हो। केवल तभी हम यह आशा कर सकते हैं कि मन्दितमनस्क अपनी ये इच्छाएं प्रकट करेंगे कि वे अपने जीवन में क्या लक्ष्य निश्चित करेंगे और यह कि उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक जिम्मेदारी उठा सकेंगे। ☐

स्वीडन की मनोवैज्ञानिक बारब्रो लुन्दहल को मानसिक रूप से अविकसित लोगों के साथ काम करने का कई वर्षों का अनुभव है । वे मानसिक रूप से अविकसित लोगों के उपयोग के लिए विशेष रूप से लिखी गयी मनोविज्ञान की पुस्तक की लेखिका भी है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फोटो © [illegible], यूनेस्को

यूनेस्को ब्रेल कूरियर

—फ्रेडरिक एच० पोटर

दृष्टि से विकलांग लोगों के बारे में जिस समय अर्थात् 1949 में यूनेस्को की पहलेपहल अंतर्भावितता हुई थी, जबकि भारत सरकार ने अनेक देशों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार की ब्रेल प्रणाली अपनाने की ओर इस संगठन का ध्यान आकर्षित किया था, उस समय अधिकांश अंधे व्यक्तियों को उपयुक्त शिक्षा प्राप्त करने तथा व्यावसायिक शिक्षण लेने के साधन बहुत ही कम थे।

इस संबंध में यूनेस्को का उद्देश्य 'एक विश्व ब्रेल एकरूपता कार्यक्रम' चलाने का था जिसे 1953 के अंत तक काफी सफलता मिल गई थी। हालांकि उस समय कुछ ही लोग इस बात को बहुत बड़ी बात मानते थे कि यह एक ऐसा कार्यक्रम था जिसमें भिन्न-भिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के लोग एक साथ मिलकर एक सार्वजनिक समस्या को सुलझा रहे थे। इसमें न केवल शाब्दिक कोडों पर ही सहमति प्रकट की गई जिससे कि पूरे विश्व के अंधे व्यक्ति समान ब्रेल पुस्तकों को पढ़ सकते हैं, ब्रेल के जरिए विदेशी भाषा सीख सकते हैं, ब्रेल अक्षरों के जरिए विचारों एवं अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकते हैं, बल्कि संगीत एवं वैज्ञानिक संकेतनों में उभरी लिपि के इस्तेमाल में महत्वपूर्ण प्रगति की गई।

इसके बाद एक विश्व ब्रेल परिषद का गठन किया गया जिससे कि ब्रेल संबंधी सभी मामलों की चर्चा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर की जा सके।

वर्ल्ड ब्रेल यसेज को, जो कि विकासशील देशों में ब्रेल मुद्रण करने, ब्रेल कोडों में सुधार लाने तथा नए-नए कोड बनाने में लगे हुए व्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ पुस्तक है, यूनेस्को ने 1953 में प्रकाशित किया और इसका एक अद्यतन संस्करण इस साल प्रकाशित किया जाएगा। **'वर्किंग विद ब्रेल'** नामक एक नया प्रकाशन भी 1981 में उपलब्ध हो जाएगा। यूनेस्को द्वारा उठाए गए इन कदमों से उन लोगों में भी यूनेस्को के प्रति रुचि उत्पन्न हो गई जो नजर के न होने के कारण यूनेस्को की पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं को नहीं पढ़ सकते थे और जैसे-जैसे समय गुजरता गया—वैसे-वैसे यूनेस्को के कार्यकलापों में हुई वृद्धि के साथ-साथ यूनेस्को के प्रति लोगों में रुचि बढ़ती गई। संगठन के उद्देश्यों, इतिहास और कार्यक्रम के बारे में दृष्टि से विकलांग व्यक्तियों ने काफी पूछ-ताछ की थी पर उन्हें यह बताया गया कि ब्रेल में कोई प्रलेखन नहीं है तो उन्हें इस जानकारी से काफी आश्चर्य हुआ और वे अपने को अपवर्जित महसूस करने लगे।

1974 के वसंत का वह दिन मुझे अच्छी तरह से याद है जब अंधे लोगों के लिए यूनेस्को द्वारा किए गए प्रथम प्रकाशन की एक अग्रिम प्रति मुझे मुद्रक से प्राप्त हुई थी और तब मेरी अंगुलियां, सुंदर एवं स्पष्ट संप्रतीकों पर फिरने लगीं। यह अंग्रेजी, फ्रांसीसी और स्पेनी भाषा में यूनेस्को पर एक सामान्य पुस्तिका थी जिसमें दृष्टि से विकलांग लोगों ने यूनेस्को के पास जितने प्रश्न भेजे थे उन सभी का उत्तर दिया गया है। यह प्रगति की ओर एक बहुत बड़ा कदम था—और इसके दो साल बाद "यूनेस्को ब्रेल रिव्यू" नामक छमाही पत्रिका का पहला अंक निकला जिसमें यूनेस्को की भिन्न-भिन्न पत्रिकाओं से लेख लिए गए थे।

1979 में यूनेस्को द्वारा मनाए गए बाल वर्ष के अवसर पर छह से 10 वर्ष के सामान्य एवं अंधे बच्चों के लिए 'रेड थ्रेड रिडल्स' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की गई। इस पुस्तक में शब्द पहेलियां दी गई हैं जो कि साधारण मुद्रण और ब्रेल दोनों में ही हैं। चित्रों को उभार कर उन्हें रंगीन बना दिया गया है। ऐसी कक्षा में जहां नेत्रवान और नेत्रहीन दोनों ही विद्यार्थी हैं यह पुस्तक नेत्रवान बच्चों को यह प्रदर्शित करती है कि वस्तुतः ब्रेल लिपि कैसी होती है और इसका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है और नेत्रहीन बच्चों में इस भावना से कि वे अन्य नेत्रवान बच्चों के समकक्ष हैं उनमें और अधिक आत्मविश्वास पैदा करती है।

(पृष्ठ 20 पर जारी)

फ्रेडरिक एच० पोटर अंधे व्यक्ति हैं। वे 'यूनेस्को कूरियर' के ब्रेल संस्करण के प्रबन्ध संपादक हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

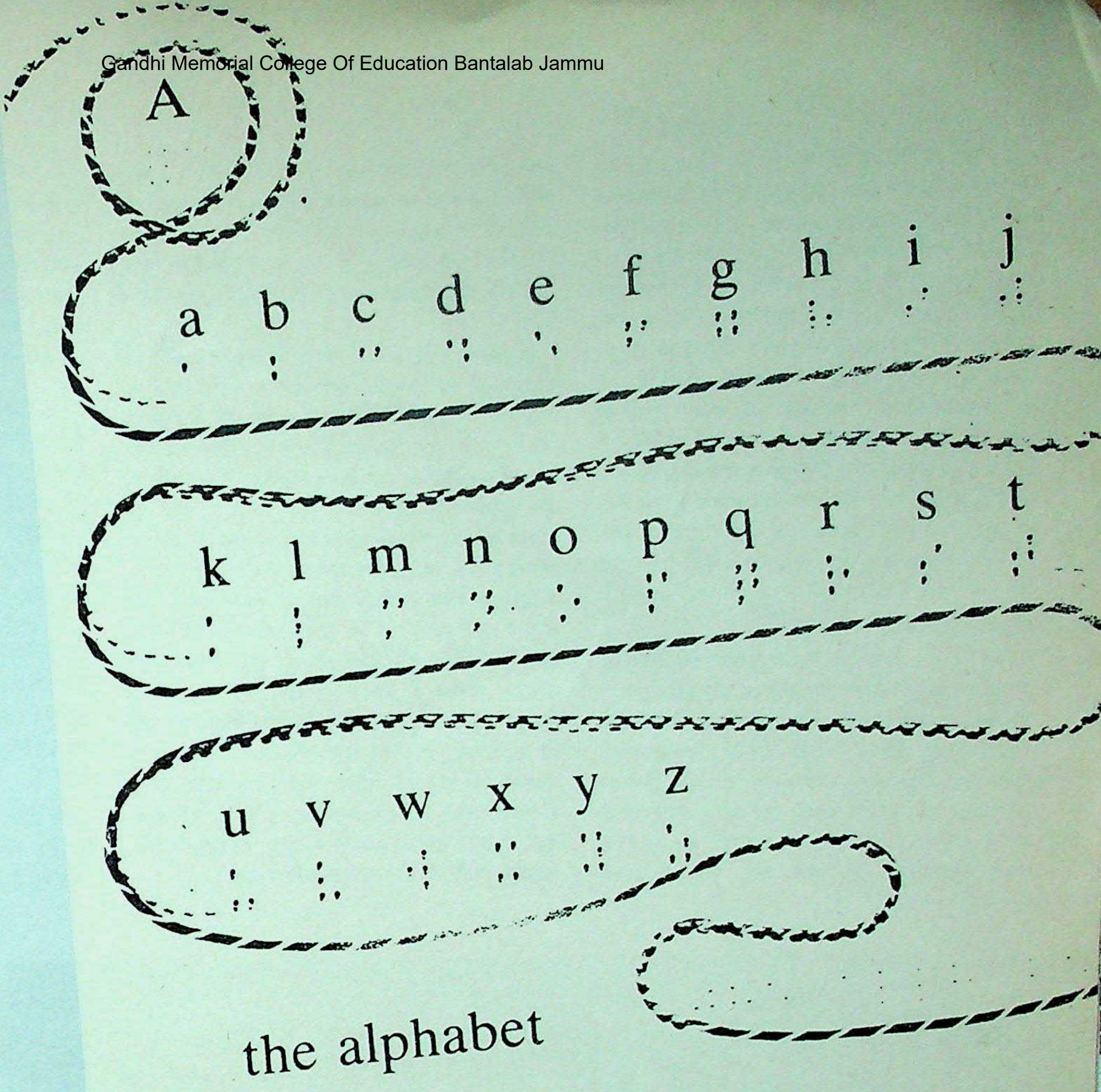

लाल धागे की पहेलियां

ब्रेल कागज पर उभरे छोटे बिन्दुओं का कूट संकेत है जिसे स्पर्श द्वारा पढ़ा जा सकता है। आविष्कारक दृष्टिहीन फ्रांसिसी लुई ब्रेल (1809–1852) के नाम से प्रसिद्ध ब्रेल पद्धति छह बिन्दुओं के 'समूह' पर आधारित है जिन्हें विभिन्न अक्षरों और ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए विभिन्न संयोजनों में व्यवस्थित किया जा सकता है। ऊपर दाएं, 'लाल धागे की पहेलियां' पुस्तिका में दिए गए ब्रेल अक्षर दर्शाए गए हैं। विदग्ध शब्द पहेलियों की इस पुस्तिका के निर्माण में यूनेस्को ने सहायता दी है। वर्जीनिया एलेन जेंसन और पाली एडमेन की इस पुस्तिका की खूबी यह है कि यह नेत्रहीन और नेत्रवान दोनों ही प्रकार के बच्चों के लिए बनाई गई है। पुस्तिका की पाठ्य-सामग्री ब्रेल और स्याही-मुद्रण दोनों में है और इसमें समुद्भृत रंगीन चित्र दिए हुए हैं। दाएं, 'लाल धागे की पहेलियों' से एक पृष्ठ का चित्र हैं। (देखें 'पुस्तक परिचय' —पृष्ठ-38)

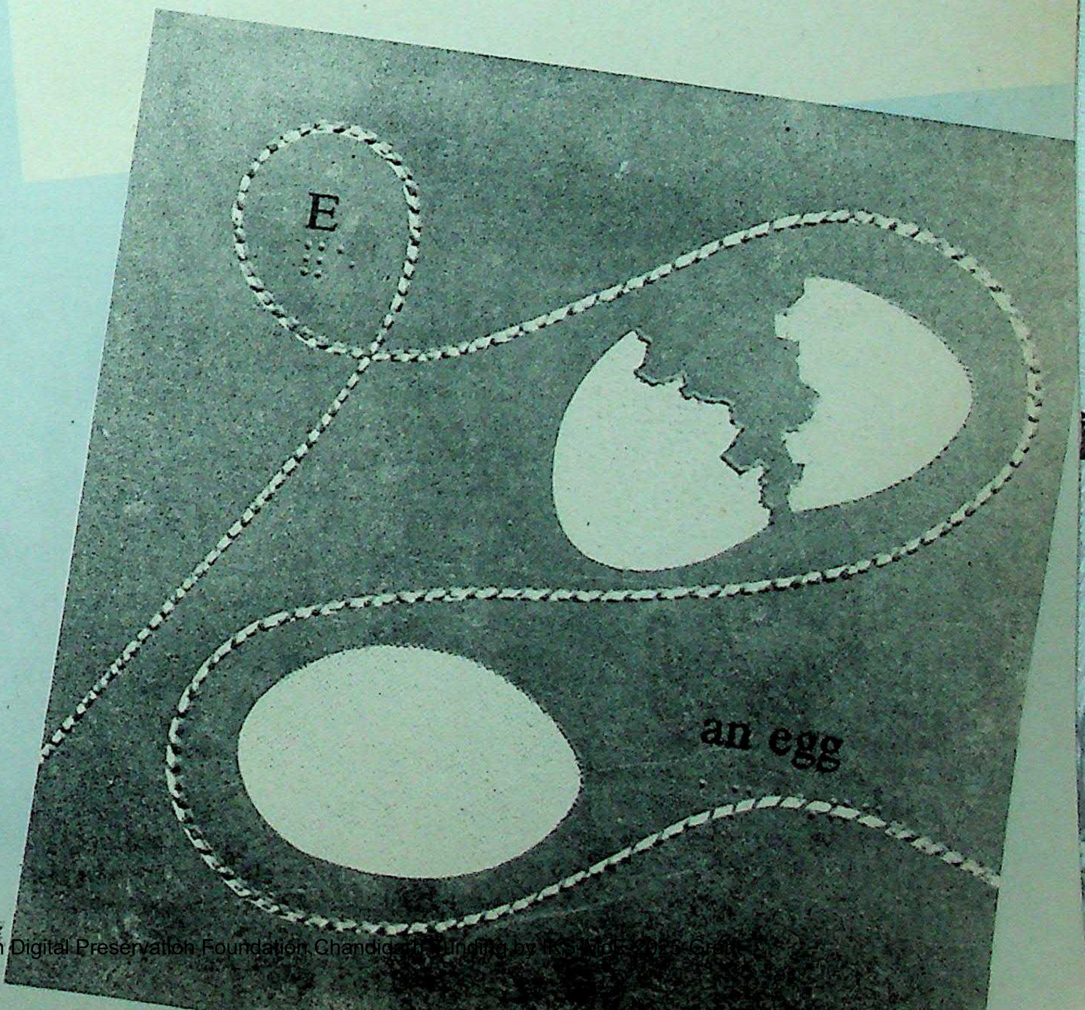

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(पृष्ठ 18 से जारी)

इस बात से अब यह विचारधारा बनती जा रही है कि अंधे बच्चों को उनके लिए खासतौर से स्थापित संस्थाओं में पारंपरिक एवं अलग ढंग से शिक्षा न देकर उनकी शिक्षा साधारण शिक्षा प्रणाली से ही की जाए। ऐसा देखा गया है कि परिरक्षित वातावरण में पारंपरिक ढंग से शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद जब दृष्टि से विकलांग व्यक्ति कोलाहल भरे विश्व में कार्य करने के लिए प्रवेश करते हैं तो इस नए वातावरण के अनुकूल अपने को ढालने में अधिकांश युवा अंध व्यक्तियों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ जाता है। **रेड ब्रेड रिडल्स** पुस्तक उन अंधी माताओं के लिए एक वरदान सिद्ध हुई है जिनके छोटे-छोटे सामान्य बच्चे हैं, क्योंकि प्रायः यही एक ऐसी पुस्तक है जिसे अंधी मां और उसके छोटे-छोटे बच्चे एक साथ बैठकर पढ़ सकते हैं। हालांकि फिलहाल यह पुस्तक अंग्रेजी में ही है पर ऐसी आशा की जाती है कि इस वर्ष के अंत तक अन्य भाषाओं में भी यह पुस्तक प्रकाशित हो जाएगी।

मार्च 1980 में छमाही पत्रिका **यूनेस्को ब्रेल रिव्यू** को त्रैमासिक पत्रिका **यूनेस्को ब्रेल कूरियर** बना दिया गया है (जिसमें अधिकांश सामग्री यूनेस्को कूरियर से ली गई है)। फिलहाल यह पत्रिका अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पेनिश भाषा में निकलती है पर अन्य भाषाओं में भी इसे निकालने की योजना चल रही है। अंग्रेजी और स्पेनिश संस्करणों को ग्रेड 2 (लघुरूप) और ग्रेड 1 (मूलरूप) ब्रेल में क्रमशः मुद्रित किया गया है जबकि फ्रेंच संस्करण मूलरूप और लघुरूप ब्रेल दोनों में ही मुद्रित किया गया है। अतः फ्रांसीसी संस्करण की प्रतियां मंगाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि किस मुद्रण रूप की प्रतियां उन्हें चाहिए। क्योंकि **समेकित रूप** को पढ़ने वाले व्यक्तियों को **संक्षिप्त रूप** में पढ़ना असंभव हो सकता है।

यह निर्णय अभी भी बरकरार है कि ब्रेल पत्रिकाओं को निःशुल्क ही रखा जाएगा। ऐसा करने का कारण यह है कि अधिसंख्य दृष्टिहीन व्यक्ति विकासशील देशों में रहते हैं और प्रायः वे इतने गरीब होते हैं कि उनके लिए ब्रेल प्रकाशन को खरीदना संभव नहीं हो सकता। क्योंकि प्रतिका **यूनेस्को ब्रेल कूरियर** सभी को उपलब्ध हो सकती है अतः यह पत्रिका अंधे व्यक्तियों को साक्षर बनने की एक प्रेरणात्मक सामग्री है जिसे पढ़ने के बाद व्यक्तियों के अंदर और अधिक शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा जागृत हो सकती है और इस तरह वे अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाने के बारे में सोच सकते हैं। क्योंकि पूरे विश्व में इस समय सात करोड़ दृष्टिहीन व्यक्ति हैं जिनमें से इतने कम लोग ही ब्रेल पढ़ सकते हैं कि इस अंतर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष में सरकारों को इस समस्या की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अंधे व्यक्ति अधिक संख्या में निरक्षर होते हैं। इसका कारण यह है कि अधिसंख्य देशों में बजट बनाते समय अंधे व्यक्तियों की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

यूनेस्को ब्रेल कूरियर का प्रकाशन जो कि संयुक्त राष्ट्र तंत्र द्वारा प्रकाशित केवल एक ब्रेल पत्रिका है जिसे पहली बार अंधे व्यक्तियों को उपलब्ध कराया गया है, एक अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका है जिसके संस्करण पच्चीस भाषाओं में प्रकाशित होते हैं और इस तरह यह पत्रिका इस पत्रिका को पढ़ने वाले अंधे व्यक्तियों को **यूनेस्को कूरियर** को पढ़ने वाले करोड़ों पाठकों के समकक्ष ला देती है।

इस पत्रिका में विश्व की समस्याओं के संबंध में यूनेस्को के विचार तथा उन पर उठाए गए कदमों पर, विभिन्न जगहों के लोगों तथा उनके रहन-सहन पर और विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की भौतिक बनावट पर सामान्य रुचि के लेख दिए गए हैं। पत्रिका में विषयों की सामग्री का चुनाव करते समय पाठकों की अभिरुचि का विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है उदाहरणार्थ–संगीत, विज्ञान एवं टेक्नोलाजी में हुई प्रगतियों के उन सभी रूपों को ध्यान में रखा जाता है जो दृष्टिहीन व्यक्तियों को विशेष शिक्षा देने आदि में प्रयुक्त उपकरणों अथवा सेवाओं में कुछ अनुप्रयुक्त हो सकते हैं। लेख बहुत लंबे नहीं होने चाहिए क्योंकि साधारण मुद्रण वाले पृष्ठ को ब्रेल में मुद्रित करने में तीन अथवा चार पृष्ठ लग सकते हैं।

हमें प्राप्त पत्रों से यह ज्ञात होता है कि यह प्रकाशन दृष्टिहीन लोगों के लिए यूनेस्को की एक अति लोकप्रिय उपलब्धि है। अपने पत्र में एक अफ्रीकी युवा व्यक्ति ने

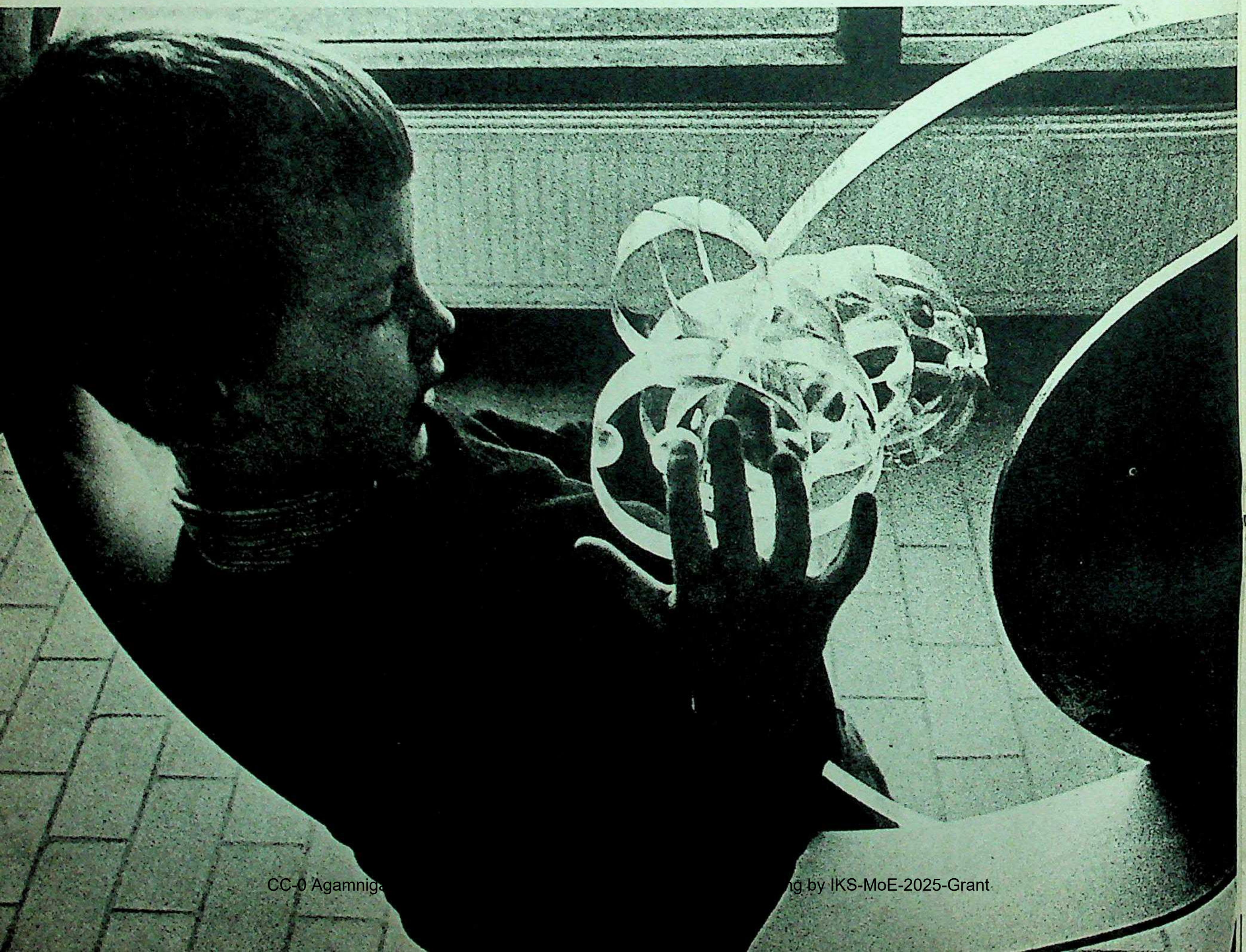

CC-0 Agamniga ... ng by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्रिका के बारे में कहा है कि "हमारे अंधेरे जगत् में यह पत्रिका प्रकाश की एक नई किरण है"। इस पत्रिका को छापने वाले एक मुद्रक ने अपने पत्र में यह लिखा है कि इस कार्य को करने में उसे और उसके स्टाफ को आनन्द की अनुभूति होती है क्योंकि 'ब्रेल में प्रायः प्रकाशित होने वाले लेखों की तुलना में इस पत्रिका में छपने वाले लेख काफी भिन्न होते हैं।'

पिछले तीस सालों से औद्योगिक देशों में लोगों की उम्र बढ़ जाने से अंधे लोगों की संख्या के अनुपात में भी परिवर्तन आया है। अब तो आधे से अधिक लोगों की दृष्टि पचास की उम्र पार कर जाने के बाद समाप्त हो जाती है, यह वह उम्र है जबकि अंगुलियों से छूकर ब्रेल पढ़ने में लोगों को काफी कठिनाई होती है क्योंकि अंगुलियों में उतनी संवेदना नहीं रह जाती जितनी इस काम के लिए अपेक्षित है। इस समस्या के समाधान के लिए भविष्य में एक ऐसी योजना विकसित करने का विचार है जिसमें पत्रिका को कैसेट पर रिकार्ड कर लिया जाए। फिर भी पत्रिका **यूनेस्को ब्रेल कूरियर** का रूप चाहे कुछ भी क्यों न हो यह आशा की जाती है कि यह पत्रिका जानकारी और ज्ञान की उस पिपासा को शांत करने में सहायक बनी रहेगी जो समाज के अन्य सदस्यों की तरह अंधे व्यक्तियों में भी होती है।

□ **फ्रेडरिक एच० पोटर**

फोटो © जो बर्न, पेरिस

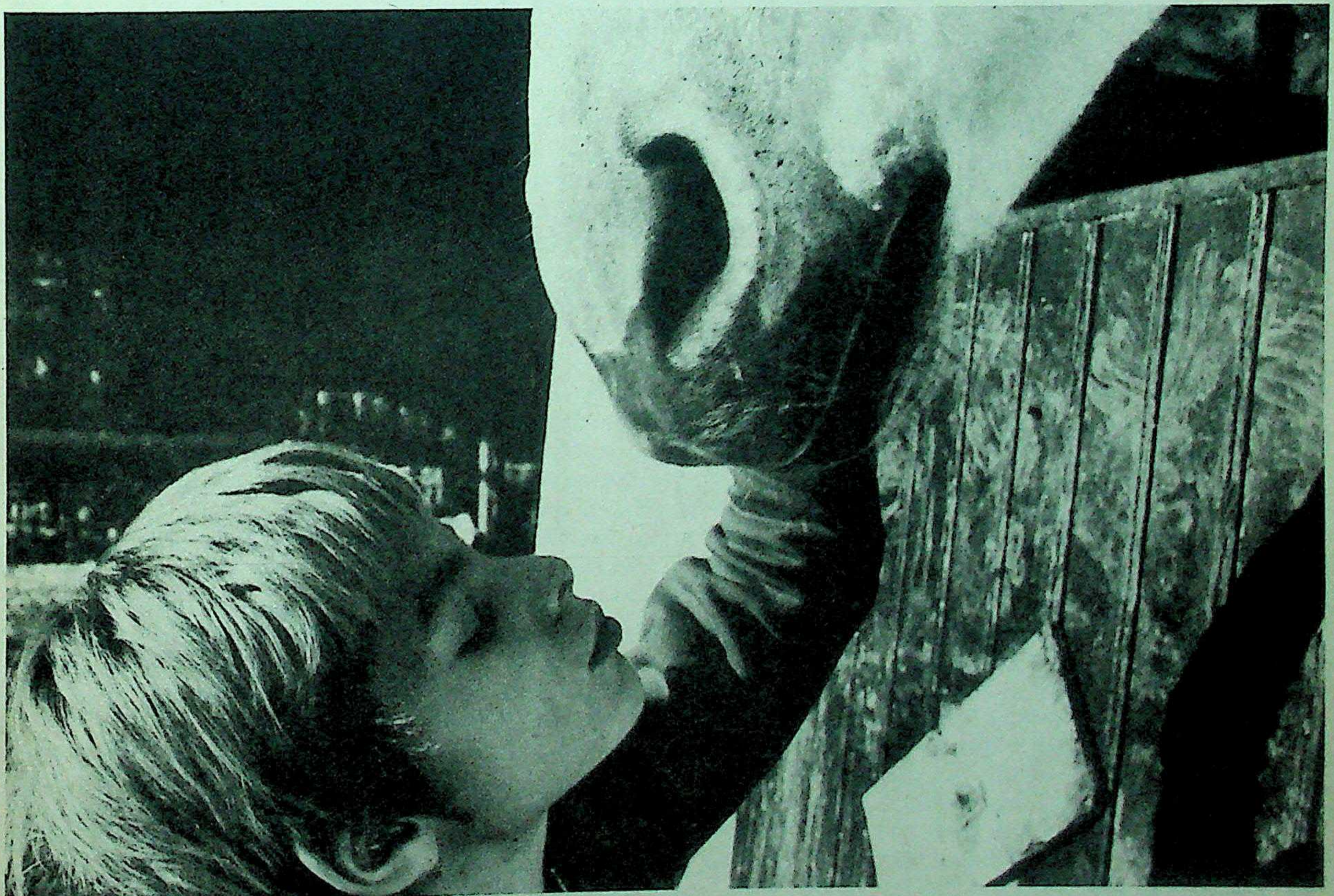

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लुई ब्रेल एक प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व

—सर्ज गुलेमेत

यद्यपि मध्य युग के दौरान फ्रांस में दृष्टिहीन लोगों को कुछेक विशेषाधिकार प्राप्त थे, फिर भी सामान्य रूप से उनकी स्थिति दयनीय थी। उनका मुख्य कार्य भिक्षा मांगना था और सड़कों तथा गली-कूचों में फटे-हालों में नेत्रहीन गरीब पुरुष और महिलाएं एक स्थान से दूसरे स्थान में घूमते रहते थे। अपनी मलिन भावहीन आंखों, अनिश्चित चाल और फटे पुराने तथा गंदे कपड़ों के कारण वे देखने में भयानक लगते थे।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मानवीय प्रवृत्तियां पनपी। वेलेन्टिन हाउ नामक एक युवा सरकारी कर्मचारी, समुदाय में नेत्रहीनों की दशा, उनकी पराश्रिता और हीनता, उनके जीवन की दयनीय परिस्थितियों तथा उनमें आत्म-सम्मान का अभाव—देखकर बहुत विचलित हुआ। सन् 1771 में वह विशेष रूप से मेलों में नेत्रहीनों का शोषण देखकर बहुत अधिक क्रोधित हुआ। मेलों में नेत्रहीनों को गत्ते की ऐनकें पहना दी जातीं और उन्हें टूटे-फूटे साजों पर, जिनमें स्वर लिपियां उलटी लगी होतीं, बेसुरी तानें निकालने के लिए मजबूर किया जाता था। यही देखकर उसने निश्चय किया कि वह अपना जीवन दृष्टिहीनों की दशा को सुधारने में लगाएगा और इस प्रकार वह दृष्टिहीनों का पहला शिक्षक बन गया।

सन् 1784 में उसके स्कूल—द रायल इन्स्टीट्यूशन फॉर द ब्लाइंड—की स्थापना हुई और उसने वर्णमाला के साधारण वर्णों को बहुत बड़े और रीतिबद्ध तरीके से उद्भृत करके नेत्रहीनों को इसके जरिये पढ़ाना शुरू किया। दृष्टिहीनों के लिए ये प्रारंभिक पुस्तकें बहुत कम संख्या में उपलब्ध थीं और ये बोझिल तथा महंगी थीं फिर भी, दृष्टिहीन विद्यार्थी, जिन्हें अभी लिखना नहीं आता था, इस गूढ़ लिपि के वर्णों और शब्दों को समझ लेते थे जिसके फलस्वरूप उनके मन में अत्यधिक ज्ञान पिपासा जागृत हुई। वेलेन्टिन हाउ ने भावी अनुसंधान के लिए एक वातावरण पैदा कर दिया और इस प्रकार इस दिशा में आगे कदम बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

यह कार्य लुई ब्रेल नामक एक असाधारण व्यक्ति द्वारा किया गया जिसने अपनी दृष्टि एक दुर्घटना में खो दी थी। उसका जन्म 4 जनवरी, 1809 में पेरिस के पूर्व भाग में एक छोटे से गांव कूपरे में हुआ था और उसके पिता जीनसाज थे। जैसे ही वह चलने के लायक हुआ, वह अपने दिन, पिता की कार्यशाला में पड़े हुए चमड़े के टुकड़ों से खेलकर बिताने लगा। एक दिन जब वह तीन वर्ष का था तो जिस चाकू से वह खेल रहा था वह उसके हाथ से फिसलकर उसकी [illegible] गया और जब तक वह पांच साल का हुआ, लुई पूर्णतः दृष्टिहीन हो गया।

फिर भी उसके परिवार ने हिम्मत नहीं हारी। वे बच्चे को शिक्षित करने और उसके विकास के लिए हर संभव अवसर प्रदान करना चाहते थे। इस प्रकार लुई को गांव के स्कूल में भेजा गया जहां उसने अपनी जीवन्त बुद्धिमत्ता और अभूतपूर्व स्मरण शक्ति के कारण काफी प्रगति की। निष्क्रिय छात्र और दया का पात्र होने के बजाय उसने अपने नेत्रवान सहयोगियों के साथ अपनी कक्षा के कार्य में सक्रिय भाग लिया। उसके पिता ने लकड़ी के तख्ते पर कीलें ठोक कर वर्ण माला के अक्षर बनाए और उसके जरिए उसे पढ़ना सिखाया।

गांव के स्कूल शिक्षक ने यह निर्णय लिया कि लुई विशेष प्रशिक्षण पाने का पात्र है और इसीलिए उसे 10 वर्ष की उम्र में पेरिस के रायल इंस्टीट्यूशन फार द ब्लाइन्ड में भेजा गया। उस समय स्कूल एक सीलन भरे टूटे-फूटे और बहुत ही अस्वस्थ स्थान में था। और यही कारण है कि वहां के बहुत से दृष्टिहीन, जिसमें लुई ब्रेल भी शामिल था, तपेदिक के शिकार हुए।

यह नया छात्र अद्भुत प्रतिभाशाली था।

सन् 1821 में तोपखाने के भूतपूर्व कैप्टन चार्ल्स-मेरी बारबियर दे ला सेरे ने दृष्टिहीन छात्रों के समक्ष 'ध्वनि' या 'रात्रिलेखन' प्रणाली का प्रदर्शन किया जिसे उसने युद्ध क्षेत्र में अंधेरे में सैनिकों को आपस में संप्रेषण करने के लिए विकसित किया था। यह एक उभरे बिन्दुओं की स्वनिक प्रणाली थी जिसमें विभिन्न ध्वनियों का प्रतिनिधित्व छह बिन्दुओं वाले दो कालमों से किया गया था।

ब्रेल जिसकी उम्र उस समय केवल बारह वर्ष की थी बारबियर की प्रणाली से संतुष्ट नहीं था : उसमें बहुत से बिन्दु थे, वर्तनी की कोई आवश्यकता नहीं थी और गणितीय तथा संगीत स्वरांकन के लिए कोई आधात या प्रतीक नहीं थे। परन्तु इससे उभरे हुए बिन्दुओं के उपयोग के विचार का जन्म हो गया था। इसका विकास ब्रेल की दिमागी सूझबूझ से हुआ। उसने शिक्षा की सीमित प्रणाली की नीरसता से अपने साथी छात्रों को मुक्त कर दिया।

वह नियमित रूप से प्रातःकालीन स्कूल में जाता रहा लेकिन सायंकाल का समय वह दृष्टिहीनों के लिए लिखने-पढ़ने के और अधिक प्रभावी पद्धति के बारे में कार्य करके और उनका परीक्षण करके बिताता था। गर्मियों की छुट्टियां वह परिवार के साथ अपने प्रिय गांव कूपरे में बिताता था। वहां पर ग्रामीण लोग ज्यादातर उसे सड़क के किनारे बैठे मोटे कागज पर 'छेद करते हुए' देखा करते थे।

लुई अभी सोलह वर्ष का भी नहीं था जबकि सन् 1824 के अंत में, उसके भीतर एक प्रतिभाशाली विचार ने जन्म लिया। तीन में से दो समानांतर कालमों में सीमांकित छह उभरे बिन्दुओं की विभिन्न क्रम परिवृत्तियों पर आधारित वर्ण संकेतों (देखें पृष्ट 19) की उसने रचना की।

सभी लोगों के दो कंधे, दो नितंब और दो घुटने होते हैं। इन सभी स्थलों पर एक-एक उभरा हुआ बिन्दु लगाने से तुम्हें लुई ब्रेल के बुनियादी अक्षर के बहुत बड़े आकार का बोध हो जाएगा।

रोमन वर्णमाला के प्रथम दस अक्षरों : ए बी सी डी ई एफ जी एच आई जे, के लिए ये बिन्दु केवल कंधों और नितंबों पर हीं हैं। बाद के दस अक्षर : के एल एम एन ओ पी क्यू आर एस टी, पहले दस अक्षरों की 'अभिरचना' को ही दुहराते हैं, जिनमें बाएं घुटने पर एक अतिरिक्त बिन्दु बना दिया जाता है। अगले पांच अक्षर : यू वी डब्ल्यू एक्स वाई जेड, भी वर्णमाला के प्रथम दस अक्षरों को दुहराते हैं, लेकिन इनमें दोनों घुटनों पर अतिरिक्त बिन्दु बना दिए जाते हैं। और अंत में अंतिम प्रतीक : सीएच जीएच [illegible] डब्ल्यू प्रथम दस के संयोजन को दुहराते हैं और इनमें दाएं घुटने पर अतिरिक्त बिन्दु होते हैं।

कुल मिलाकर इस प्रणाली में 63 क्रम परिवृत्तियां संभव हैं। दो ब्रेल बिन्दुओं के बीच की दूरी 2 या 2.5 मिली मीटर होती है और पाठ्य-सामग्री का बीज लेख वाचन करने के लिए पाठक को अपनी उंगलियों के सिरों को उभरी हुई पंक्ति में फिराना पड़ता है।

सन् 1829 में लुई ब्रेल ने अपनी प्रणाली जिसे उसने विराम चिह्न, गणितीय और संगीत संघात के लिए अतिरिक्त प्रतीक जोड़कर पूरा किया था, प्रस्तुत की और उसकी व्याख्या करते हुए एक छोटी रचना भी प्रकाशित की। उसकी लिपि का अंतिम पाठांतर सन् 1837 में प्रकाशित हुआ।

रायल इंस्टीट्यूशन में जहां अब ब्रेल शिक्षक बन गया था विद्यार्थियों तथा उसके साथियों ने उसके आविष्कार का उत्साह के साथ स्वागत किया और उसकी लिपि तुरंत स्वीकार कर ली गई क्योंकि उद्भृति में रोमन अक्षरों को उत्पन्न करने की शास्त्रीय पद्धति की अपेक्षा यह कहीं अधिक श्रेष्ठ साबित हुई।

लेकिन बारबियर डे ल सेरे युवा आविष्कारक से ईर्ष्या करता था और वह अपने 'ध्वनि लेखन' को स्वीकार कराने के लिए बराबर जोर डालता रहा, जब कि स्कूल के नेत्रवान शिक्षक अब भी उद्भृति में साधारण अक्षरों का समर्थन करते थे और वे दृष्टिहीनों के लिए वर्णमाला के भिन्न संकेत के प्रयोग के संबंध में अनिच्छुक थे। बाद में ब्रेल के स्थान पर उद्भृति लेखन की अन्य प्रणालियों का सुझाव दिया गया जिनमें न्यूयार्क बिन्दु और चंद्र प्रणालियां भी शामिल थीं।

लगातार अस्वस्थता और बहुत अधिक कार्यभार के बावजूद सन् 1818 तक वह भूगोल और बीज गणित पढ़ाता रहा, जिनमें बाद में संगीत भी जुड़ गया, और वह सेंट निकोलस डेस चैम्पस के पेरिस चर्च में आर्गन बजाने वाला बन गया। लुई ब्रेल मान्यता प्राप्त करने और अपनी प्रणाली दूर-दूर तक फैलाने के लिए लगातार संघर्ष करता रहा।

धीरे-धीरे उसकी लिपि समस्त विश्व में अपनायी जाने लगी। इस प्रकार यह विनम्र और दयालु व्यक्ति—प्रत्येक जगह दृष्टिहीन लोगों का हितकारी बन गया। जो कोई भी उससे मिलता उसकी दयालुता की प्रशंसा करता। 6 जनवरी, 1852 को 43 वर्ष की उम्र में 'पेरिस के "इंस्टीट्यूट नेशनल डे देस ज्यून्स एवेगल्स" में उसका देहान्त हो गया।

आज मानव उद्यम के प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान के संप्रेषण के लिए ब्रेल लिपि का प्रयोग किया जाता है। इसे विद्वान और जनसाधारण, दोनों ही, समान रूप से समझ लेते हैं। आजकल साधारण लेखन का ब्रेल में लिप्यंतरण करने के लिए आधुनिक इलेक्ट्रानिकी उपस्कर उपलब्ध है लेकिन लुई ब्रेल का मूल संकेतकी अभी भी उनकी सहायता करती है।

बहुत से देशों में अब दृष्टिहीन बच्चे नेत्रवान विद्यार्थियों के साथ स्कूलों में जाते हैं और उन्हें पाठ्य पुस्तकें, शब्दकोश और अन्य ब्रेल सामग्रियां उपलब्ध करायी जाती हैं। साथ ही, विशिष्ट पुस्तकालय ब्रेल में पुस्तकें और पत्रिकाएं उपलब्ध करते हैं।

फिर भी, असंख्य दृष्टिहीन लोग लुई ब्रेल द्वारा किए गए आविष्कार का लाभ उठाने के अवसर से वंचित हैं। ऐसी आशा की जाती है कि इन पुरुष और महिलाओं के लिए शीघ्र ही शिक्षा और ज्ञान अर्जित करने के साधन जुटाए जाएंगे ताकि वे उपयोगी और उत्पादक जीवन व्यतीत कर सकें और साथ ही अपने समुदायों में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

लुई ब्रेल ने दृष्टिहीन लोगों को मानव के रूप में पुनः प्रतिष्ठा दिलवाई। उसकी बिन्दुओं की वर्णमाला एक ऐसे [illegible] के अंधकार को दूर करता है। □

सर्ज गुलेमेत जो स्वयं अंधे हैं, राष्ट्रीय युवा अंध संस्थान, पेरिस में शिक्षा के निदेशक हैं। वे 1975 से 1978 तक फ्रांसीसी स्वास्थ्य मंत्रालय में शिक्षा निरीक्षक रहे। वे नेत्रहीन तथा अंध-बधिर बालक एवं किशोरों पर विशेष अध्ययन के सह-लेखक हैं और उन्होंने फ्रांस एवं विदेशों में अनेक रेडियो प्रसारणों में भाग लिया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूनेस्को तथा अपंग व्यक्तियों का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष

—निल्स-आइबर सुंदबर्ग

यूनेस्को ने शुरू से ही अपंग बच्चों तथा युवकों की शिक्षा को सुधारने का कार्य किया है। सन् 1966 में एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया गया था जिसका उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र तथा अन्य संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों, तथा—विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन तथा संयुक्त राष्ट्र बाल निधि एवं विकलांग व्यक्तियों के लिए कार्य कर रहे लगभग 40 गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोग बढ़ाना, बहरे, अंधे तथा मानसिक रूप से अशक्त व्यक्तियों की विशेष शिक्षा के संबंध में विश्वव्यापी सर्वेक्षण और अध्ययन करना तथा सदस्य देशों के अनुरोध पर उनको अपंग व्यक्तियों के योजनागत कार्यकलाप एवं उनके अध्यापकों को प्रशिक्षण देने में सहायता करने के लिए विशेषज्ञों तथा परामर्शदाताओं की सेवाएं उपलब्ध कराना था। यूनेस्को विशिष्ट क्षेत्रों में व्यक्तियों को प्रशिक्षण देने के लिए अध्येतावृत्तियां भी प्रदान करता है, विकलांग व्यक्तियों के स्कूलों तथा केन्द्रों को उपस्कर देता है और सभाएं तथा प्रशिक्षण संगोष्ठियां आयोजित करने में मदद करता है। यूनेस्को विशेष अध्ययनों तथा सभाओं के माध्यम से विकलांग व्यक्तियों के शिक्षा विकास हेतु सदस्य राज्यों के लिए निर्देशक सिद्धांत तैयार कर रहा है। यूनेस्को ने अपना विशेष शिक्षा कार्यक्रम 1968 में शुरू किया था और तभी से उसने अल्जीरिया से लेकर जेरे तक विश्व में लगभग 80 देशों की 200 से भी अधिक परियोजनाओं को सहायता प्रदान की है।

यूनेस्को ने बधिर खिलाड़ियों के लिए थियेटर कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन करने में भी मदद दी है, ब्रेल लिपि के मानकीकरण पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशित की है और एक ऐसी योजना बनायी है जिसके अधीन, विशेष रूप से विकासशील देशों के विकलांग स्कूल और संस्थाएं, विदेशों से विशेष साज-सामान और सामग्री खरीद सकती हैं।

इस क्षेत्र में कार्यवाही

—अफ्रीका के अंग्रेजी भाषी देशों के विकलांगों को शिक्षा संबंधी सुविधाएं जुटाने के लिए यूनेस्को 1981 में एक क्षेत्रीय योजना आरंभ करने के विषय में विचार कर रहा है। इस परियोजना के लिए स्वीडिश सरकार 780,000 डालर का अनुदान देगी और इसके अधीन संबंधित क्षेत्र में उच्च स्तर के निर्णायकों तथा विशेष शिक्षा कार्यक्रमों के प्रशिक्षण प्रशासकों के लिए एक तथा विकलांगों के अध्यापकों के लिए चार राष्ट्रीय प्रशिक्षण संगोष्ठियां आयोजित की जाएंगी। इसके अतिरिक्त विदेश अध्ययन के लिए अध्येतावृत्तियां और इस क्षेत्र के देशों के लिए परामर्श सेवाएं भी इस योजना के अधीन प्रदान की जाएंगी।

—विकलांग बच्चों और युवकों के लिए बहरेन पुनर्वास केंद्र ने अप्रैल 1980 में कार्य करना शुरू किया है। इसमें भी अध्यापक प्रशिक्षण पर बल दिया जायेगा। यूनेस्को/संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से स्थापित इस केन्द्र के तीन एकक हैं जो मानसिक रूप से मंद तथा बधिरों को शिक्षित करने, रोजगार प्रदान करने, शिक्षा और प्रशिक्षण देने से संबंधित हैं। इस केन्द्र को अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और संयुक्त राष्ट्र तकनीकी सहयोग के कार्यालय से भी सहायता मिलती है।

—सीरिया में एलेपो और दमिश्क के बधिर संस्थानों के कार्यों का भी विस्तार किया जायेगा और यूनेस्को/संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की मदद से हौम्स और लताकिया में दो नये संस्थान स्थापित किये जायेंगे।

—अपंग व्यक्तियों के अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष के दौरान अपंग व्यक्तियों के लिए शिक्षा संबंधी सुविधाओं के विकास पर यूनेस्को सदस्य देशों को सलाह देने के लिए अफ्रीका, एशिया, अरब राज्यों और लातीनी अमरीका स्थित यूनेस्को के चार क्षेत्रीय शिक्षा कार्यालयों में विशेष शिक्षा परामर्शदाता नियुक्त किये जाएंगे। इन क्षेत्रों में चलते-फिरते दल विकलांगों के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण संगोष्ठियों का आयोजन करेंगे।

—यूनेस्को के 'अनुसंधान और मानव आवश्यकताएं' कार्यक्रम के अधीन अल्जीरिया, इटली, पुर्तगाल और स्पेन में बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास की आवश्यकताएं, नामक एक बहुविद्याशाखीय परियोजना कार्यान्वित की जाएगी। इस परियोजना का लक्ष्य शिशुओं, छोटे बच्चों तथा दूध पिलाने वाली महिलाओं के पोषण, जैविक, पर्यावरणीय तथा अन्य आवश्यकताओं का पता लगाना और उनका निर्धारण करना एवं बीमारी और मानसिक तथा शारीरिक कमियों को दूर करने के लिए कारगर उपायों को बढ़ावा देना है। अनुसंधान राष्ट्रीय दल करेंगे, जिसमें जीव-विज्ञानी, स्नायु-विज्ञानी और समाज-विज्ञानी भी शामिल होंगे। इस कार्य का समन्वय संयुक्त राष्ट्र विशेषीकृत एजेंसियां यथा, खाद्य तथा कृषि संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, गैर-सरकारी संस्थान जैसे अंतर्राष्ट्रीय सेल अनुसंधान संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान संगठन, आई० यू० एन० एस० के सहयोग से यूनेस्को करेगा।

सांस्कृतिक घटनाएं

—सांस्कृतिक जीवन में अपंग व्यक्तियों की सहभागिता को बढ़ावा देने और उनकी सर्जनात्मक योग्यताओं के विकास के लिए जिन अनेक कार्यकलापों की योजना बनायी गई है, उनमें थियेटर, नृत्य, संगीत कार्यशालाएं और विशेषज्ञ कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण संगोष्ठियां शामिल होंगी। विकलांग संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक संगठनों के साथ जिन विषयों पर विचार-विमर्श किया जा रहा है वे है—विकलांग व्यक्तियों के लिए संगीतचिकित्सा पर कार्यशाला, बधिर कला और संस्कृति पर प्रदर्शनी, तथा उक्त विषय पर साहित्यिक प्रतियोगिता, विकलांग व्यक्तियों के समक्ष समस्याएं।

—यूरोप के कलाकारों द्वारा प्रायोजित अपंग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के लिए एक पोस्टर प्रदर्शनी यूनेस्को मुख्यालय में 1981 के प्रारंभ में होगी जिसमें वे तस्वीरें भी प्रदर्शित की जायेंगी जिनमें विश्व भर के देशों के सामुदायिक जीवन में विकलांग व्यक्तियों की सहभागिता दिखाई गई होगी।

—स्थानीय तथा क्षेत्रीय स्तरों पर एक विशेष कार्य शृंखला की योजना भी 77 देशों में चल रहे 2500 यूनेस्को क्लबों ने तैयार की है।

सम्मेलन

—स्पेन में नवम्बर 1981 में एक बृहद् अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन होगा जिसमें सार्वभौमिक अंतर्विद्याशाखाओं के संदर्भ में इस बात की जांच की जाएगी कि विकलांग व्यक्तियों की समस्याओं को हल करने की दिशा में शिक्षा का क्या योगदान हो सकता है। स्पेन की महामहिम रानी, जिन्होंने हमेशा विकलांग व्यक्तियों की समस्याओं में विशेष रुचि ली है, के संरक्षण में हो रहे इस सम्मेलन में अपंग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष की कार्यपालक सचिव श्रीमती जाला एन' कंजा भी भाग लेंगी। इस सम्मेलन का आयोजन संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों और अंतर्राष्ट्रीय विकलांग संगठनों के परामर्श से किया जा रहा है।

—छोटे विकलांग बच्चों की शिक्षा में माता-पिता तथा पूर्व स्कूल प्रशिक्षण की भूमिका पर संयुक्त राज्य अमरीका के शिक्षा विभाग के सहयोग से आयोजित एक संगोष्ठी।

—सामान्य तथा व्यावसायिक शिक्षा में बहुविधि और गंभीर रूप से विकलांग लोगों की एकता पर यूनेस्को और जर्मन संघीय गणराज्य के संयुक्त प्रयोजन में विशेषज्ञों की एक बैठक।

—यदि बाल साहित्य में अभिव्यक्त विकलांग व्यक्तियों के प्रति नवीन अभिवृत्तियों पर संगोष्ठी आयोजित की जाए तो वह विकलांग बच्चों के दैनिक जीवन की एकता के लिए सहायक सिद्ध हो सकती है। यह संगोष्ठी बोलोना बाल पुस्तक मेले के अवसर पर मार्च 1981 में आयोजित की जाएगी और इसमें विकलांग शिक्षा और उपबोधन के प्रकाशक और विशेषज्ञ भाग लेंगे।

—देखने-सुनने की दृष्टि से विकलांग व्यक्तियों के लिए सामग्री के कापीराइट के अनुप्रयोग से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को समाप्त करने के उपायोग पर परिचर्चा। विश्व अंध कल्याण परिषद् तथा विश्वबधिर संघ द्वारा तैयार की गई उक्त सामग्री के उत्पादन तथा प्रसार संबंधी अध्ययनों की जांच सार्वभौमिक कापीराइट अभिसमय के प्रशासनिक निकाय, जिनका सचिवालयीन कार्य यूनेस्को करता है, तथा अन्य प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय—बर्न संघ करेगा।

सहकार्य कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति या व्यक्ति समूह विशेष 'यूनस चेक' (यूनेस्को द्वारा जारी किया गया एक प्रकार का अंतर्राष्ट्रीय मनीआर्डर) खरीद सकते हैं और विकासशील देशों में विकलांग व्यक्तियों की सहायता के लिए छोटे पैमाने में ही सही, योगदान कर सकते हैं।

1978-79 में इथोपिया, घाना, हैती, लेबनान, मैडागास्कर, मलेशिया तथा पेरु में विशेष शिक्षा योजनाओं के लिए उक्त चैकों के माध्यम से 1,30,000 से भी अधिक डालर का दान दिया गया था जब कि विश्व अंध कल्याण परिषद को उसके निरोधक कार्यक्रमों तथा तृतीय विश्व अर्थात् अविकसित देशों में अंध विद्यालयों के लिए अतिआवश्यक उपस्कर खरीदने हेतु 46,000 डालर दिए गए थे।

सहकार्य योजना के अधीन एक सचित्र पुस्तिका निकाली जा रही है जिसमें अफ्रीका और अरब देशों, एशिया और लातीनी अमरीका के विकलांग स्कूलों तथा केन्द्रों के कार्यकलाप तथा जरूरतों की रूपरेखा दी जाती है। विशेष आवश्यकताएं इस प्रकार हैं : अंधतानिवारण के लिए उपचार हेतु निधियां तथा अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों और ब्रेल टाइपराइटरों, बधिरों के लिए श्रवण-साधनों, शिक्षात्मक खिलौनों, मृद्भांडों के लिए उपस्कर तथा बढ़ई कर्मशालाओं के लिए पैसा जुटाना।

अपंग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के लिए ये उपर्युक्त कुछ योजनाएं हैं। जैसे ही विकलांग व्यक्तियों की शिक्षा के संबंध में नवीन पहल तथा कार्यकलाप किए जाएंगे उक्त संगठन अपंग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष तथा आने वाले वर्षों के दौरान उनको सहायता प्रदान करता रहेगा। □

स्वीडन के निल्स-आइबर सुंदबर्ग ने प्रारंभ से ही अर्थात् 1968 से यूनेस्को द्वारा चलाए गए विकलांग बच्चों और युवा व्यक्तियों के विशेष शिक्षा कार्यक्रम का निर्देशन किया है। स्टॉकहोम के भूतपूर्व विशेष शिक्षा निदेशक और स्टॉकहोम स्कूल आफ एजूकेशन के भूतपूर्व लेक्चरर रहे हैं। अध्यापक प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम योजना में कार्यरत होने के साथ-साथ विकलांगों की विशेष शिक्षा के प्रश्नों से संबंधित स्वीडन के राष्ट्रीय शिक्षा बोर्ड में नौ साल तक सलाहकार अधिकारी के पद पर ये काम कर चुके हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 ... Preservation Foundation, Chandigarh. Funding ... MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपंगता और विकासोन्मुख संसार

— नार्मन एक्टन

पैंसठ देशों में अपंग व्यक्तियों की मदद करने वाले 105 सदस्य संगठनों की अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सी, रिहेबिलिटेशन इंटरनेशनल (अंतर्राष्ट्रीय पुनर्वास) द्वारा 1968 में किए गए एक सर्वेक्षण से जो प्राक्कलन सामने आए वे अब सर्वविदित हो गए हैं। इन प्राक्कलनों के अनुसार संसार में 45 करोड़ व्यक्ति विशेष अपंगता से ग्रस्त थे और इस संख्या में प्रति वर्ष लगभग 30 लाख की वृद्धि हो रही थी। अन्य संस्थाओं द्वारा, जिनमें विश्व स्वास्थ्य संगठन भी शामिल था, की गई परवर्ती गणनाओं ने भी यह सिद्ध किया कि कुल संख्या संभवतः प्रारंभिक प्राक्कलन के आस-पास ही है। यदि इस संख्या में वृद्धि अनुमानित दर से होती रही है तो आज अपंगों की कुल संख्या लगभग 50 करोड़ है। अतएव यह माना जा सकता है कि किसी भी आबादी के कम से कम दस प्रतिशत लोग ऐसी पर्याप्त प्रभावकारी शारीरिक, संवेदी अथवा मानसिक अपंगता से, जन्म से अथवा कालांतर में ग्रस्त हो सकते हैं जो उन्हें अपने समुदायों में अपनी ही आयु के सामान्य स्त्री-पुरुषों द्वारा अपेक्षित व्यवहार को पूरी तरह करने में बाधक होती है।

विकासोन्मुख क्षेत्रों में जो वस्तुस्थिति है उसकी जानकारी बहुत ही कम सही है। यह संभाव्य है कि वहां आघटन की दर अपेक्षाकृत अधिक हो। अधिक विकसित क्षेत्रों में जहां कुपोषण और दोषपूर्ण प्रसवकालीन देखभाल से पोलियो और रोहे जैसी व्याधियों के कारण होने वाली क्षति की मात्रा में कमी हुई है वहां मोटर-कारों, औद्योगीकरण प्रदूषण, आयु में वृद्धि, शर्करायुक्त तथा वसायुक्त आहारों और अन्य वरदानों के कारण उसमें उतनी ही वृद्धि भी हुई है। तथापि यह संभावना है कि औद्योगीकृत देशों में हम अपंगता के जिन अनुपातों का दावा करने की क्षमता रखते हैं उनसे अपेक्षाकृत कम विकसित क्षेत्रों में परिस्थितियां—कुपोषण, अपर्याप्त स्वच्छता, स्थानिक व जानपदिक अशक्तकारी रोग, प्रसवकालीन दूषित पद्धतियां, संक्रमण के अपर्याप्त उपचार—उससे भी अधिक मात्रा में अपंगता उत्पन्न कर रही हों।

यदि इस धारणा को संसार के विकासोन्मुख क्षेत्रों पर लागू किया जाए कि हर आबादी के दस लोगों में से कम से कम एक व्यक्ति के जन्मजात अथवा कालांतर में अपंग होने की संभावना है, तो इसका अर्थ यह है कि उन देशों में कम से कम 30 करोड़, और संभवतः इससे भी अधिक अपंग व्यक्ति हैं। ये वे स्थान हैं जहां के लोगों को संसार में सबसे कम सुविधा प्राप्त है। ये वे लोग हैं जिनके लिए निर्धनता, भूख, अज्ञानता, बीमारी, दुर्दशा और निराशा ही जीवन की परिस्थितियां हैं। इन लोगों में से अधिकांश लोग उन बीस लाख देहातों-गांवों में रहते हैं जहां के निवासी आधुनिक समाज के संसाधनों तथा क्षमताओं का नगण्य अथवा जरा भी लाभ उठाए बिना बड़ी मुश्किल से परंपरागत अस्तित्व बनाए हुए हैं अथवा उन विस्तृत और घिनौनी गंदी बस्तियों में रहते हैं जो अनेक प्रमुख महानगरों के भीतर और चारों ओर विकसित हो रही हैं।

प्रायः इन भूखे गांवों और इन पीड़ाग्रस्त गंदी बस्तियों के लोगों की अधिकांशतः बुनियादी स्वास्थ्य तथा सामाजिक सेवाओं तक न तो पहुंच होती है न ही उन्हें इनकी जानकारी होती है। वे प्राथमिक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुविधाओं से वंचित रहते हैं। उनका भोजन न्यूनतम पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने वाला नहीं होता, स्वच्छता की सर्वथा बुनियादी आवश्यकताओं की न तो उन्हें जानकारी होती है और न ही उन पर अमल किया जाता है। क्षतियों के सभी प्रमुख कारण—माता और बच्चों का कुपोषण, जन्मजात दोष, बीमारियों तथा दुर्घटनाओं का प्रभाव—सार्वभौमिक हैं और जो लोग क्षतिग्रस्त हो जाते हैं उनकी मदद के लिए आवश्यक कोई भी ज्ञान कौशल अथवा संसाधन कारगर ढंग से विद्यमान नहीं हैं।

जब पुनर्वास कार्यक्रमों को अमल में लाया जाता है, जैसा कि विकासोन्मुख देशों के अनेक शहरों में होता रहता है, तब भी उनकी सेवाएं इन लोगों तक—ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी गंदी बस्तियों के निवासियों तक—नहीं पहुंचतीं। तय की जाने वाली रास्ते की दूरियां, यातायात के खर्चे, पुनर्वास और उससे संबद्ध देखभाल के खर्चे, परंपराएं, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं ये सब इनमें रुकावटें होती हैं। यदि ये रुकावटें न होतीं तो भी यह मूलभूत तथ्य है कि जो भी सेवाएं विद्यमान हैं वे थोड़े से अपंग लोगों से अधिक की सेवा करने में असमर्थ हैं।

संयुक्त राष्ट्र बाल निधि (यूनिसेफ) की सहायता से रिहेबिलिटेशन इंटरनेशनल द्वारा किए जा रहे बाधाग्रस्त बच्चों की स्थिति विषयक अध्ययन के फलस्वरूप मैं कतिपय ऐसे सामान्य तथ्य प्रस्तुत कर पा रहा हूं जिनके विषय में मेरा यह विश्वास है कि वे ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले अधिकांश लोगों के लिए मान्य होंगे।

प्रथम तथ्य का संबंध अपंगता और निर्धनता दोनों के भयानक परिणामों से है। अपंगता और निर्धनता दोनों में से कोई भी एक दूसरे का कारण हो सकती है, और दोनों के एक साथ होने से उनमें अपंग लोगों के जीवन को नष्ट करने की जबरदस्त क्षमता होती है और वे परिवारों के लिए असहनीय बोझ बन जाते हैं।

अभी हमें इन दो शक्तियों के बीच अन्योन्य-[illegible] से इनके आर्थिक आधार का विध्वंस अनुपचारित क्षतिग्रस्तता के साथ किस आवृत्ति में आरंभ होता है अथवा त्वरित होता है, सामाजिक और आर्थिक बंधन किस हद तक क्षतिग्रस्तता के और उसके शीघ्र ही स्थायी अपंगता के मूलभूत कारण हैं—की पूरी अधिकारिक जानकारी नहीं है। अभी तक हम क्षतिग्रस्तता की रोकथाम करने वाली और अपंग व्यक्तियों का पुनर्वास करने वाली सेवाओं को आर्थिक और सामाजिक विकास के बुनियादी घटकों के रूप में नहीं सोचते क्योंकि उन गांवों की वास्तविक स्थिति से अभी हमारा सामना नहीं हुआ है और न ही 'बेरियोस' और 'फेवेलास' से।

दूसरा तथ्य हम यह पाते हैं कि जब समुदाय के विकास में सहायता देने वाले कार्यक्रम समुदाय तक पहुंचते हैं तो जो परिवार निर्धनता तथा अपंगता दोनों के बोझ से लदे हुए हैं उन परिवारों तक ये हितलाभ सबसे बाद में और न्यूनतम मात्रा में मिल पाते हैं। आमतौर पर इसका कारण यह है कि जिस परिवार का कोई सदस्य विकलांग होता है उसे सामुदायिक जीवन तथा संसाधनों की मुख्य धारा से कुछ हद तक बहिष्कृत कर दिया गया होता है। परिवार में भी प्रायः अपंग बालक को बेहतर भोजन, शिक्षा, चिकित्सीय देखभाल, सामाजिक व बौद्धिक प्रोत्साहन के अवसर से वंचित रखा जाता है, तब भी जब कि ये सुविधाएं उसके अन्य बहन-भाइयों को उपलब्ध होती हैं।

तीसरा और जो कुछ मैं कह रहा हूं उस सबसे प्रत्यक्षतः संबद्ध तथ्य यह है कि अपंगता के विषय में, उसके कारणों और परिणामों के बारे में और इनके लिए हम क्या कर सकते हैं इस विषय में सही-सही जानकारी का सर्वथा अभाव है; और मिथ्या जानकारी, पूर्वाग्रह, अंधविश्वास और भय का भी उतना ही विस्मयकारी भंडार भरा पड़ा है। अपंगता की समस्या उत्पन्न होने पर परिवार की अपर्याप्त प्रतिक्रिया में यह एक मुख्य कारण है, अपंगता का शिकार होने वाले व्यक्तियों और परिवारों को समाज से बहिष्कृत करने में भी यह एक मूलभूत कारण है, यह ऐसी संस्थाओं में विद्यमान है जो सहायक हो सकती है किंतु नहीं है जैसे स्वास्थ्य केंद्र, विद्यालय, धार्मिक समूह, यह सरकार के सभी सोपानकों—गांव के मुखिया से लेकर स्वास्थ्य, शिक्षा, ▶

नार्मन एक्टन रिहेबीलिटेशन इंटरनेशनल के महासचिव हैं। यह अपंग व्यक्तियों की सेवा के लिए दुनिया के संगठनों का सबसे बड़ा संघ है। वे विगलांगों में रुचि लेने वाले विश्व संगठन परिषद के अध्यक्ष हैं जो अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों का समन्वय-ग्रुप है। ये अंतर्राष्ट्रीय अपंग खेलकूद संगठन के संस्थापक अध्यक्ष हैं। वे संयुक्त राष्ट्र यूनेस्को तथा यूनीसेफ में अपंगों की समस्याओं के परामर्शदाता रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपंगता का दोहरा स्वरूप

संसार के औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों में अपंगता की स्थिति का अनुपात बिल्कुल वैसा ही है जैसा विकासोन्मुख संसार में है किंतु समस्या का स्वरूप भिन्न है। इन देशों में किसी प्रकार के रोहे, ऑंकोसर्सियता अथवा अत्यधिक मात्रा में कुपोषण की समस्या नहीं है किंतु शराब की लत तथा मादक द्रव्यों के व्यसन बढ़ते जा रहे हैं और सड़क दुर्घटनाओं का तथा काम के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं के—जो औद्योगिक समाज की विशेष देन हैं—शिकार होने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है। अनुमान है कि मद्य अथवा मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के फलस्वरूप यूरोप में लगभग 4 करोड़ व्यक्ति अपंग हो गए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जिन 16 देशों में सर्वेक्षण किए हैं उनमें से 14 में आबादी के दो प्रतिशत से अधिक व्यक्ति मद्यव्यसनी हैं। उदाहरणार्थ, फ्रांस में आबादी के 4 प्रतिशत व्यक्ति मद्यव्यसनी हैं और 9 प्रतिशत व्यक्ति अत्यधिक मद्यपान करते हैं। यह उल्लेखनीय है कि अतिमद्यता अनेक मनोरोग जन्य विकारों के साथ-साथ सड़कों पर तथा काम के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं का कारण है।

हृद्वाहिका और प्रमस्तिष्क वाहिका से संबद्ध रोग जिनके अधिकांश अपंगकारी परिणाम होते हैं, विशेष रूप से उन लोगों में व्यापक हैं जो औद्योगिक रूप से विकसित संसार की भाग-दौड़ में लगे रहते हैं। प्रतिवर्ष, केवल यूरोप में ही, प्रति हजार व्यक्तियों में 2.2 व्यक्ति अर्थात् 9,00,000 व्यक्ति 65 वर्ष से कम आयु में दिल के दौरे (हृत्पेशी रोधगतितांश) का शिकार होते हैं। इनमें से अनुमानित एक तिहाई दस वर्ष और जीवित रह सकते हैं किंतु वे सक्रिय जीवन में बहुत कम भाग ले सकेंगे। इसका अभिप्राय यह है कि लगभग 30 लाख व्यक्ति न्यूनाधिक मात्रा में अपंग हो जाएंगे। अपंगता का यह कारण विकासोन्मुख देशों में कहीं कम मात्रा में व्याप्त है।

प्रसवकालीन दुर्घटनाओं के कारण होने वाले (प्रतिवर्ष लगभग 12 करोड़ बच्चे जन्म लेते हैं) अनेक रोग सभी देशों में पाए जाते हैं किंतु विकासोन्मुख देशों में ये सबसे अधिक होते हैं। ऐसा गर्भावस्था तथा प्रसव के दौरान अपर्याप्त चिकित्सा सम्बन्धी देखभाल के कारण ही नहीं होता अपितु इसका कारण यह है कि प्रतिवर्ष पैदा होने वाले कुछ बच्चों में से 75 प्रतिशत बच्चे विकासोन्मुख देशों में जन्म लेते हैं जहां प्रसवकालीन संकट भी विकसित देशों की तुलना में कई गुणा अधिक है। इसके अतिरिक्त उदाहरणार्थ भारत और श्रीलंका में 35 प्रतिशत नवजात शिशुओं का वजन 2500 ग्राम से कम होता है जब कि यूरोप में इतने कम वजन वाले बच्चों की संख्या 6 और 8 प्रतिशत के बीच में होती है।

गर्भावस्था तथा जीवन के प्रारम्भिक महीनों के दौरान पोषण का अत्यधिक महत्व होता है, तथापि लगभग 80 करोड़ व्यक्ति आज भूखे रहते हैं और अन्य 80 करोड़ पौष्टिक आहार न मिलने के कारण कुपोषण का शिकार हैं। 1978 में पांच वर्ष से कम आयु के कम से कम 2 करोड़ बच्चे जीवित रहने के लिए अनिवार्य न्यूनतम आवश्यकताओं से वंचित रहने के कारण कालग्रस्त हो गए।

सर्वाधिक विकसित देशों में भी मानसिक रूप से पिछड़े हुए और प्रेरक हीनताओं से ग्रस्त

© Preservat... d by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यक्तियों में से 40 प्रतिशत की अपंगता का कारण प्रसवकालीन दोष होता है। सर्वाधिक सामान्य कारण है अनॉक्सिता (आक्सीजन का अभाव अथवा न्यूनता)।

विविध जन्मजात दोषों के निर्धारण में मां की आयु भी एक अन्य महत्वपूर्ण कारक होता है। उदाहरणार्थ 36 वर्ष की आयु के पश्चात् मंगोल बच्चे को जन्म देने का खतरा चरधातांकी रूप में बढ़ जाता है। सामान्य समय से पूर्व हुये जन्म को रोकने से भी अपंग व्यक्तियों की संख्या को कम किया जा सकता है।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति को इन समस्याओं पर चिंता प्रकट करनी चाहिए और इस विषय में नवीनतम जानकारी व्यापक रूप से उपलब्ध कराई जानी चाहिए, क्योंकि प्रत्येक देश में, इस संबंध में कथनी और करनी में अंतर व्यापक और असहनीय है। प्रायः सभी हितलाभों से केवल संघ्रात वर्ग ही लाभान्वित होता है।

फ्रेडरिको मेयर

विकलांगों के लिए परिवार की समझ और सहायता अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। केमरुन के उत्तर में केले में पिछले दस वर्षों से परिवार केंद्र ऐसे पाठ्यक्रम चला रहा है जिनसे विकलांग बच्चों के माता-पिता को यह शिक्षा दी जाती है कि वे अपने विकलांग बच्चे के साथ किस प्रकार बेहतर ढंग से अपना अनुकूलन करें और अपने समुदाय के क्रियाकलापों में पूर्णतः भाग लेते हुए सामान्य जीवन बिता सकें। सामने के पृष्ठ पर एक माता-पिता को अपने विकलांग बच्चे को खड़े होना और चलना सिखाते हुए दिखाया गया है। दाएं, बैसाखियों पर चलना सीखते हुए बच्चा।

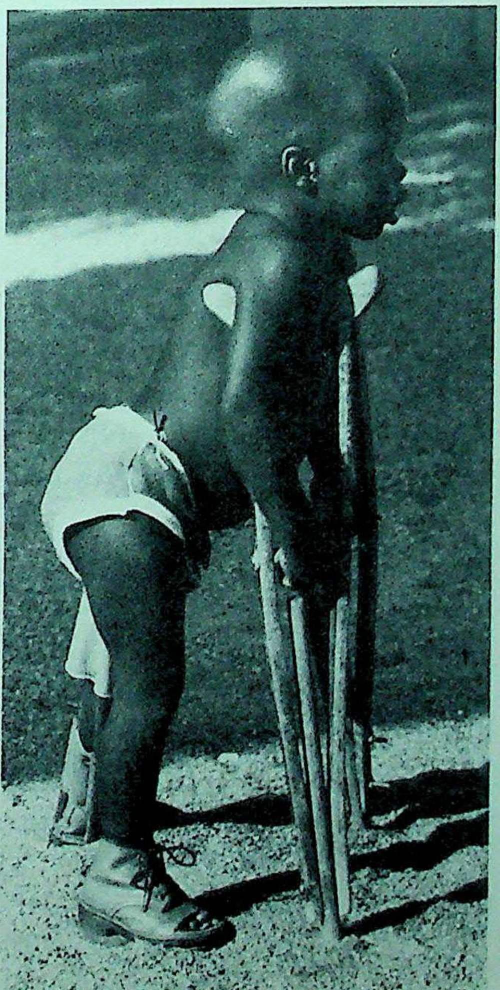

कल्याण, श्रम समुदाय, विकास, योजना और अन्य सभी विभागों के मंत्रियों तक में व्याप्त है; और यह उन अंतर्राष्ट्रीय तथा अन्य संगठनों के प्रतिनिधियों में स्थानिक रूप से विद्यमान है जो विकास की प्रक्रियाओं तथा प्राथमिकताओं के विषय में परामर्श दे रहे हैं तथा अंतर्राष्ट्रीय सहायता प्रदान कर रहे हैं। जानकारी और समझ बूझ के इस अभाव से तथा जिस प्रकार यह अभाव संसार भर में प्रचलित परंपरागत मिथ्या धाराओं को सुदृढ़ करता है उससे समस्या वास्तविक रूप में कितनी गंभीर है यह प्रकट नहीं हो पाता है और इसके समाधानों के विषय में प्रत्येक का विचार अस्पष्ट रहता है।

चौथा तथ्य यह है कि ये घटक व्यक्तिगत तथा सामाजिक व्यवहार की ऐसी अभिवृत्तियां तथा बानगियां प्रस्तुत करने के लिए एकजुट हो जाते हैं जो स्वयं ही अपंगता और बाधाग्रस्त जीवनों के महत्वपूर्ण कारण होती हैं। छोटी-छोटी क्षतियों वाले बच्चों को भी प्रायः विकलांग अथवा अंधा अथवा बहरा अथवा मंदित बुद्धि कहा जाता है और उन्हें उस सहारे तथा प्रोत्साहन से भी वंचित रखा जाता है जिससे उन्हें समाज में विकास तथा कार्य करने की शक्ति प्राप्त हो सकती है। परंपराओं तथा संस्कृति के अनुसार बदलती हुई विशेष प्रकार की अपंगताओं वाले सामाजिक जीवन के मूल रूपों--समुदाय के उत्पादनशील क्रियाकलापों, उसके शासन तंत्र, विवाह और मातृ-पितृत्व की संस्थाओं--में भाग लेने से वंचित रखा जाता है जिसका मुख्य कारण अपंगता को अशुभ माना जाता है न कि यह कि अपनी अपंगता के कारण उनकी कार्यक्षमता व्यावहारिक रूप में सीमित होती है।

ये सामाजिक मान्यताएं विकासोन्मुख क्षेत्रों की ही विशेषता नहीं है, वे संसार के हर भाग में सुविख्यात हैं। तथापि सामान्यतः विकासोन्मुख संसार में समुदाय में व्यक्ति की भूमिका परिवार की परिस्थितियों तथा परिवार के परंपरागत संबंधों द्वारा अपेक्षाकृत कहीं अधिक दृढ़ता से निर्धारित की जाती है और उसके आत्मबिंब तथा आत्मविश्वास उस सामाजिक संदर्भ में उस भूमिका को निबाहने की उसकी क्षमता से व्युत्पन्न होते हैं जिसमें उसका विकास हुआ है। अतएव, जब किसी क्षतिग्रस्तता से संबद्ध कार्यगत सीमाओं अथवा अपंग व्यक्ति के क्षतांकन के कारण, उसे पारंपरिक भूमिका को निबाहने के लिए अनुमति नहीं दी जाती तो व्यक्ति का व्यक्तित्व हीन बन जाने की बहुत संभावना होती है वह ऐसा बहिष्कृत प्राणी हो जाता है जिसका अपने लिए, परिवार के लिए, अपने समुदाय के लिए कोई मूल्य नहीं रह जाता।

पांचवां तथ्य यह है कि विकासोन्मुख क्षेत्रों में पुनर्वास की जो भी सेवाएं विद्यमान हैं उनमें से कम से कम 90 प्रतिशत और संभवतः इससे भी अधिक की रूपरेखा तथा प्रेरणा का आधार औद्योगिकृत पाश्चात्य देशों में पाए गए प्रतिमान रहे हैं और उन प्रतिमानों में प्रशिक्षित लोग ही इन सेवाओं में मदद देते रहे और काम करते रहे हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता और सहयोग का पूर्णतः गत 30 वर्षों के दौरान ही विकास हुआ है। इसने कतिपय उत्कृष्ट संस्थाओं—केंद्रों, विद्यालयों और कार्यक्रमों को जो बिल्कुल उन प्रतिमानों के अनुरूप सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं जिनके आधार पर उन्हें बनाया गया था—तथा महान् निष्ठावान तथा कुशल कार्यकर्त्ताओं को जन्म दिया है। दो कठिन समस्याएं रह जाती हैं। प्रथम यह कि कुल विद्यमान सेवाएं क्षेत्रों के अधिक से अधिक कुछ हजार लोगों तक पहुंच जाती हैं जब कि हमारा अनुमान है कि संसार में कम से कम 30 करोड़ अपंग हैं और प्रतिवर्ष उनमें 20 लाख की वृद्धि हो रही है। दूसरी समस्या यह है कि हम यह प्रश्न कर सकते हैं कि औद्योगिकृत पश्चिम में जो पुनर्वास सेवाएं विकसित हुई हैं उनकी संकल्पनाएं क्या सर्वथा भिन्न आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों वाले क्षेत्रों के लिए भी अनिवार्यतः उपयुक्त हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जो पुनर्वास प्रतिमान औद्योगिकृत पश्चिम तथा हमारी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग गतिविधि दोनों पर ही छाया हुआ है उसकी कार्यप्रणाली के तीन भाग हैं : भव्य भवन, विस्तृत उपकरण और अत्यधिक विशेषज्ञता प्राप्त व्यावसायिक कार्मिक। असीमित अनुसंधान और विकास निधियों के साथ अत्यधिक परिष्कृत पर्यावरण में हमने इनमें से प्रत्येक भाग के लिए मानक प्रस्तुत कर दिए हैं, और इन मानकों को ऐसी पवित्रतापूर्ण वातावरण से आवृत्त किया जा रहा है कि विकासोन्मुख संसार में हमारे मित्र यह विश्वास करने को बाध्य हो गए हैं कि जो कुछ भी भिन्न है वह अस्वीकार्य है।

हम उन सेवाओं को महत्व देते रहे हैं जो प्रशिक्षित व्यक्ति अपंग व्यक्ति को और अप्रत्यक्षतः कमोवेश उसके परिवार को देगा। प्रारंभ में क्योंकि हमारे युग के फैशनों ने हमें यह मानने को विवश किया है कि हम शल्यक्रिया, गोली, पैड, व्यायाम, पथ्य के जरिए हर समस्या का समाधान कर सकते हैं, हमने पुनर्वास की परियोजना को भी अनिवार्यतः चिकित्सीय अभ्यास ही माना है। शैक्षिक और व्यावसायिक पुनर्वास इसके बाद ही आए हैं और विकासोन्मुख क्षेत्रों के नगरों में कतिपय लोगों के चिकित्सीय पुनर्वास में विशेषज्ञता रखने वाले केन्द्रों की संख्या के एक दम बाद वे अन्य केंद्र आते हैं जहां विशेष शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा परिरक्षित रोजगार की व्यवस्था है।

हमने कहा है, "आप अपने अपंग व्यक्ति को हमारे जादुई भवन में लाइए जहां हमारे मन मोह लेने वाले उपस्कर और हमारे प्रेरित विशेषज्ञ हैं और हम इस व्यक्ति को ऐसा बना कर आपके पास लौटाएंगे कि वह अपेक्षाकृत कम अपंग रह जाएगा और आपके समुदाय में बेहतर जीवन यापन कर सकेगा।" किंतु हमें यह भी कहना है कि, "परिस्थितियों पर निर्भर करते हुए हम आप लोगों में से केवल उन्हीं को ले सकते हैं जो हमारा खर्च वहन कर सकते हैं अथवा जो जादू घर के पड़ौस में ही हैं अथवा जो छह महीने के लिए सप्ताह में तीन बार आ सकते हैं अथवा जिनके पास परिवहन का साधन है, अथवा जो अपने भविष्य की हमारी परिभाषा को स्वीकार करने को राजी हैं।"

हमारा आचरण और हम जो उदाहरण दूसरे देशों के सामने रखते हैं उसका प्रतिपाद्य ऐसा रहा है कि हम समस्या तथा समस्याग्रस्त व्यक्ति दोनों को उनके मौजूदा सामाजिक संदर्भ से अलग हटाकर अपने बनाये हुए एक नए संदर्भ में समाधान ढूंढने का प्रयास करते हैं। धीरे-धीरे ही हम यह सीख पाए हैं कि अपंग व्यक्ति भी एक ऐसा व्यक्ति है जो अनेक अन्य बातों से जुड़ा है। उसका एक परिवार है, परंपराएं और रीति-रिवाज हैं, रुचियां और प्रवृत्तियां हैं, भय और आशंकाएं हैं, आत्माभिमान और महत्वाकांक्षा है, और एक संस्कृति है जो इन तत्वों के एक सूत्र में पिरोए हुए है। हमने जो विचार दूसरों को दिया है उसका आधार व्यक्ति को उसकी क्षतिग्रस्तता को छोड़कर उसके जीवन की हर वस्तु से अलग कर देना और फिर क्षतिग्रस्तता पर ही ध्यान केंद्रित करना रहा है। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए हमने उस समृद्धशाली आश्रय की उपेक्षा की है जो समुदाय में, परिवार में और स्वयं क्षतिग्रस्त व्यक्ति में ही प्रेरित किए जाने के लिए तत्पर है।

छठे और सातवें तथ्य वे विचार हैं जो विकास के लिए सभी अंतर्राष्ट्रीय सहायता पर लागू होते हैं और जिनका हमारी समस्याओं से सीधा संबंध है। छठा तथ्य सामाजिक चुंबकत्व का सिद्धांत है। इसके अनुसार कुल मिलाकर, जब हम विकासोन्मुख संसार में काम करने का जोखिम उठाते हैं तो हम देखते हैं कि हमारी सबसे अधिक सहानुभूति उन लोगों के प्रति है जो हमारी भाषा बोल सकते हैं, जो इस विषय में कुछ-कुछ हमारे जैसे ही विचार रखते हैं कि समाज का गठन किस प्रकार किया जाना चाहिए तथा जिनका साथ हमारे लिए सुखद होता है। जो लोग इस कसौटी पर पूरे उतरते हैं वे निस्संदेह आमतौर पर ऐसे लोग होते हैं जिन्होंने किसी न किसी कारण से पाश्चात्य शिक्षा तथा संस्कृति ग्रहण की होती है, जो उस के कल्पनात्मक आधार को समझते हैं जिन पर हमारे मानव सहायता कार्यक्रम आधारित होते हैं और जो अपने देशों में वैसी ही, यद्यपि वे असंगत होती हैं, सेवाओं की आकांक्षा करते हैं। कृपया मुझे समझिए, संसार में मेरे कुछ प्रियतम मित्र उस वर्ग में आते हैं जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है, और विकासोन्मुखी गतिविधि को अभिप्रेरित करते हैं। उन्होंने जो भूमिका अदा की है मैं उसे पूरी तरह समझता हूं, किंतु कटु सत्य यह है कि वे हमेशा अपंगता की समस्या के वास्तविक आयामों को उस रूप में नहीं समझते जिस रूप में वह उनके देशों के सभी लोगों को प्रभावित करती है और उनके द्वारा हमारी सीमित संकल्पनाओं पर सही बता दिए जाने का अर्थ अनिवार्यतः यह नहीं होता कि वे संगत हैं। हमारी सबसे महत्वपूर्ण चुनौती यह समझना है कि अपंगता का गांव में और शहरी गंदी बस्ती में व्यक्ति और परिवार के लिए क्या अर्थ है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सातवां तथ्य, जो सारी विकास गतिविधि पर भी लागू होता है, 'मंदता' सिद्धांत की विफलता है। हमने यह माना है कि राजधानियों में दिखावटी संस्थाओं की स्थापना को प्रोत्साहन और सहायता देकर हम एक मंदन प्रक्रिया का सूत्रपात करेंगे जो अंततोगत्वा अपेक्षाकृत छोटे समुदायों में सेवा के उपयुक्त स्तरों का प्रसार करेगी। जब हमने राष्ट्रीय कार्यक्रमों के बारे में बात की है तब हमने प्रदर्शनीय स्थलों पर फैले केन्द्रों की बात की है जो थोड़ा-थोड़ा काम करते रहेंगे। किंतु ऐसा नहीं हुआ और अब हमें जान लेना चाहिए कि यह तब तक नहीं होगा जब तक कि इसे सक्रिय बनाने के लिए संसाधनों और संस्कृति दोनों की वास्तविकताओं पर आधारित एक अत्यधिक सुदृढ़ योजना नहीं बनाई जाती।

विकास के प्रारंभिक चरणों से गुजर रहे क्षेत्रों में अपंग व्यक्तियों के जीवन में सुधार लाने के लिए हम जिन संसाधनों को लगाने की अपेक्षा करते हैं उनके बेहतर परिणाम हासिल करने के लिए हम क्या कर सकते हैं? मुझे कुछ सिद्धांतों का सुझाव देने दीजिए जिन पर मैं चाहता हूं कि आपको विचार करना चाहिए।

मैंने रोकथाम के विषय में अधिक नहीं कहा है किंतु इसका यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि मैं इसे महत्वपूर्ण नहीं मानता। यह पूर्णतः स्पष्ट है कि अपंगता की समस्या को हम कभी भी कारगर ढंग से कम नहीं कर सकते जब तक कि हम क्षतिग्रस्तता को कम करने के विषय में कोई सार्थक कदम नहीं उठाते। प्रमुख कारणों को देखिए—कुपोषण, जन्म दोष, व्याधि और दुर्घटनाएं और उनके दुखद परिणामों को कम करने के लिए आवश्यक बहु पक्षीय कार्रवाई पर विचार कीजिए।

कुपोषण, जन्म दोष, व्याधि अथवा दुर्घटना की रोकथाम के जरिए हम क्षतिग्रस्तता की रोकथाम कर सकते हैं; यदि ऐसा हो जाता है, तो कारगर देखभाल और उपचार के जरिए हम स्थायी अपंगता की रोकथाम कर सकते हैं; और हम बुद्धिमत्तापूर्ण सामाजिक कार्रवाई और सार्वजनिक शिक्षा कार्यक्रमों के जरिए अनेक वास्तविक, सामाजिक परिणामों अर्थात् विकलांगता की रोकथाम कर सकते हैं।

रोकथाम और पुनर्वास को अलग-अलग करने में हम भारी भूल कर बैठे हैं। मानवीय अनुभव एक क्रमिक विकास होता है, जिसका प्रारंभ गर्भधारण से पहले होता है जब माता-पिता के गुणों से क्षतिग्रस्तता हो भी सकती है और नहीं भी और उसका अंत मृत्यु में होता है जो बहुधा ही क्षमताओं के बढ़ते हुए ह्रासन की पराकाष्ठा होती है। हम इस प्रक्रिया को अन्य संदर्भों में अपंगता कहते हैं। जिस क्षण भावी माता-पिता का समागम होता है हर जीवन के क्षतिग्रस्त होने की संभावना होती है, प्रत्येक व्यक्ति की अपने जीवनकाल के दौरान क्षमता के ह्रास का शिकार होने की संभावना है और इसे असमर्थता कहा जाएगा अथवा नहीं यह अक्षमता पर निर्भर करने की अपेक्षा संस्कृति पर अधिक निर्भर करता है। हमारे कार्यक्रम और विकासोन्मुख क्षेत्रों के लिए हमने जिन कार्यक्रमों का जोरदार समर्थन किया है वे इन वास्तविकताओं पर आधारित नहीं हैं। वे इस धारणा पर निर्भर करते हैं कि क्षतिग्रस्तता एक विशेष घटना है और उसके लिए यह आवश्यक है कि इससे ग्रस्त व्यक्ति को विकास क्रिया की सामान्य धारा से तत्काल हटा लिया जाना चाहिए और उसे हमारे वरदानों जैसे भवनों, उपस्कर और व्यावसायिक कार्मिकों से परिचित कराया जाए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि पूरी प्रक्रिया रोकथाम, पुनर्वास और सामाजिक कार्रवाई का एक सातत्य होनी चाहिए। ये अलग-अलग कार्यक्षेत्र नहीं हैं वे ऐसे तंत्र के परस्पर संबद्ध और एक-दूसरे को प्रभावित करने वाले घटक हैं जिनका प्रयोजन मात्र प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता और व्यक्तित्व के उच्चतम विकास को बढ़ावा देना है। हमारी योजना और विकासोन्मुख देशों के साथ हम जिस योजना की चर्चा करते हैं वह इस संकल्पना का विस्तार होनी चाहिए।

जिस किसी का भी इस विषय में नीति निर्धारित करने से वास्ता पड़ा है उनमें से प्रत्येक को यह विश्वास दिलाने को उच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए कि अपंगता अल्प-विकास का एक महत्वपूर्ण कारण और परिणाम है तथा किसी भी बुद्धिमत्तापूर्ण विकास योजना में इस विषय से संबंधित मद को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

अगली बात का संबंध उससे है जिसे हम गौरव के साथ आधारिक संरचना कहते हैं। 'जादू घर' मोह लेने वाले उपस्कर तथा प्रेरणा से भरपूर विशेषज्ञों से हमारा लगाव होने के कारण, सामान्यतः हमने उन लोगों और संस्थाओं के संभावित योगदान की उपेक्षा की है जिनके उद्देश्य अपेक्षाकृत अधिक सामान्य हैं वे हमारी मदद कर सकते हैं और करना चाहते हैं। रिहेबिलिटेशन इंटरनेशनल ने बहुत से ग्राम स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, अध्यापकों, सामाजिक सुरक्षा अभिकर्त्ताओं, राजनीतिक और धार्मिक नेताओं, समुदाय विकास अभिप्रेरकों तथा अन्य ऐसे लोगों से बात की है जो इस क्षेत्र में सहयोग करने को तत्पर हैं। जानकारी के जिस व्यापक अभाव का मैंने पहले उल्लेख किया है वह तो है ही, और इसके अतिरिक्त सहानुभूति, उत्साह और अभिप्रेरणा का अभाव है। यदि हमें परिस्थिति को बदलना है तो इसमें सुधार करना ही पड़ेगा।

अपंगता की रोकथाम और पुनर्वास के किसी भी कार्यक्रम के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण संपत्ति है परिवार और अधिकांश विकासोन्मुख क्षेत्रों में परिवार के बंधन और कार्य, व्यक्ति के सामाजिक संदर्भ के जबरदस्त घटक होते हैं। हमें ऐसी गतिविधियों को और अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए जो अपंग व्यक्तियों के परिवारों के सदस्यों के अंधविश्वासों और आशंकाओं को दूर कर सकें, उन्हें ऐसी कार्यविधियों में शिक्षण दें जिसका पालन वे अपंगता की रोकथाम करने में अथवा पुनर्वास प्रक्रिया में सहयोग देने में कर सकें और उन्हें सहायता के उन स्रोतों से परिचित कराएं जो उपलब्ध हो सकें अथवा करवाये जा सकें। व्यक्ति जीवन के विद्यमान सामाजिक ढांचे के भीतर ही इस स्तर पर किया गया सफल कार्य सामान्य मानवीय विकास और व्यवहार को बनाए रखने में बहुत कुछ कर सकता है चाहे उससे क्षतिग्रस्तता को दूर अथवा कम किया जा सके या नहीं।

मैं जानता हूं कि मैंने स्थिति को अति सरल और अति सामान्य दोनों ही बना दिया है और अंतर्राष्ट्रीय सहायता द्वारा समर्पित प्रगति के ऐसे उदाहरण हैं जो मेरे द्वारा वर्णित उदाहरणों से अधिक सकारात्मक हैं। तथापि मैं इस धारणा के पक्ष में कहता रहूंगा कि मैंने जिन स्थितियों का वर्णन किया है वे ऐसी स्थितियां हैं जिनमें विकासोन्मुख देशों के अधिकांश अपंग लोग रहते हैं और उनकी सहायता करने वाले हमारे अधिकांश प्रयत्नों की जिन विशेषताओं का मैंने उल्लेख किया है वे सही हैं—इसे सिद्ध करने का प्रमाण विद्यमान है।

☐ नार्मन एक्टन

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युद्ध के दुष्परिणाम

युद्ध द्वारा उत्पन्न बहुत से अनिष्टों में वे असंख्य पीड़ित लोग हैं जिन्हें भयंकर शारीरिक, मानसिक या संवेगात्मक बाधाएं झेलते हुए अपना जीवन बिताना पड़ता है । युद्ध के प्रत्यक्ष परिणामों--पीड़ा, अंग भंग, जलन और मनस्ताप--से भी अधिक कष्टकर संभवतः वे अप्रत्यक्ष परिणाम हैं, जो वर्षों पश्चात् सामने आते हैं, यथा--देश की अर्थ-व्यवस्था का अस्त-व्यस्त हो जाना, समाज के ढांचे की तबाही, गरीबी, भूख, कुपोषण और मनोवैज्ञानिक विकार, और असंख्य शरणार्थी जो बेघर हो जाते हैं । प्रायः बच्चों को ही युद्ध के परिणामों को दीर्घकाल तक भुगतना पड़ता है। नीचे फोटो में यही कहानी नाटकीय ढंग से बतायी गई है । यह फोटो 30 वर्ष पूर्व पोलैंड में युद्ध-विकलांग बच्चों के लिए विशेष स्कूल में ली गई थी, लेकिन इसका संदेश सदा की भांति आज भी उतना ही सार्थक और सार्वभौम है। इस छोटी लड़की से अपने घर और परिवार का चित्र बनाने के लिए कहा गया था। उसने भंवर के रूप में जो जटिल रेखाएं खींची और उसके चेहरे पर जो विस्मयकारी भाव है, उससे द्वितीय विश्व युद्ध के द्वारा यूरोप में हुई अव्यवस्था और बर्बादी की झलक मिलती है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रत्येक नेत्रहीन बच्चे का भविष्य

—पिए रेत्ते पोस्मोवस्की

स्थान : उत्तरी बांग्लादेश का एक नगर । समय : नियत कालावधि के दौरान कोई एक दिन । दो लड़के एक कक्षा में पास-पास बैठे हैं । बड़ा कलम से कुछ लिख रहा है और छोटा, जिसके चेहरे पर तन्मयता के भाव हैं, पैमाना लगे एक बोर्ड के इर्द-गिर्द नियमित रूप से अपने हाथों को हिला रहा है । छोटा लड़का—जैसा कि आपका अनुमान है, नेत्रहीन है और जिस यन्त्र का वह इस्तेमाल कर रहा है वह एक ब्रेल सैट है ।

ढाका के उत्तर में मैमनसिंह स्थित एडवर्ड स्कूल, बांग्लादेश में 'समेकित शिक्षा' का प्रबंध करने वाली संस्थाओं में से एक है । इसमें एक दर्जन नेत्रहीन छात्र हैं जो नेत्रवान बच्चों के साथ सामान्य स्कूली वातावरण में पढ़ते-खेलते हैं । उन्हें जो शिक्षा मिल रही है उसके फलस्वरूप वे एक सार्थक और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर सकेंगे तथा नेत्रवान लोगों के साथ बराबरी के स्तर पर विभिन्न सामुदायिक क्रिया-कलापों में भाग ले सकेंगे ।

परंतु फिर भी ये लघुसंख्यक बच्चे कुछ भाग्यशाली हैं । नेत्रहीन के रूप में जन्म लेना या बाद में नेत्रहीन हो जाना सचमुच भीषण अशक्तता है । विकासशील देश में यह और भी दुःखद बात है कि इसे भाग्य की ऐसी मार समझा जाता है जिससे कोई छुटकारा नहीं है । यद्यपि नेत्रहीन बच्चे को वास्तव में अवसामान्य नहीं समझा जाता और न ही नेत्रहीनता कोई ऐसी बात है जिसके लिए उसे शर्म से छिपना पड़े, तथापि उसे भाग्य के भरोसे बिना किसी प्रेरणा या कार्य के एकाकी जीवन बिताने के लिए छोड़ दिया जाता है ।

बहुत अधिक गरीबी के परिणामस्वरूप कार्य-कारण का एक ऐसा अटूट सिलसिला बन जाता है कि प्रतिवर्ष विकासशील देशों के लगभग 100,000 बच्चे विटामिन 'ए' की कमी तथा चिरकारी कुपोषणता के कारण अपनी दृष्टि खो बैठते हैं । बांग्लादेश में ऐसे बच्चों की संख्या 17,000 है क्योंकि 9 करोड़ की आबादी वाले इस देश के, जिसका आकार लगभग अमरीका के विस्कॉन्सिन राज्य के बराबर है, 80 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के स्तर से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

ऐसे ही परिवेश में डा० माइकेल इर्विन सन् 1977 के प्रारंभ में बांग्लादेश में यूनीसेफ के प्रतिनिधि के रूप में ढाका पहुँचे । 25 वर्ष तक संयुक्त राष्ट्र संघ की सेवा करने वाले इस अंग्रेज डाक्टर का कार्य था धन-जन दोनों ही दृष्टि से उस बड़े प्रोग्राम का निर्देशन करना, जिसे यूनीसेफ उस देश में चला रहा है ।

हाल ही में दिए गए एक इंटरव्यू में डा० इर्विन ने बताया "वहां जिस चीज ने मुझे एकदम प्रभावित किया वह थी अंधे बच्चों की भारी संख्या । ऐसे बच्चों की कुल संख्या कितनी है इसके बारे में शायद ही कोई बता पाए लेकिन फिर भी यह संख्या लगभग 50,000 अवश्य होगी ।"

अत: अप्रैल 1978 में अनेक बांग्लादेशी मित्रों के साथ मिलकर डा० इर्विन ने एक संगठन की स्थापना की, जिसे "एसिसटैन्स फार ब्लाइन्ड चिल्ड्रेन" (अंधे बच्चों की सहायता) या केवल ए०बी०सी० कहा जाता है । इसकी कार्यकारी समिति में जाने-माने व्यक्तियों और व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करने वालों में श्री हबीबुल्ला खान, पटसन मंत्री (आजकल कार्यवाहक राष्ट्रपति); बांग्लादेश नेशनल सोसायटी फार द ब्लाइन्ड के श्री मंसूर ए० चौधरी; श्री ए० एम० मुफ्फजल, बांग्लादेश टाइम्स के कार्यकारी संपादक; वुमेन्स वालेन्टरी एसोसिएशन की श्रीमती मुनीरा खान; योजना आयोग के समाज कल्याण अनुभाग की श्रीमती सलमा खान; और डा० रबीउल हुसैन, चिकित्सा परामर्शदाता, सेन्ट्रल हास्पिटल मैनेजमेंट, बांग्लादेश नेशनल सोसाइटी फार द ब्लाइन्ड, शामिल हैं ।

ए०बी०सी० के प्रमुख कार्यकलापों में से एक उन छोटे बच्चों की नजर की वापसी से संबंधित शल्य-चिकित्सा के लिए निधि प्रदान करना है, जो जन्मजात मोतिया बिन्द सरीखे जन्मजात दोषों के कारण अंधे हो जाते हैं। इन्हें अस्पताल में साधारण शल्य क्रिया द्वारा दूर किया जा सकता है ।

1978 और 1980 के दौरान दो वर्ष से भी कम अवधि में ए०बी०सी० के तत्वावधान में लगभग 300 बच्चों (जिनमें से एक तिहाई लड़कियां थीं) के ऐसे ऑपरेशन किए गए । डा० इर्विन ने बताया कि 'इस प्रकार एक नेत्रहीन बच्चे के जीवन में चमत्कारी परिवर्तनों के अनुभव बांग्लादेश के मेरे अविस्मरणीय रोमांचक अनुभव हैं ।'

ए०बी०सी० समेकित शिक्षा संबंधी सरकारी आंदोलन को भी सहयोग दे रहा है । पिछले दो वर्षों में इसने नियमित स्कूलों से सम्बद्ध पांच ऐसे होस्टल खोले हैं जहां ऐसे अंधे बच्चे रह सकते हैं जिनके घर इतने दूर हैं कि जहां से उनका रोज़ कक्षा में आना संभव नहीं है । 110 बच्चों को होस्टल में रहने और पढ़ाई के खर्च के लिए वजीफा मिल रहा है । डा० इर्विन ने बताया कि इनमें से कई बच्चे अपनी कक्षा में अव्वल नंबर पर हैं ।

ए०बी०सी० ब्रेल किट, घड़ियां और रेडियो सरीखे उपस्कर भी देता है । संभवत: इसका सबसे उत्साहवर्धक कदम है व्यावसायिक प्रशिक्षण संबंधी कार्य, जिसे हाल में मैमनसिंह क्षेत्र में अंधे देहाती बच्चों के लिए शुरू किया गया है ।

पारंपरिक देहाती वातावरण में अंधे बच्चे बिलकुल सुस्त और निष्क्रिय जीवन बिताते हैं । उन्हें विधिवत् कोई शिक्षा नहीं मिलती और यदि मिलती भी है तो उस शिक्षा का उन्हें शायद ही कोई लाभ मिलता हो । ए०बी०सी० ने उन्हें कृषि या फार्म संबंधी क्रियाकलापों, जैसे सब्जी उत्पादन, मुर्गी-पालन, मछली-पालन या पशु-पालन में भाग लेने में सहायता की है ।

ए०बी०सी० की अद्यतन परियोजना के अन्तर्गत जिसे आजकल बांग्लादेश के समाज कल्याण विभाग के साथ मिलकर विकसित किया जा रहा है, इन बच्चों की दृष्टि-परीक्षा के लिए चलती-फिरती टीमें स्थापित करना है, जिन तक कि सामान्यत: स्कूलों या स्वास्थ्य सेवाओं के जरिए पहुंचना संभव नहीं है । इससे गांवों मे अंधापन दूर करने में सहायता मिलेगी क्योंकि किसी खराबी या संक्रमण का शीघ्रता से पता लगाकर उसका इलाज करने से ही किसी बच्चे को अन्धा होने से बचाया जा सकता है ।

तृतीय विश्व में आंख की खराबियां सामान्यत: चिरकारी कुपोषण, दोषपूर्ण गर्भधारण स्थितियों, दुर्घटनाओं या प्राय: अत्यधिक गरीबी से जुड़े, बचाये जा सकने वाले रोगों के कारण होती हैं । कुपोषणता के कारण होने वाला अंधापन, जिसे शुष्काक्षिपाक (जीरोफ्थेलमिया) और स्वच्छ पटल मृदुता (केरेटोमलेसिया) कहा जाता है वास्तव में नेत्र के ऊतकों का नष्ट हो जाना है, जो अत्यधिक कुपोषण और विटामिन 'ए' की कमी के कारण होता है ।

यह स्थिति एशिया के चावल खाए जाने वाले क्षेत्रों में व्यापक रूप से है, जहां खाने के साथ हरी सब्जियों को शामिल नहीं किया जाता क्योंकि सांस्कृतिक रूप से वे इसके आदि नहीं होते । डा० इर्विन ने कहा कि—बांग्लादेश में आपको हर जगह पौधों तथा सब्जियों की हरी पत्तियों के रूप में विटामिन 'ए' के प्राकृतिक स्रोत उगे हुए मिलेंगे । सामान्यत: इन्हें पशु ही चरते हैं जबकि इनका उपयोग मनुष्यों द्वारा बड़े मजे में किया जा सकता है ।"

यूनीसेफ विभिन्न देशों में भारी मात्रा में विटामिन 'ए' के कैप्स्यूलों का वितरण करके (जिनमें अकेले बांग्लादेश को ही साल भर में 3 करोड़ दिए जाते हैं) कुपोषण के कारण होने वाले अंधेपन के निवारण में सहायता कर रहा है। ये कैप्स्यूल सामुदायिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा 6 वर्ष से कम आयु के ज्यादा से ज्यादा बच्चों में बांटे जाते हैं । उदाहरण के लिए, सन् 1979 में इस आयु वर्ग के लगभग 70 प्रतिशत बच्चों को अपेक्षित दो कैप्स्यूल दिए गए ।

परन्तु ऐसे आपातकालीन उपायों से भी अधिक महत्वपूर्ण है लोगों को इस बात की शिक्षा देने का दीर्घकालीन प्रयास कि विटामिन 'ए' के प्राकृतिक स्रोत कहां से प्राप्त हो सकते हैं । इस प्रकार के स्वास्थ्य तथा पोषण शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रम बांग्लादेश और पड़ोसी देशों में प्रारंभ किये जा रहे हैं ।

इसका एक उदाहरण है दक्षिण भारत, तमिलनाडु में चालू की गई परियोजना जहां अनुमानत: 6,000 बच्चे प्रतिवर्ष अपनी दृष्टि खो बैठते हैं । मदुरै में राजाजी अस्पताल से संबद्ध पोषण पुनर्वास केन्द्र में छोटी आयु के रतौंधी वाले रोगियों की चिकित्सा की जाती है । जब भोजन में विटामिन 'ए' की कमी होती है तो आंख में एक सफेद धब्बा आ जाता है और आखिरकार इससे नज़र पूरी तरह से जा सकती है । ऐसे बच्चों की माताओं को सिखाया जाता है कि एक रुपए (15 सेंट) में दिन में पांच बार पौष्टिक भोजन कैसे पकाया जा सकता है । इस आहार

पिएरेत्ते पोस्मोवस्की 'यूनेस्को फीचर्स' के 1963 से 1980 तक संपादक रहे। प्रेस और रेडियो सेवा से संबधित यह मासिक पत्रिका यूनेस्को द्वारा अंग्रेजी, फ्रैंच, स्पेनिश और अरबी भाषाओं में प्रकाशित की जाती है । यह लेख ए०बी०सी० इंटरनेशनल के अध्यक्ष तथा यूनीसेफ मुख्यालय, न्यूयार्क में बाल अपंगता के वरिष्ठ सलाहकार डा० माइकेल इर्विन से की गई एक भेंटवार्ता पर आधारित है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

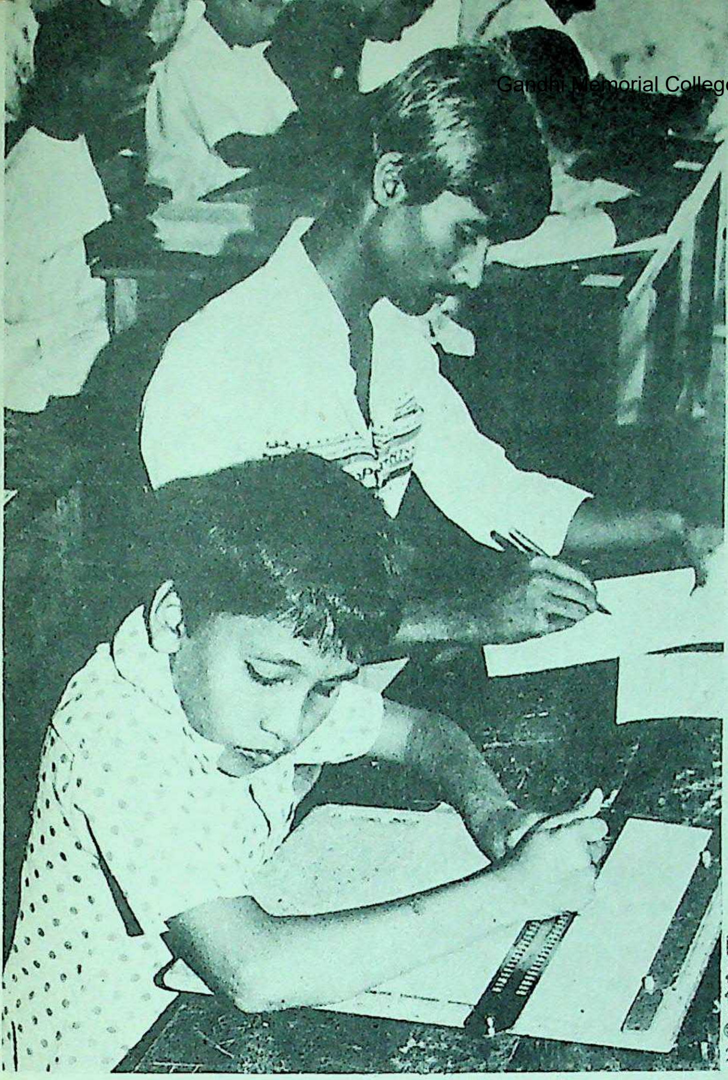

मैमन सिंह, बांग्ला देश में एडवर्ड स्कूल

स्थानीय महापौर के साथ लातीनी अमरीका के आंखों के चिकित्सालय का स्वास्थ्य कार्यकर्ता बाजार में आंखों की बीमारियों से ग्रसित लोगों को ढूंढता है और उपचार कराने के लिए उनसे अनुरोध करता है। बहुत से लातीनी अमरीकी देशों ने अंधेपन को रोकने के लिए आंख की बीमारियों का तुरंत पता लगाने और शीघ्र उपचार करने के लिए जोरदार अभियान चलाए हैं।

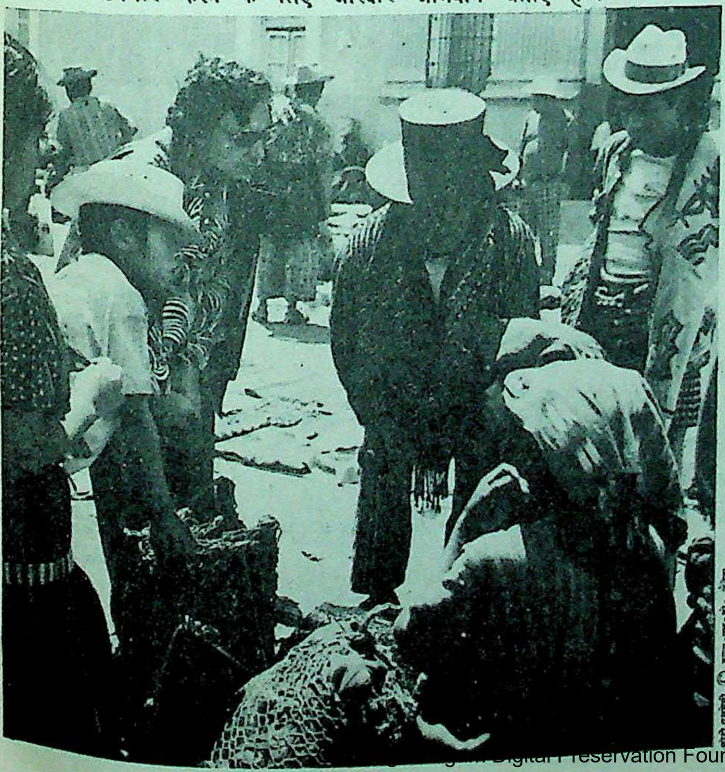

में रागी (एक प्रकार की धान्य घास), मूंगफली का छिलका, गेहूं और बाजरे के आटे का मिश्रण तथा दूसरी चीजें जैसे सजन की पत्तियां, पालक और पपीते के टुकड़े शामिल हैं।

पिछले वर्ष मदुरै केंद्र में रतौंधी से पीड़ित 26 बच्चों का इलाज किया गया था। परन्तु जिन्हें चिकित्सा की जरुरत है उनके मुकाबले में यह संख्या नगण्य है। देहाती बच्चों तक पहुंचने के लिए केन्द्र ने 'बाल सेविकाओं' (बच्चों की देखभाल करने वाली सेविकाएं) के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। ये सेविकाएं मदुरै में एक लघु-पाठ्यक्रम पूरा करती हैं और फिर इस नेक कार्य का प्रचार करने के लिए अपने-अपने देहाती समुदायों में लौट जाती हैं।

रोकथाम और पुनर्वास संबंधी यह एक विशेष प्रयोग है जो परिवार तथा समुदाय में पहले से उपलब्ध स्रोतों पर आधारित है। औद्योगिकृत और विकासशील देशों में इस बात का काफी एहसास हो रहा है कि किसी अशक्त बच्चे को मात्र स्कूल या संस्था में डाल देना ही समस्या का समुचित हल नहीं है। ऐसे विशेष स्कूल बच्चे के 'एकाकीपन' पर विशेष बल देते हैं तथा इनके चलाने का खर्च अधिक होता है और इनसे अपेक्षाकृत बहुत कम बच्चों को लाभ होता है। यूनेस्को, यूनीसेफ तथा डब्ल्यू० एच० ओ० सरीखे संगठनों द्वारा अपनाया जाने वाला दृष्टिकोण अपेक्षाकृत अधिक वास्तविक है,—जिसमें वर्तमान सेवाओं में देख-रेख और शिक्षा का समेकन करके यथासंभव बच्चे के सामान्य विकास को बनाए रखना है।

डा० इर्विन के अनुसार—"सामुदायिक स्तर के कार्यकर्ताओं, परा-चिकित्सकों, स्वास्थ्य और ग्रामीण सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा प्राथमिक स्कूल के अध्यापकों के प्रशिक्षण में कुछ सामान्य संकल्पनाएं जोड़कर आप उन्हें इस समस्या के प्रति जागरूक बना सकते हैं और यह दिखा सकते हैं कि रोकथाम और सामान्य पुनर्वास के प्रयासों से इस दिशा में कितनी प्रगति की जा सकती है।"

बांग्लादेश में ए०बी०सी० की सफलता से अन्य एशियाई देशों जैसे भारत और श्रीलंका में तथा हाल ही में मलेशिया और पाकिस्तान में ए०बी०सी० ग्रुप प्रारंभ करने की प्रेरणा मिली है। उदाहरण के लिए, भारत के बम्बई क्षेत्र में अनेक बच्चों को स्कूलों द्वारा मनोनीत किया जा रहा है तथा ए०बी०सी० की परियोजना को पूना और बंगलौर में भी चालू करने की संभावनाओं पर विचार किया जा रहा है। श्रीलंका में नजर की वापसी वाले आपरेशनों के लिए हाल ही में आर्थिक सहायता दी गई और पाकिस्तान में ए०बी०सी० 300 ब्रेल किट मुहैया कर रहा है।

विकासशील देशों में इन समूहों या दलों के क्रियाकलापों में ताल-मेल बनाए रखने तथा अंधे बच्चों की दशा के प्रति सजगता बढ़ाने के लिए अप्रैल, 1980 में ए०बी०सी० इंटरनेशनल की स्थापना की गई, जिसके कार्यालय न्यूयार्क* में हैं।

ए०बी०सी० के क्रियाकलापों के लिए दुनिया भर के संगठनों से सहायता मिली है जिनमें संघीय गणतांत्रिक जर्मनी का क्रिस्टोफेल ब्लाइन्डेनमिशन, ब्रिटेन की रॉयल कामनवैल्थ सोसाइटी फार द ब्लाइन्ड, अमरीका के हेलन केलर इन्टरनेशनल, के साथ-साथ छोटे-छोटे कुछ फाउन्डेशन तथा अनेक व्यक्ति शामिल हैं।

इस कार्य के लिए धन की अब भी तत्काल आवश्यकता है क्योंकि दक्षिण एशिया में जिन अंधे बच्चों की सहायता की जा रही है उनकी संख्या नगण्य है, अर्थात् 15 वर्ष से कम आयु के जिन दृष्टिहीन बच्चों को सहायता मिल रही है उनकी संख्या बांग्लादेश में 50,000 में से 3,000 और भारत में 2,50,000 में से लगभग 15,000 है।

20 डालर (या 10 पौंड या 100 फ्रांसीसी फ्रैंक) से निम्नलिखित का खर्च निकल सकता है:

—जन्मजात मोतियाबिन्द से पीड़ित बच्चे की एक आंख की नजर की वापसी वाले आपरेशन के लिए। (बांग्लादेश में द नेशनल सोसाइटी फार द ब्लाइन्ड शल्य-चिकित्सक की फीस अदा करती है जबकि अस्पताल में बच्चे के साथ ठहरने वाले का खर्च, सामान्य संवेदनाहारी, भोजन तथा बच्चे के घर से अस्पताल तक आने जाने का खर्च ए०बी०सी० वहन करता है);

—समेकित स्कूल कार्यक्रम के अन्तर्गत पढ़ने वाले बच्चे के लिए एक ब्रेल किट, जिसमें कक्षा में आवश्यक विभिन्न यंत्र आदि एक मजबूत लकड़ी के बक्से में पैक किए हुए होते हैं;

—ए०बी०सी० द्वारा चलाए जा रहे 5 होस्टलों में से किसी एक में एक महीने तक रहने और शिक्षा प्राप्त करने का खर्च।

लघु अंशदान, जैसे कि 2 डालर (एक पौंड या 10 फ्रैंक), से स्थानीय रूप से निर्मित 'मोतियाबिन्द का चश्मा' मिल सकेगा जबकि दूसरी ओर 6,000 डालर (3,000 पौंड या 30,000 फ्रैंक) से ईंट से बने ऐसे आवासीय होस्टल के निर्माण तथा उसके साज-सामान का खर्च पूरा किया जा सकेगा जिसका फर्श कंक्रीट का और छत सीमेन्ट की होगी।

रॉयल कामनवैल्थ सोसाइटी फार द ब्लाइन्ड के निदेशक सर जॉन विल्सन ने एक बार कहा था—"केवल आंकड़ों में लोग लाखों की संख्या में अंधे होते हैं, जबकि हर व्यक्ति अपनी दशा के कारण अंधा बनता है।" इस बात को ध्यान में रखते हुए ए०बी०सी० इस बात का अथक् प्रयास कर रहा है कि 'प्रत्येक अंधे बच्चे का भविष्य बने।' □

---

*ए० बी० सी० उन परियोजनाओं में से एक है जो यूनेस्को के सह-क्रियाकलाप कार्यक्रम द्वारा विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष—1981 के दौरान प्रायोजित की जा रही है। इस परियोजना के संबंध में अन्य सूचनाएं तथा इस अंतर्राष्ट्रीय योजना—जिसके द्वारा विकासशील देशों में विकलांगों के स्कूलों तथा केंद्रों में उपस्कर जुटाने तथा प्रशिक्षण सुविधाओं की दृष्टि से मदद हो रही है—के बारे में विस्तृत जानकारी निम्नलिखित से प्राप्त की जा सकती है: "को-ऐक्शन", ओ०पी० आई०, यूनेस्को, 72 प्लेस द फांतेनॉय, 75700 पेरिस। अंशदानों पर स्पष्ट रूप से लिखा होना चाहिए: "ए०बी०सी० इंटरनेशनल—बांग्लादेश"।

Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाधा की व्यावहारिक परिभाषा

विश्व की 10 प्रतिशत जनसंख्या को आक्रान्त करने वाली अपंगता को एक गंभीर चिकित्सा संबंधी, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक समस्या मानकर विचार किया जाना चाहिए जिसका भविष्य में और अधिक विस्तार होने की संभावना है।

स्वास्थ्य से संबंधित प्राधिकारी और चिकित्सक दीर्घकालीन असमर्थता और अपंगता की कम प्रभावशाली समस्याओं की अपेक्षा अतीत में मर्त्यता और उग्र प्रकार की अस्वस्थता वाली समस्याओं पर अधिक ध्यान देते रहे हैं। अपंगता, उसके कारणों व परिणामों और उसके दुष्प्रभावों को कम करने के लिए क्या कुछ किया जा सकता है, इन सब की गहरी समझ बहुत अधिक जरूरी है। रोग केन्द्रित औषधि को अपंगता केन्द्रित औषधि से संपूरित किया जाना चाहिए और प्रत्येक देश को भलीभांति यह ध्यान में रखना चाहिए कि औषधि के उद्देश्य रोकथाम और इलाज ही नहीं हैं, बल्कि सामान्य सामाजिक क्रियाकलापों में व्यक्ति का इष्टतम पुनःस्थापन भी है।

सामान्य प्रयोग में "असमर्थता", "बाधा", "अपंगता", "रोकथाम" और "पुनर्वास" शब्द भ्रामक हैं। कई वर्षों से विश्व स्वास्थ्य संगठन रोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आई०सी०डी० कोड) का विकास करने में सहायक रहा है, जो प्रमुख रूप से निदान वाले पहलू पर तो विचार करता है, लेकिन रोगों के परिणामों या "अपंगता" जैसी स्वास्थ्य दशा के आकलन पर विचार नहीं करता।

रोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण में यह समझा जाता है कि बीमारी का विकास रोग के प्राकृतिक इतिहास की कई प्रावस्थाओं से गुजरता है अर्थात् इसके हेतु विज्ञान, विकृति विज्ञान और अभिव्यक्ति से। लेकिन बीमार व्यक्ति अपनी अभ्यस्त सामाजिक भूमिका में भी परिवर्तनों का अनुभव करता हैं। यदि ये दीर्घकालीन या काफी उग्र होते हैं तो रोगी को ऐसी देखभाल की जरूरत पड़ती है जिसका रोग की रोगात्मक अभिव्यक्ति से मुख्यतः कोई संबंध नहीं होता। इस प्रकार एक संपूरक प्रतिमान की जरूरत महसूस होती है ताकि रोग के परिणामस्वरूप सामाजिक भूमिका में जो परिवर्तन आ गए हैं उन पर विचार किया जा सके, जैसे असमर्थता, अपंगता और बाधा पर।

इन शब्दों की अनेक परिभाषाएं प्रकाशित हुई हैं लेकिन उन्हें सर्वत्र स्वीकार नहीं किया गया है। इस कारण कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं क्योंकि प्रयोग में आने वाले बहुत से शब्दों का कानूनी और प्रशासनिक महत्व होता है जैसे—पेंशन के लिए अशक्तों की पात्रता के सन्दर्भ में। "असमर्थता", "अपंगता" आदि को परिभाषित करने में लगभग अनन्य रूप से शारीरिक अभिव्यक्ति से उत्पन्न परिणामों पर ही ध्यान दिया गया है और मनोवैज्ञानिक प्रकार की जो प्रमुख असमर्थता है, उसकी उपेक्षा की गई है।

यह सुस्पष्ट है कि इस क्षेत्र में शब्दों की परिभाषाओं पर कई वर्षों तक सहमति नहीं हो पायेगी। फिर भी, वर्ष 1980 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने प्रयोग के तौर पर, रोगों के परिणामों से संबंधित वर्गीकरण की नियम पुस्तिका—'इन्टरनेशनल क्लासिफिकेशन आफ इम्पेयरमेंट्स, डिसएबिलिटीज एण्ड हैंडीकैप्स'—प्रकाशित की है। इस नियम पुस्तिका में तीन सुस्पष्ट वर्गीकरण हैं जिनमें से प्रत्येक का संबंध रोग के परिणामस्वरूप होने वाले अनुभव के भिन्न पहलू से है।

असमर्थताएं :

ये किसी कारण से उत्पन्न होने वाली शरीर संरचना और बाह्याकृति की अपसामान्यताओं से और अंग या अंग तंत्र वाले कार्यों से संबंधित हैं। इस प्रकार सिद्धांत रूप में असमर्थता अंग स्तर वाली बाधाओं को दर्शाती है।

अपंगताएं :

ये व्यक्ति के क्रियाकलापों और क्रियाशीलता वाली असमर्थताओं के परिणामों का बोध कराती है; इस प्रकार ये अपंगताएं व्यक्ति स्तर वाली बाधाओं को दर्शाती हैं।

बाधाएं :

ये असमर्थताओं और अपंगताओं के परिणामस्वरूप व्यक्ति द्वारा अनुभव की जाने वाली असुविधाओं से संबंधित हैं; इस प्रकार ये बाधाएं व्यक्ति की परिवेश से अन्योन्यक्रिया और अनुकूलन को दर्शाती हैं।

उदाहरण 1

एक सोलह वर्षीय बालक यातायात दुर्घटना का शिकार हो गया है और उसका एक पैर घुटने के ऊपर से काटा जाना है।

असमर्थता : पैर की हानि

अपंगता : चलने-फिरने की क्षमता में कमी

बाधा : काम करने की क्षमता में सामान्य सामाजिक क्रियाकलापों (खेल-कूद, नृत्य) का आनंद लेने में और सामाजिक संबंध स्थापित करने में कमी।

उदाहरण 2

एक 50 वर्षीय पुरुष जो बहुत वर्षों से अति रक्तदाब से पीड़ित था, उसे दौरा पड़ा जिसके परिणामस्वरूप उसकी दायीं तरफ अर्धपक्षाघात और भाषा दोष हो गया।

असमर्थता : अति रक्तदाब
मस्तिष्क के कार्य में विघ्न

अपंगता : बात करने की क्षमता में कमी, चलने और दाहिने हाथ का उपयोग करने की क्षमता में कमी
शारीरिक सहनशक्ति कम होने के कारण थकावट

बाधा : काम करने में अक्षमता, स्वयं की देखभाल करने में आंशिक अक्षमता, और अपने परिवेश में अन्योन्यक्रिया करने की क्षमता में कमी।

उदाहरण 3

जल जाने पर एक तीन वर्षीय लड़की के चेहरे पर और पूरी बायीं भुजा पर गहरे दाग पड़ गए।

असमर्थता : जल जाने से पड़े दाग देखने में अपसामान्य

अपंगता : भुजा की गतिशीलता में कमी
परिवेश में रुचि लेने और उससे संपर्क बनाने में कमी

बाधा : घर के काम-काज करने की क्षमता में कमी
सामाजिक संबंधों में बाधा (परिवार और समुदाय के सदस्यों द्वारा निरापद) और शादी में अड़चनें।

उदाहरण 4

दो बच्चों वाली एक विवाहित प्रौढ़ महिला दो साल से "विखंडीमनस्कता" के रोग से पीड़ित है।

असमर्थता : श्रवण विभ्रांति
संकल्प शक्ति (यथा सामान्य अंतर्नोद और रुचि) का अभाव। विचार प्रक्रियाओं में गड़बड़ी

अपंगता : नित्य प्रति के कामों में अंतर्नोद और रुचि में कमी
ध्यान बनाए रखने और सूचना की समझ में कमजोरी
वास्तविकता को समझने का अभाव

बाधा : बच्चों की देखभाल करने, घर का काम-काज करने, व्यक्तिगत सफाई करने और रूप-रंग बनाए रखने, परिवार के सदस्यों और मित्रों से संबंध बनाने में असफलता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विकलांगता प्रक्रिया

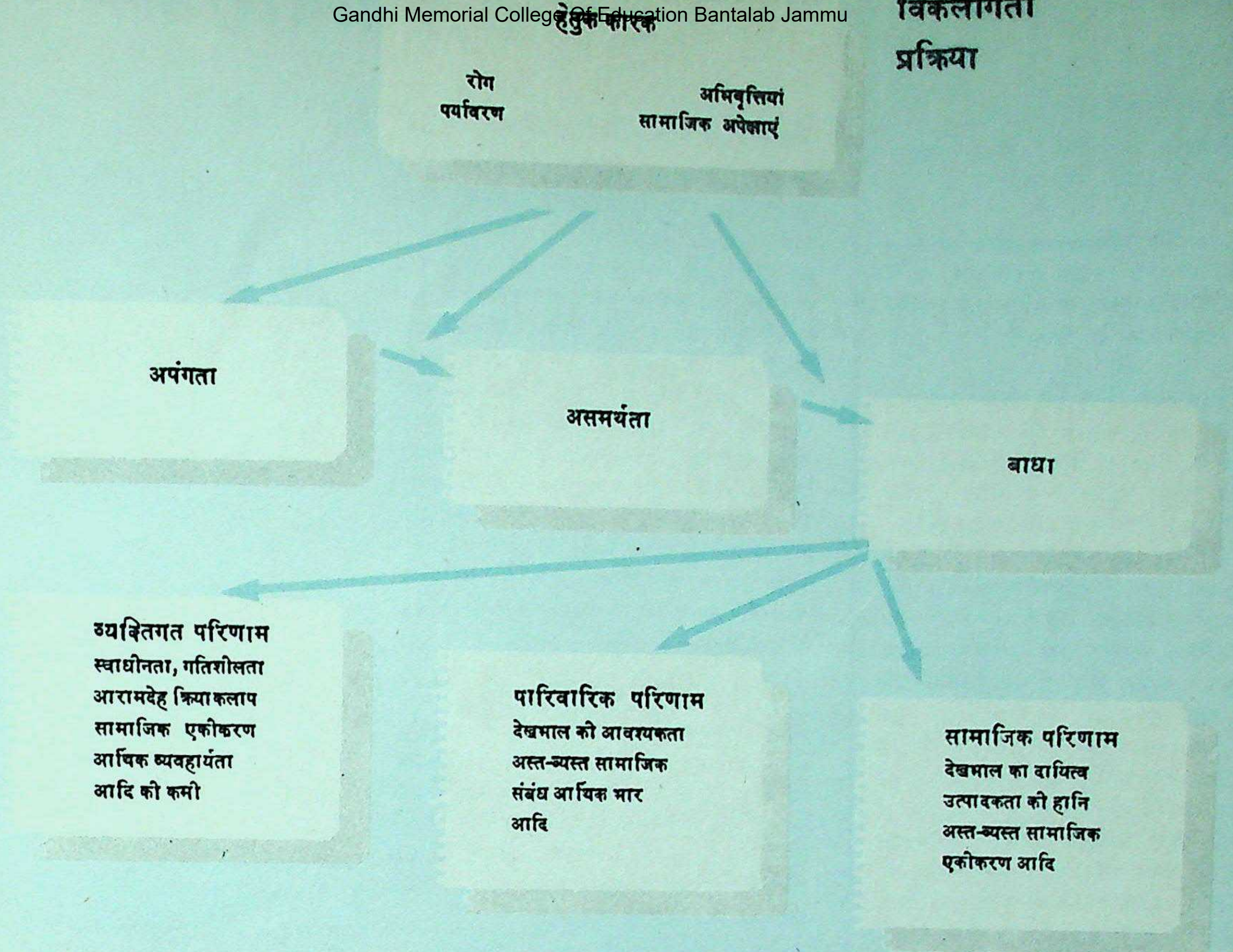

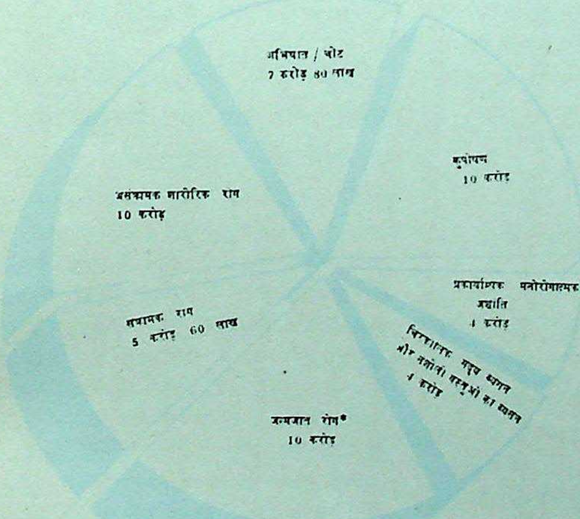

कुल = 51 करोड़ 40 लाख

विश्व में अपंग लोगों की संख्या

(करोड़ों में)

अपंगता की समस्या का निम्नतम आकलन यह दर्शाता है कि जन्म लेने वाले दस बच्चों में से कम-से-कम एक बच्चा या तो जन्मजात या बाद में शारीरिक, मानसिक या संवेदी असमर्थता का शिकार होता है। ये आंकड़े अपूर्ण हैं: अनुमान लगाया गया है कि यह संख्या पंद्रह या बीस प्रतिशत है, जोकि विभिन्न परिभाषाओं के प्रयोग और सम्मिलित की गई परिस्थितियों पर निर्भर है। अंतर्राष्ट्रीय पुनर्वास की संख्या 50 करोड़ है: इसमें से दो-तिहाई विकासशील देशों में है जिनमें से अधिकांश को पुनर्वास की सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं।

*[illegible]

स्रोत : विश्व स्वास्थ्य संघठन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यूनेस्को समाचार कक्ष

पुस्तक परिचय

विकलांगों पर यूनेस्को प्रकाशन

● **कांस्ट्रक्टिव एजुकेशन स्पेशल ग्रुप्स**—लेखक डब्ल्यू० डी० बाल पृष्ठ 144, (35 फ्रैंक)।

● **इकानामिक अस्पेक्ट्स आफ स्पेशल एजूकेशन।** भूमिका और सार प्रस्तुत करने वाले अध्याय सहित तीन अध्ययन (चेकोस्लोवाकिया, न्यूजीलैंड और संयुक्त राज्य अमरीका पर)। पृष्ठ 152, 1978 (6 फ्रैंक)।

● **टर्मिनोलाजी यूज्ड इन स्पेशल एजूकेशन।** अंग्रेजी, फ्रान्सीसी, रूसी और स्पेनी भाषाओं में, विशेष शिक्षा में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा सहित सूची। यूनेस्को : अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा ब्यूरो का प्रकाशन, 368 पृष्ठ, 1977।

● **इंटीग्रेशन आफ टेक्निकल एंड वोकेशनल एजूकेशन इन टु स्पेशल एजूकेशन।** चार अध्ययन (आस्ट्रिया, कोलंबिया, ईरान और ट्यूनिशिया) भूमिका और संक्षिप्त अध्याय सहित । 220 पृष्ठ, 1977 (36 फ्रैंक)।

● **केस स्टडीज इन स्पेशल एजूकेशन।** चार अध्ययन (क्यूबा, केन्या, जापान और स्वीडन) भूमिका और संक्षिप्त अध्याय सहित । 195 पृष्ठ, 1974 (24 फ्रैंक)।

● **द प्रेजेंट सिचुएशन एंड ट्रेंड्स आफ रिसर्च इन द फील्ड आफ स्पेशल एजूकेशन।** चार अध्ययन (स्वीडन और अन्य स्कैनडेवियाई देश, रूस, अमरीका और युरुग्वे) भूमिका और संक्षिप्त अध्याय सहित । 306 पृष्ठ, 1973 (28 फ्रैंक)।

● **रेड ग्रेड रिडिल्स**—बर्जीनिया एलेन जेंसन और पॉली एडमन। शब्द पहेलियों की एक मेधावी पुस्तिका जो विशेष रूप से छह वर्ष से दस वर्ष आयु के नेत्रहीन और नेत्रवान बच्चों के मनोरंजन के लिए तैयार की गई है। इनका पाठ ब्रेल तथा स्याही-मुद्रण, दोनों में है और चित्र उभरे हुए तथा रंगीन हैं। पृष्ठ 24, 1980 (इस पुस्तिका की प्रतियों के लिए अनुरोध भी एफ०एच० पॉटर, यूनेस्को कूरियर डिवीजन, यूनेस्को 7, प्लेस द फांतेनाय 75700, पेरिस को करें)।

यूनेस्को की नवीनतम पुस्तकें

● **कंसेंसस एंड पीस।** अमादू-मेहतार एम' बो, मारिया अमादियो, जेराल्ड एंटोने, रिचड डाकेर, एसबार्न एडे, मेजालो जावोरस्की, जाक्युन रूएज-गिमेनेज, अब्दुल्ले वादे। संपादन विसीत किफ्ले सिलासी । 231 पृष्ठ, 1980 (55 फ्रैंक)

● **ड्रग्स डीमिस्टीफाइड।** 1975 में प्रकाशित पुस्तक का तीसरा संस्करण । 92 पृष्ठ (10 फ्रैंक)।

● **द प्लेस आफ इंफार्मेशन इन एजूकेशनल डेवेलपमेंट**—लेखक लिओ आर० फनिग, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा प्रयोग के लिए तैयार किया गया अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन, 1977 जिसका विषय शैक्षिक सूचना था, उसकी परिचर्चा और प्रलेखन के संक्षिप्त अंश। 135 पृष्ठ, 1980 (24 फ्रैंक)।

● **इन्फर्मेशन : एन इसेंसियल फैक्टर इन एजूकेशनल प्लानिंग एंड पालिसी,** संपादन—जार्ज साचारोपौलस, 303 पृष्ठ, 1980 (50 फ्रैंक)।

पिकासो शताब्दी के लिए यूनेस्को मेडल

महान् स्पेनी कलाकार पब्लो पिकासो (देखें यूनेस्को दूत, फरवरी 1981) की जन्म शताब्दी के अवसर पर यूनेस्को चांदी, तांबा और सुनहरी चांदी के स्मारक मेडल जारी कर रहा है। मेडल (दाएं) पिकासो के देश भाई और मित्र जान मीरो द्वारा डिजाइन किया गया है और यह मीरो के सहयोगी जॉन गार्डी आर्तीगॉस के लघु प्रतिरूप से ढाला गया है। मेडल के अग्रभाग में 'पब्लो पिकासो—मालागा—25-10-1881' अंकित है और मीरो द्वारा इस प्रकार वर्णित किया गया है। 'बीच में पिकासो को आंख जैसी एक आंख है जो कि स्पष्ट और सजग और जादुई तथा संगीतात्मक चिह्नों से घिरी है।' मेडल के पश्च भाग में 'मीरो—यूनेस्को 1981' अंकित है जिसमें 'एक सपाट मैदान है उसमें बढ़ता हुआ एक पेड़ और क्षितिज में एक तारा दर्शाया गया है।' कृपया, अन्य जानकारी के लिए—डाक-टिकट और सिक्का साक्ष्य कार्यक्रम, यूनेस्को, 7, प्लेस द फातेनाय, 75700 पेरिस को लिखें।

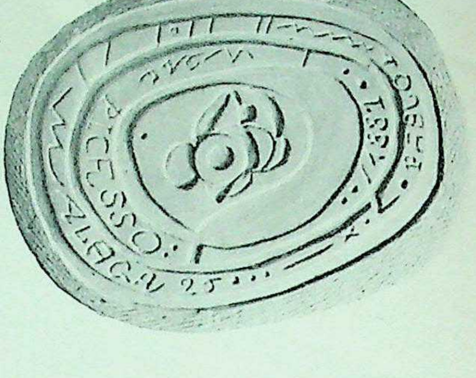

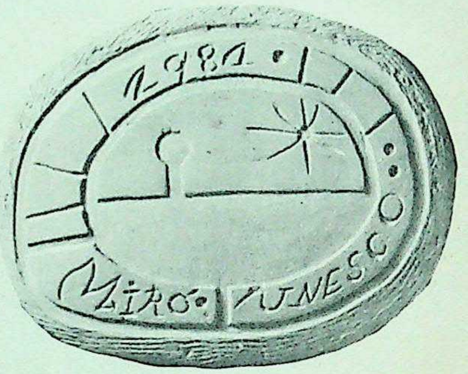

फोटो यूनेस्को

स्लाइडों पर विश्व विरासत

यूनेस्को के सांस्कृतिक विरासत प्रभाग ने विश्व विरासत समागम पर एक स्लाइड माला तैयार की है। (देखें यूनेस्को दूत, अक्तूबर 1980) 44 स्लाइडों की इस माला में विश्व विरासत सूची के स्थलों को दर्शाया गया है जिनमें साथ में विवरण भी दिए गए हैं। कृपया जानकारी के लिए जियने ब्राडी, सांस्कृतिक विरासत प्रभाग, यूनेस्को, 7, प्लेस द फांतेनाय, 75700 पेरिस को लिखें।

पुरस्कृत गीत विकलांगों के लिए यूनेस्को के कार्य में सहायता करेगा

फिलीपीनो की तेरह वर्षीय लड़की ओडीना ई बटनाग द्वारा लिखित गीत के तैयार किए गए रिकार्ड की समस्त बिक्री की राशि यूनेस्को के 'विकलांग बच्चों के कार्यक्रम के लिए शिक्षा' को दान में दे दी जाएगी। यह गीत, जिसका शीर्षक 'मैं एक छोटी-सी आवाज हूं' था, उसे 'बच्चों की बच्चों द्वारा सहायता' विषय पर यूनेस्को और रेडियो कार्पोरेशन आफ अमरीका (आर०सी०ए०) द्वारा प्रयोजित विश्वव्यापी बच्चों की गीत-लेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला था। ओडीना के गीत को विश्वविख्यात गायक रोजन व्हिटेकर ने संगीत देकर रिकार्ड किया। वे भी अपनी समस्त रायल्टी की राशि यूनेस्को कार्यक्रम को दान में दे रहे हैं। आर०सी०ए० द्वारा एकल रूप में जारी किया गया यह रिकार्ड व्यापारिक रिकार्ड विक्रेताओं से या सीधे ही यूनेस्को को-एक्शन कार्यक्रम, 7, प्लेस द फांतेनाय 75700 पेरिस से खरीदा जा सकता है। (मूल्य 15 फ्रेंच फ्रैंक जिसमें डाक व्यय शामिल है)।

अपंग लोगों के वर्ष के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी टिकट

6 मार्च, 1981 को संयुक्त राष्ट्र डाक-तार प्रशासन द्वारा छह टिकटों का एक सेट और एक स्मारिका कार्ड जारी किया जाएगा जो अपंग लोगों के लिए अंतर्राष्ट्रीय वर्ष से संबंधित होंगे। इस डाक टिकट के जारी किए जाने के संबंध में अन्य जानकारी के लिए संयुक्त राष्ट्र डाक-तार प्रशासन, पैलेस डेस नेशन्स, सी०एच०-1211 जिनेवा 10, स्विट्जरलैंड को लिखें।

यूनेस्को द्वारा शांति शिक्षा के लिए पुरस्कार की शुरूआत

"मनुष्यों के मस्तिष्क में शांति को सुदृढ़ करने" के उद्देश्य से की गई सभी प्रकार की कार्यवाहियों को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को ने शांति-शिक्षा के लिए पुरस्कार वार्षिक रूप में देना शुरू किया है। पुरस्कार जो लगभग 60 हजार डालर का होगा उसका वित्तीयन जापान शिपबिल्डिंग इण्डस्ट्री फाउण्डेशन द्वारा दान में दी गई 10 लाख डालर की राशि के ब्याज से किया जाएगा। पुरस्कार विजेता "व्यक्ति, व्यक्तियों का समूह या संगठन" कोई भी हो सकता है जिसे विश्व के विभिन्न क्षेत्रों से लिए गए नौ सदस्यों की निर्णायक समिति के प्रस्ताव के आधार पर, यूनेस्को के महानिदेशक द्वारा नामित किया जाएगा।

'अस्पतालों में पलंगों को बढ़ाने की अपेक्षा पेय जल की विश्वव्यापी व्यवस्था की आवश्यकता'

बीसवीं शताब्दी के नवें दशक को संयुक्त राष्ट्र ने अंतर्राष्ट्रीय पेय जल आपूर्ति और सफाई दशक घोषित किया है। विधिवत् रूप से दशक की घोषणा विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डा० हफदान मेहलर ने न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के विशेष अधिवेशन को संबोधित करते हुए की और दृढ़ता से कहा कि विकासशील देशों में दो सौ करोड़ लोगों के लिए वर्ष 1990 तक स्वास्थ्यकर पेय जल और समुचित सफाई का निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करना है। डा० मेहलर ने बताया कि पूरे दशक के लिए औसतन आकलित वार्षिक निवेश की राशि तीन हजार करोड़ डालर की होगी और टिप्पणी की कि "योजना और उसके परिणामों से अगर यह पता चलता है कि प्रति एक हजार लोगों के पीछे नलकों की संख्या क्या है तो यह अस्पताल में बढ़े हुए पलंगों की तुलना में एक अच्छा स्वास्थ्य सूचकांक होगा।" आज यह अनुमान लगाया जाता है कि लगभग 1000 से 2500 तक की संख्या में पांच वर्ष से कम आयु के बच्चे प्रति घंटे के हिसाब से साफ पेय जल के अभाव में या पर्याप्त मात्रा में पानी न मिलने के कारण, भली प्रकार से सफाई न होने के कारण मर जाते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या मोमबत्ती दोनों सिरों से जल सकती है ?

नहीं, लेकिन जिस पत्रिका में ज्ञान और मनोरंजन एक साथ उपलब्ध है उसका नाम है—

विश्वदर्शन की पत्रिका यूनेस्को **दूत**

आप चाहें तो अगले महीने से इस पत्रिका के पाठक बन सकते हैं ।

एक निवेदन

यदि आप हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाएं पढ़ते हैं और ज्ञान तथा मनोरंजन के अलावा आप चाहते हैं कि पत्रिका में —

- संगीत, साहित्य, कला, शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति से संबंधित सामग्री हो;
- सामान्य जनरुचि के विषयों पर विस्तृत लेख पढ़ने को कम कीमत में ही मिल सकें;
- सभी सामग्री मनभावन सज्जा तथा रंगीन चित्रों सहित प्रस्तुत की गयी हो;
- ऐसी सामग्री दी गई हो जिसे वर्ष भर अपने पास संदर्भ-ग्रंथ की तरह घरेलू लाइब्रेरी में रख सकें;
- दी हुई सामग्री से विद्यार्थी, अध्यापक तथा परिवार के सभी सदस्य लाभान्वित हो सकें—

तो उस पत्रिका का नाम है—"यूनेस्को दूत" जो विश्व की **पच्चीस प्रमुख** भाषाओं में प्रकाशित हो रही है ।

एक प्रति : दो रुपये । वार्षिक चन्दा : बीस रुपये ।

एक सूचना :

- यूनेस्को दूत अपनी भव्यता के कारण लोकप्रिय ;
- भारत सरकार द्वारा पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों की छपाई और डिजायन को उत्तमता पर 16 नवम्बर, 1979 को बीसवें राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह में यूनेस्को दूत, जुलाई, 1977 अंक राज पुरस्कार द्वारा अलंकृत ।

यदि आप नमूने की प्रति लेना चाहते हैं तो इस पते पर लिखे—

संपादक, यूनेस्को दूत,
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय
पश्चिमी खंड 7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110 022.

चन्दे की राशि भिजवाने का पता :

सहायक शिक्षा अधिकारी (बिक्री),
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,
पश्चिमी खंड 7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110 022.

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय,

शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित एवं प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, नासिक द्वारा मुद्रित ।

इस अंक के अनुवादक :

डॉ० नरेंद्र मोहन
श्री रणजीत कुमार सेन
श्री कृपा शंकर सक्सेना
श्री प्रेम नारायण शर्मा
डॉ० बी० एल० श्रीवास्तव
श्री श्रीप्रकाश मिश्र
श्री अरविंद आशधीर
श्री हरिश्वर प्रसाद सिंहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ध्वनि प्राचीर का अतिक्रमण

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14443/67

ट्रिनिडाई और टोबेगो के बधिर-विद्यालय के इस बच्चे को देखिए। सामाजिक जीवन में सहभागिता के हर्ष और आत्म-परितोष की प्रभा से उसका मुखमण्डल उद्भासित हो रहा है। आज इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में हुई प्रगति से अनेक आश्चर्यजनक उपकरणों का विकास संभव हो गया है। इन उपकरणों की सहायता से बधिर ध्वनि प्राचीर का अतिक्रमण कर सकता है, जो उन्हें दैनिक जीवन के इतने क्षेत्रों से काट कर अलग-थलग कर देता है। परन्तु प्रत्येक उस बहरे बच्चे के पीछे, जिसके लिए ये आधुनिक तकनीकें उपलब्ध हैं, विश्व में हजारों और ऐसे बहरे बच्चे हैं जो खामोशी की दुनिया में कैद होकर समाज की मुख्यधारा के बाहर पड़े हुए हैं।

फोटो एल० सोलमसेन, संयुक्त राष्ट्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by